मनोज कुमार
सम्पादक

डॉ. विशाला शर्मा
सहयोगी सम्पादक

विषय-विशेषज्ञ

जगदीश उपासने
कुलपति
माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल

प्रो. मानसिंह परमार
कुलपति
कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर, छग

गिरिजाशंकर
वरिष्ठ राजनीतिक विश्लेषक, भोपाल

डॉ. सुधीर गव्हाणे
निदेशक, शोध अध्ययन,
एमआयटी वर्ल्ड पीस यूनिवर्सिटी, कोथरूड, पुणे (महाराष्ट्र)

प्रोफेसर (डॉ.) श्रीकांत सिंह
विभागाध्यक्ष, दृश्य एवं श्रव्य पत्रकारिता, माखनलाल चतुर्वेदी
राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल

प्रोफेसर (डॉ.) मनोज दयाल
प्रोफेसर एवं डीन, फैकल्टी, मीडिया स्टडीज, गुरु जम्भेश्वर विज्ञान
और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार, हरियाणा

डॉ. सोनाली नरगुंदे
असिसटेंट प्रोफेसर, पत्रकारिता एवं जनसंचार अध्ययनशाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर

पुष्पेन्द्रपाल सिंह
विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी एवं सम्पादक रोजगार
निर्माण, मध्यप्रदेश माध्यम, भोपाल

डॉ. आरफा राजपूत
एसोसिएट प्रोफेसर, सिनेमा संकाय
एशियन स्कूल ऑफ मीडिया स्टडीज, नोएडा, यूपी

आकल्पन : अपूर्वा
आवरण तस्वीरें बरस्ते गूगल

वर्ष-18 अंक-08 सितम्बर-2018

ISSN 2231-0479

सभागम

शोध एवं संदर्भ की मासिक पत्रिका

www.sabrangweb.com

भीतर के पन्नों पर

हस्तक्षेप 5-7

दुनिया बोल रही है हिन्दी...

विमर्श 8-13

- राष्ट्रीय एकता, हिन्दी और नागरी लिपि
- डिजिटल मीडिया के दौर में भाषा के जरूरी सवाल
- भाषा के नष्ट होने का अर्थ संस्कृति का नष्ट होना है

सुमिरन :अटल बिहारी वाजपेयी 14-15

- हिंदुस्तानी सियासत का एक अजातशत्रु

दस्तावेज 16-17

- आरके स्टूडियो : एक दिन बिक जाएगा माटी के मोल...

सिने विमर्श 18-19

- 'आयेगा आने वाला...' गीत से मशहूर हुईं लताजी

शोध विमर्श 20-41

- हिन्दी पत्रकारिता की संभावना और चुनौतियां
- टेलीविजन ब्रॉडकास्टर्स द्वारा न्यू मीडिया का उपयोग
- दूरस्थ शिक्षा में नवीन शिक्षण तकनीक
- हिन्दी दैनिकों में दक्षेस से संबंधित संदर्भ का विश्लेषण
- **Succession of Political News and Tweets**

पुस्तकालय 42

- बोलते चित्रों सी हैं सुदर्शन की कविताएं

सम्पर्क :
3, जूनियर एमआयजी, द्वितीय तल, अंकुर कॉलोनी, शिवाजीनगर, भोपाल-16
मोबाइल : 09300469918 E-mail : samagam2016@gmail.com

सदस्यता :
वार्षिक सदस्यता (व्यक्तिगत) : 6 सौ रुपये मात्र
वार्षिक सदस्यता (संस्थागत) : 1 हजार रुपये मात्र

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक कृति अग्रवाल द्वारा 3, जू. एमआईजी, द्वितीयतल, अंकुर कॉलोनी, शिवाजीनगर, भोपाल से प्रकाशित एवं तारा ऑफसेट प्रिंटर्स, शॉप नं.-4, जोन वन एमपीनगर भोपाल से मुद्रित. *सम्पादक- मनोज कुमार. प्रकाशित सामग्री के लिए सहमति अनिवार्य नहीं. विषय विशेषज्ञ अवैतनिक एवं प्रकाशित सामग्री की जवाबदेही से मुक्त

अपनी बात

इस कठिन समय में...

भारतीय राजनीति का यह सबसे कठिन समय है. एक-एक कर भारतीय राजनीति के मनीषी और महामना हमसे विदा ले रहे हैं. बीते माह सोमनाथ चटर्जी और इनके बाद अटल विहारी वाजपेयी के देवलोकगमन से सन्नाटा खिंच गया है. ये वो लोग हैं जिनके होने का अर्थ था लोकतंत्र की विश्वसनीयता एवं श्रेष्ठता का होना है. एक समय आया जब लोकसभा अध्यक्ष के रूप में सोमनाथ चटर्जी को पार्टी ने बाहर निकाल दिया किन्तु उसूलों के पक्के सोम दादा ने पार्टी छोड़ दी, जवाबदारी नहीं। ऐसे ही थे सबके अपने अटलजी. महज एक वोट के लिए समझौता करने के स्थान पर अटलजी ने इस्तीफा देना मंजूर किया। ये दो ऐसी मिसाल हैं जो भारतीय राजनीति और भारत में लोकतांत्रिक परम्परा को और भी खूबसूरत बनाती है. हम यूं ही नहीं कहते कि भारत दुनिया का सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण लोकतांत्रिक देश है बल्कि इसमें निहित जिम्मेदारियों को हमने समझा और दुनिया के समक्ष नजीर पेश की है. नियति से भला कौन जूझ सका है? सोम दादा के बाद अटलजी ने भारत भूमि को अलविदा कह दिया है. सोम दा हों या अटलजी, भारतीय राजनीति के अजातशत्रु कहे जाने वाले मनीषियों ने अपने पीछे स्वस्थ्य लोकतांत्रिक परम्परा का जो सबक लिख गए हैं, उसे आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी अब हमारी है. निश्चित रूप से देश की राजनीति में चौतरफा नैतिक गिरावट हम महसूस कर रहे हैं. यह किसी एक दल या व्यक्ति की बात नहीं है बल्कि समूची राजनीति में एक कसैलापन महसूस किया जा रहा है. व्यवहार के साथ बोलने पर भी नियंत्रण नहीं रह गया है जो बेहद दुखदायी है. सत्ता तो आती-जाती रहती है लेकिन आपके कर्म आपके साथ चलते हैं, यह बात अटलजी के जाने के बाद देश के हर आयु वर्ग के लोगों ने महसूस किया. इस कठिन समय में पत्रकारिता के पुरोधा कुलदीप नैयर के अवसान का अर्थ पत्रकारिता की एक बड़ी और अपूरणीय क्षति है.

समाज में जो एकाकीपन आया है, जो भाव खत्म हो रहा है, वह सिर्फ किताबों से दूरी बना लेने के कारण हुआ है. किताबें दिमाग की बंद खिड़की खोलती हैं. दुर्भाग्य से समाज के दिमाग की खिड़की लगातार बंद होती जा रही है क्योंकि हमने किताबों से दूरी बना ली है. यह और बात है कि हर साल हम हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने के लिए विलाप करते रहें लेकिन स्वयं राजभाषा और राष्ट्रभाषा में अंतर ना समझ पाएं. दुनिया में अपनी हीभाषा हिन्दी को सर्वमान्य बनाने के लिए एड़ीचोटी का जोर लगा दे रहे हैं लेकिन कामयाब नहीं हो पाए. इस पर चिंतन करने की जरूरत है. संयुक्त राष्ट्र संघ की एक छोटी पहल हमें संतोष दे सकती है लेकिन बात इससे बनने वाली नहीं है. अटलजी राजनीति ही नहीं, हिन्दी समाज के सबसे बड़े स्वर थे और आज जब हम हिन्दी दिवस मनाने जा रहे हैं तब उनकी कमी हमें खलेगी. रिसर्च जर्नल 'समागम' का यह अंक हिन्दी को समर्पित भी है. चार वर्ष पहले मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन किया गया था. यह एक अनूठा अनुभव था लेकिन वास्तविकता यह है कि यह आयोजन, महज आयोजन बनकर रह गया. हिन्दी के विकास के लिए कोई ठोस परिणाम आज तक नहीं आया और एक बार हम मॉरीशस में विश्व हिन्दी सम्मेलन मना रहे हैं. मॉरीशस से हिन्दी के विकास के लिए क्या बेहतर होगा, अभी कहना मुश्किल सा है लेकिन नाउम्मीद भी नहीं हुआ जा सकता है. अंग्रेजी से बैर नहीं और हिन्दी से मोह कम नहीं, की धारणा आमजन में बनाये रखना होगा क्योंकि हिन्दी बोलने और व्यवहार में लाने में हम हिचकते हैं. हिन्दी को लेकर इस हिच को दूर करने की आवश्यकता है. हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाए जाने की प्रक्रिया के साथ ही संयुक्त राष्ट्रसंघ में हिन्दी को विश्व भाषा का दर्जा दिलाने के लिए नागपुर में हुए साल 1975 के सम्मेलन से प्रयासरत हैं लेकिन दिल्ली अभी दूर है. हिन्दी को विश्वमंच पर प्रतिष्ठित करने के लिए संकल्प करने की आवश्यकता है ताकि एक निश्चित साल और तारीख पर हिन्दी को विश्व भाषा का दर्जा दिलाकर हम गर्व से उठ खड़े हों. इस अवसर पर हिन्दी की आवाज लता मंगेशकर को याद करते हुए पुलकित हो उठते हैं कि हम कितने भाग्यशाली हैं कि लता के रूप में आवाज का जादू हमें मिला. लताजी को जन्मदिन की बधाई देते हुए टीम 'समागम' उनके शतायु होने की कामना करता है.

-सम्पादक

हस्तक्षेप

दुनिया बोल रही है हिन्दी...

हिमकर श्याम
ब्लॉगर, दूसरी आवाज

भारत में अनेक समृद्ध भाषाएं हैं। इन भाषाओं में हिन्दी एकता की कड़ी है। भाषाओं के लम्बे इतिहास में ऐसी बहुरूपी भाषा का अस्तित्व और कहीं नहीं मिलता। जनसंख्या की दृष्टि से हिन्दी विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली तीसरी सबसे बड़ी भाषा है। हिन्दी बोलने वाले लोगों की संख्या 50 करोड़ है। यदि हिन्दी समझने वालों की संख्या भी इसमें जोड़ दी जाये तो यह दूसरे नम्बर पर आ जाएगी। दुनिया में शायद ही किसी भाषा का इतना तीव्र विकास और व्यापक फैलाव हुआ होगा। हिन्दी को पल्लवित-पुष्पित करने में मीडिया की महती भूमिका रही है। हमारे संतों, समाज सुधारकों और राष्ट्रनायकों ने अपने विचारों के प्रचार के लिए हिन्दी को अपनाया क्योंकि यही एक भाषा है जो कश्मीर से कन्याकुमारी तक और राजस्थान से असम तक समान रूप से समझी जाती है। हिन्दी ही एकमात्र भाषा है जो समस्त भारतीय को एकता के सूत्र में जोड़ने का कार्य सम्पन्न करती है। देश में प्राय: सभी जगह हिन्दी व्यापक स्तर पर बोली और समझी जा रही है। दक्षिण भारत हो या पूर्वोत्तर भारत हर जगह हिन्दी का सहज व्यवहार हो रहा है।

हिन्दी जैसी सरल और उदार भाषा शायद ही कोई हो। हिन्दी सबको अपनाती रही है, सबका यथोचित स्वागत करती रही है। किसी भी भाषा के शब्द को अपने अंदर समाहित करने में गुरेज नहीं किया। अंग्रेजी, अरबी, फारसी, तुर्की, फ्रांसीसी, पोर्चुगीज आदि विदेशी शब्द हिन्दी की शब्दकोश में मिल जाएंगे। जो भी इसके समीप आया सबको गले से लगाया। भौगोलिक विस्तार के अनेक जनपदों और उनके व्यवहृत अठारह बोलियों (पश्चिमी हिन्दी के अंतर्गत खड़ी बोली, बाँगरू, ब्रजभाषा, कन्नौजी, पूर्वी हिन्दी में अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी, बिहारी में मैथिली, मगही, भोजपुरी, राजस्थानी में मेवाती-अहीरवादी, मालवी, जयपुरी-हाड़ौती, मारवाड़ी-मेवाड़ी तथा पहाड़ी में पश्चिमी पहाड़ी, मध्य पहाड़ी, पूर्वी पहाड़ी) के वैविध्य को, जिनमें से कई व्याकरणिक दृष्टि से एक-दूसरे की विरोधी विशेषताओं से युक्त कही जा सकती है, हिन्दी भाषा बड़े सहज भाव से धारण करती है।

हिन्दी मातृभाषा और राजभाषा से एक नई वैश्विक भाषा के रूप में हिन्दी बदल रही है। वह नई प्रौद्योगिकी, वैश्विक विपणन तंत्र और अंतरराष्ट्रीय संबंधों की भाषा बन रही है। आज मोबाइल की पहुंच ने गांव-गांव के कोने-कोने में संवाद और सम्पर्क को आसान बना दिया है।

हिन्दी के स्वरूप के संबंध में इसलिए वैचारिक द्वैत की भावना ग्रियर्सन में जगह-जगह दिखती है। 'भाषा सर्वेक्षण' के भूमिका में वे लिखते हैं- 'इस प्रकार कहा जा सकता है और सामान्य रूप से लोगों का विश्वास भी यही है कि गंगा के समस्त कांठे में, बंगाल और पंजाब के बीच। उपजी अनेक स्थानीय बोलियों सहित, केवल एकमात्र प्रचलित भाषा हिन्दी ही है।' इन सारी बोलियों के समूह और संश्लेष को पहले भी हिन्दी, हिंदवी, हिंदई कहा जाता था, और आज भी हिन्दी कहा जाता है। बंटवारे से पहले समूचे पाकिस्तान में पंजाब से लेकर सिंध तक हिन्दी की बोली समझी जाती थी। लाहौर हिन्दी का गढ़ था। वहां हिन्दी के कई बड़े प्रकाशन भी थे। बंटवारे के बाद हिन्दी की अनदेखी की गई, लेकिन हिन्दी फिल्मों और भारतीय टीवी चैनलों के मनोरंजक कार्यक्रमों, धारावाहिकों के कारण वहां हिन्दी का प्रभाव फिर बढ़ रहा है। नेपाल और बंगलादेश

ISSN 2231-0479

में भी हिन्दी का प्रभाव है। 50 देशों में हिन्दी पढ़ाई जा रही है। 500 से ज्यादा संस्थानों में हिन्दी की पढ़ाई होती है। अमेरिका से लेकर चीन तक कई विश्व-विद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जा रही है। ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा, दक्षिण अफ्रीका, मॉरीशस, युगांडा, गुयाना, फिजी, नीदरलैंड, सिंगापुर, त्रिनिदाद, टोबैगो और खाड़ी देशों में बड़ी संख्या में हिन्दी भाषी हैं। दुबई जैसे शहरों में हिन्दी बोलचाल की भाषा बन गयी है।

निर्विवाद तथ्य है कि खड़ी बोली ही आज की हिन्दी है। भारत के हिन्दी मीडिया की भाषा भी यही है, पत्र-पत्रिकाओं की भी और टेलीविजन और फिल्मों की भी। हिन्दी भाषा का निर्माण और आगे बढ़ाने का कार्य मीडिया ने किया है। साहित्य बहुजन हिताय बहुजन सुखाय की उदात्त भावना लेकर चला है तो पत्रकारिता भी इसी प्रकार के मानव कल्याण के उद्देश्य को लेकर अवतरित हुई है। वस्तुत: साहित्य जीवन की कलात्मक अभिव्यक्ति है। पत्रकारिता भी सत्यम, शिवम सुंदरम की ओर जनमानस को उन्मुख करती है। यदि साहित्य समाज का दर्पण है तो पत्रकारिता उस समाज की प्रतिकृति है। हिन्दी साहित्य के क्रमिक विकास पर दृष्टि डालें तो हम पाएंगे कि पत्र पत्रिकाओं की साहित्य के विकास में अहम भूमिका रही है। वास्तव में भाषा के प्रचार-प्रसार में इनका उल्लेखनीय योगदान रहा है।

हिन्दी पत्रकारिता की शुरुआत बंगाल से हुई और इसका श्रेय राजा राममोहन राय को दिया जाता है। राजा राममोहन राय ने ही सबसे पहले प्रेस को सामाजिक उद्देश्य से जोड़ा। भारतीयों के सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक हितों का समर्थन किया। समाज में व्याप्त अंधविश्वास और कुरीतियों पर प्रहार किए और अपने पत्रों के जरिए जनता में जागरूकता पैदा की। राममोहन राय ने कई पत्र शुरू किए जिसमें महत्वपूर्ण हैं- साल 1816 में प्रकाशित 'बंगाल गजट'। बंगाल गजट भारतीय भाषा का पहला समाचार पत्र है। इस समाचार पत्र के सम्पादक गंगाधर भट्टाचार्य थे। इसके अलावा राजा राममोहन राय ने मिरातुल, संवाद कौमुदी, बंगाल हैराल्ड पत्र भी निकाले और जनचेतना जागृत की। 30 मई 1826 को कलकत्ता से पंडित युगल किशोर शुक्ल के सम्पादन में छपने वाले 'उदंत मार्तण्ड' को हिन्दी का पहला समाचार पत्र माना जाता है। 1873 ई. में भारतेन्दु ने 'हरिश्चंद्र मैगजीन' की स्थापना की। एक वर्ष बाद यह पत्र 'हरिश्चंद्र चंद्रिका' नाम से प्रसिद्ध हुआ। वैसे भारतेन्दु का 'कविवचन सुधा' पत्र 1867 में ही सामने आ गया था और उसने पत्रकारिता के विकास में महत्वपूर्ण भाग लिया था। परंतु नई भाषा-शैली का प्रवर्तन 1873 में 'हरिश्चंद्र मैगजीन' से ही हुआ। भारतेन्दु के बाद इस क्षेत्र में जो पत्रकार आए उनमें प्रमुख थे पंडित रुद्रदत्त शर्मा, बालकृष्ण भट्ट, दुर्गाप्रसाद मिश्र, पंडित सदानंद मिश्र, पंडित वंशीधर, बदरीनारायण, देवकीनंदन त्रिपाठी, राधाचरण गोस्वामी, पंडित गौरीदत्त, राज रामपाल सिंह, प्रतापनारायण मिश्र, अंबिकादत्त व्यास, बाबू रामकृष्ण वर्मा, पं. रामगुलाम अवस्थी, योगेशचंद्र वसु, पं. कुंदनलाल और बाबू देवकीनंदन खत्री एवं बाबू जगन्नाथदास। 1895 ई। में 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' का प्रकाशन आरंभ हुआ। इस पत्रिका से गंभीर साहित्य समीक्षा का आरंभ हुआ और इसलिए हम इसे एक निश्चित प्रकाश स्तंभ मान सकते हैं। 1900 ई. में 'सरस्वती' और 'सुदर्शन' के अवतरण के साथ हिन्दी पत्रकारिता के इस दूसरे युग पर पटाक्षेप हो जाता है। इन वर्षों में हिन्दी पत्रकारिता अनेक दिशाओं में विकसित हुई। प्रारंभिक पत्र शिक्षा-प्रसार और धर्म प्रचार तक सीमित थे। भारतेन्दु ने सामाजिक, राजनीतिक और साहित्यिक दिशाएं भी विकसित कीं।

सन् 1880 से लेकर, सदी के अंत तक लखनऊ, प्रयाग, मिर्जापुर, वृंदावन, मुंबई, कोलकाता जैसे दूरदराज क्षेत्रों से पत्रों का प्रकाशन होता रहा। सन् 1900 का वर्ष हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास में महत्वपूर्ण है। 1900 में प्रकाशित 'सरस्वती' अपने समय की युगान्तरकारी पत्रिका रही है। वह अपनी छपाई, सफाई, कागज और चित्रों के कारण शीघ्र ही लोकप्रिय हो गई। उसी वर्ष छत्तीसगढ़ प्रदेश के बिलासपुर-रायपुर से 'छत्तीसगढ़ मित्र' का प्रकाशन शुरू होता है। 'सरस्वती' के ख्यात सम्पादक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी और 'छत्तीसगढ़ मित्र' के सम्पादक पंडित माधवराव सप्रे थे।

पत्रकारिता का यह काल बहुमुखी सांस्कृतिक नवजागरण का यह समुन्नत काल है। इसमें सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, वैज्ञानिक और राजनीतिक लेखन की परम्परा का श्रीगणेश होता है। इस दौर में साहित्यिक लेखन और पत्रकारिता के सरोकारों को अलग नहीं किया जा सकता। सांस्कृतिक जागरण, राजनीतिक चेतना, साहित्यिक सरोकार और दमन का प्रतिकार इन चार पहियों के रथ पर हिन्दी पत्रकारिता अग्रसर हुई। माधवराव सप्रे ने लोकमान्य तिलक के मराठी केसरी को 'हिन्द केसरी' के रूप में छापना शुरू किया। समाचार सुधावर्षण, अभ्युदय, शंखनाद, हलधर, सत्याग्रह समाचार, युद्धवीर, क्रांतिवीर, स्वदेश, नया हिन्दुस्तान, कल्याण, हिन्दी प्रदीप, ब्राह्मण,बुन्देलखण्ड केसरी, मतवाला सरस्वती, विप्लव, अलंकार, चाँद, हंस, प्रताप, सैनिक, क्रांति, बलिदान, वालिंट्यर आदि जनवादी पत्रिकाओं ने आहिस्ता-आहिस्ता लोगों में सोए हुए देशभक्ति के जज्बे को जगाया और क्रांति का आह्वान किया।

भारत के स्वाधीनता संघर्ष में पत्र-पत्रिकाओं की अहम भूमिका रही है। राजा राममोहन राय, महात्मा गांधी, मौलाना अबुल कलाम आजाद, बाल गंगाधर तिलक, पंडित मदनमोहन मालवीय, बाबा साहब अम्बेडकर, यशपाल जैसे आला दर्जे के नेता सीधे-सीधे तौर पर पत्र-पत्रिकाओं से जुड़े हुए थे और नियमित लिख रहे थे। जिसका असर देश के दूर-सुदूर गांवों में रहने वाले देशवासियों पर पड़ रहा था। सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा

आंदोलन के प्रचार प्रसार और उन आंदोलनों की कामयाबी में समाचार पत्रों की अहम भूमिका रही। कई पत्रों ने स्वाधीनता आंदोलन में प्रवक्ता की भूमिका निभायी। हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रेमचंद, निराला, बनारसीदास चतुर्वेदी, पांडेय बेचन शर्मा उग्र, शिवपूजन सहाय आदि की उपस्थिति 'जागरण', 'हंस', 'माधुरी', 'अभ्युदय', 'मतवाला', 'विशाल भारत' आदि के रूप में दर्ज हैं।

'उदन्त मार्तण्ड' के सम्पादन से प्रारंभ हिन्दी पत्रकारिता की विकास यात्रा कहीं थमी और कहीं ठहरी नहीं है। पंडित युगल किशोर शुक्ल के सम्पादन में प्रकाशित इस समाचार पत्र ने हालांकि आर्थिक अभावों के कारण जल्द ही दम तोड़ दिया, पर इसने हिन्दी अखबारों के प्रकाशन का जो शुभारंभ किया वह कारवां निरंतर आगे बढ़ा है। साथ ही हिन्दी का प्रथम पत्र होने के बावजूद यह भाषा, विचार एवं प्रस्तुति के लिहाज से महत्वपूर्ण बन गया। अपने क्रमिक विकास में हिन्दी पत्रकारिता के उत्कर्ष का समय आजादी के बाद आया। 1947 में देश को आजादी मिली। लोगों में नई उत्सुकता का संचार हुआ। औद्योगिक विकास के साथ-साथ मुद्रण कला भी विकसित हुई। जिससे पत्रों का संगठन पक्ष सुदृढ़ हुआ। हिन्दी पत्रों ने जहां एक ओर बहुमुखी विकास का मार्ग प्रशस्त्र किया वहीं राष्ट्र भाषा को सर्वाधिक उपयोगी बनाने का सफल प्रयास किया।

पत्रकारिता की शुरुआत एक मिशन के रूप में हुई थी। स्वतंत्रता की पृष्ठभूमि यहां के पत्रों एवं पत्रकारों ने ही तैयार की थी। आजादी की लड़ाई में पत्रकारिता देशभक्ति और समग्र राष्ट्रीय चेतना के साथ जुड़ी रही। इसमे देशभक्ति के अलावा सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना भी शामिल है। स्वाधीनता से पहले देश के लिए संघर्ष का समय था। इस संघर्ष में जितना योगदान राजनेताओं का था उससे तनिक भी कम पत्रों एवं पत्रकारों का नहीं था। स्वतंत्रता पूर्व का पत्रकारिता का इतिहास तो स्वतंत्रता आंदोलन का मुख्य हिस्सा ही है। तब पत्रकारिता घोर संघर्ष के बीच अपना अस्तित्व बचाये रखने के लिए प्रयत्नशील थी।

90 के दशक में भारतीय भाषाओं के अखबारों, हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में अमर उजाला, दैनिक भास्कर, दैनिक जागरण, प्रभात खबर आदि के नगरों-कस्बों से कई संस्करण निकलने शुरू हुए। जहां पहले महानगरों से अखबार छपते थे, भू-मंडलीकरण के बाद आयी नयी तकनीक, बेहतर सड़क और यातायात के संसाधनों की सुलभता की वजह से छोटे शहरों, कस्बों से भी नगर संस्करण का छपना आसान हो गया। साथ ही इन दशकों में ग्रामीण इलाकों, कस्बों में फैलते बाजार में नयी वस्तुओं के लिए नये उपभोक्ताओं की तलाश भी शुरू हुई। हिन्दी के अखबार इन वस्तुओं के प्रचार-प्रसार का एक जरिया बन कर उभरा है। साथ ही साथ अखबारों के इन संस्करणों में स्थानीय खबरों को प्रमुखता से छापा जाता है। इससे अखबारों के पाठकों की संख्या में काफी बढ़ोतरी हुई है। पिछले कुछ सालों में हिन्दी मीडिया ने अभूतपूर्व सफलता अर्जित की है। प्रिंट मीडिया को ही लें, आइआरएस रिपोर्ट देखें तो उसमें ऊपर के पांच अखबार हिन्दी के हैं। हिन्दी अखबारों और पत्रिकाओं का प्रसार लगातार बढ़ रहा है। इलेक्ट्रानिक मीडिया में हिन्दी न्यूज चैनलों की भरमार है। भारत में 182 से ज्यादा हिन्दी न्यूज चैनल हैं। नई तकनीक और प्रौद्योगिकी ने अखबारों की ताकत और ऊर्जा का व्यापक विस्तार किया है।

किसी भी देश के विकास का संबंध भाषा से है। इसमें कोई संदेह नहीं कि आजकल राजभाषा हिन्दी अपनी सीमाओं से बाहर आ चुकी है। यह विकास, बाजार और मीडिया की भाषा भी

(शेष पृष्ठ 35 पर)

संयुक्त राष्ट्रसंघ का हिन्दी में ट्विटर अकाउंट

नईदिल्ली। संयुक्त राष्ट्रसंघ ने ट्विटर पर हिन्दी में अपना अकाउंट बनाया और हिन्दी भाषा (Hindi Language) में पहला ट्वीट भी किया। यह कदम भारत के हर नागरिक के लिए गौरव का क्षण है। पहले ट्वीट में लिखा संदेश पढ़कर हर भारतीय का सीना गर्व से चौड़ा हो जाएगा। इतना ही नहीं संयुक्त राष्ट्रसंघ ने फेसबुक पर भी हिन्दी पेज बनाया है। संयुक्त राष्ट्रसंघ की इस पहल से हम भारतीयों में यह उम्मीद जागी है कि अब वह दिन दूर नहीं जब हिन्दी को विश्व भाषा का दर्जा देकर सम्मानित किया जाएगा।

उल्लेखनीय है कि संयुक्त राष्ट्र महासभा में सबसे पहले 1977 में हिन्दी में भाषण अटल बिहारी बाजपेयी ने दिया था तब वे जनता पार्टी सरकार में विदेश मंत्री थे। उस समय वे यूएन में भारत की अगुवाई कर रहे थे। संयुक्त राष्ट्र में किसी भी भारतीय के पहले हिन्दी भाषण का पूरे देश में जोरदार स्वागत हुआ था। और इसके बाद बतौर प्रधानमंत्री 2002 में पुनः अटलजी ने हिन्दी में भाषण दिया। इसके बाद वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सितम्बर 2014 में हिन्दी में भाषण दिया था।

भाषा का जुड़ाव मनुष्य से आज से नहीं बल्कि कई हजारों सालों से है। हर व्यक्ति की पहचान जिस तरह से उसका नाम होता है, उसी प्रकार से किसी मुल्क की पहचान उसकी भाषा होती है। कहने को हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी है परंतु आज हिन्दी बोलने का महत्व केवल तिलक लगाकर औपचारिकता पूरी करने जितना ही रह गया है। एक वह दौर था जब अंग्रेजी शासन की जड़ों को हिलाने के लिए हिन्दी ने अखबारों, गीतों व आंदोलनों की शक्ल में एक नए युग का सूत्रपात किया था व देश से अंग्रेजों व अंग्रेजी दोनों को ही दूर कर दिया था। उम्मीद है कि हम हिन्दी को वह सम्मान देने की कोशिश करेंगे,

ISSN 2231-0479

विमर्श

राष्ट्रीय एकता, हिन्दी और नागरी लिपि

डॉ. पुष्पेंद्र दुबे
प्राध्यापक (हिन्दी)
महाराजा रणजीतसिंह कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल साइंसेस, इंदौर

भारत की सभ्यता और संस्कृति सदैव से समन्वय और सामंजस्य पर आधारित रही है। इसी समन्वय और सामंजस्य की भावना ने प्राचीन भारत में भाषा की समस्या को सुलझा लिया था। उन्होंने संस्कृत को संपूर्ण भाषाओं की प्रकृति तथा अन्य भाषाओं को उसकी 'विकृति' मानकर उसे राष्ट्रभाषा के रूप में अपना लिया। इस प्रक्रिया से किसी भाषा का विनाश नहीं हुआ, परंतु विकास सभी भाषाओं का हुआ। उत्तर से लेकर दक्षिण तक और पूर्व से लेकर पश्चिम तक संस्कृत राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन थी। अलग-अलग प्रांतों में निवास करने वाले विद्वतजनों को राष्ट्रीय स्तर पर अपने विचार व्यक्त करने के लिए संस्कृत को अपनाना पड़ा। वास्तव में संस्कृत अध्यात्म की भाषा है। समन्वय के परिणामस्वरूप ही हम देखते हैं कि हजारों वर्षों बाद भी भारत की सांस्कृतिक चेतना में बहुत ज्यादा परिवर्तन नहीं आया है। संस्कृत भाषा की लिपि नागरी होने से भी यह परम्परा अक्षुण्ण बनी रही है। संस्कृत में विचार की स्वतंत्रता का अद्भुत गुण है। इसके प्रत्येक अक्षर का उच्चारण होता है। आगे चलकर यही सब भाषाओं की जननी कहलायी। कालांतर में संस्कृत साहित्यिक राष्ट्रभाषा के रूप में चलती रही, जबकि प्राकृत जनसामान्य की राष्ट्रभाषा के रूप में पल्लवित-पुष्पित हुई। गौतम बुद्ध और महावीर स्वामी ने अपने विचार-प्रचार के लिए प्राकृत को अपनाया। शौरसेनी प्राकृत से शौरसेनी अपभ्रंश का विकास हुआ और यह भारत की राष्ट्रभाषा बनी, जिसे खड़ीबोली हिन्दी के नाम से जाना जाता है। हिन्दी भारत की परंपरागत राष्ट्रभाषा की आधुनिक कड़ी है। भारत के आजादी आंदोलन के साथ-साथ हिन्दी भाषा का रूप-स्वरूप निखरता चला गया और यह जन-जन के कंठ का हार बनी। हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार करना ऐतिहासिक आवश्यकता थी।

विविधि भाषाओं का प्रचलन दुनिया में होता रहेगा। उन भाषाओं की अपनी लिपियों के साथ भावात्मक दृष्टि से सभी भाषाओं को जोड़ने के लिए एक सम्पर्क लिपि की आवश्यकता है। विविध भाषाएं एक सम्पर्क लिपि में लिखी जायेंगी तो मानसिक दृष्टि से अपनापन महसूस होगा।

आजादी के आंदोलन में भाषायी बंधन ढीले हो गए थे। अंग्रेजों और अंग्रेजी से मुकाबला करने के लिए पूरा देश एकसाथ उठ खड़ा हुआ। प्रांतीयता के आगे राष्ट्रीयता की भावना चरम पर थी। देश के प्रमुख नेताओं ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा स्वीकार कर जन-जन तक आजादी का संदेश पहुंचाया। जब हिन्दी ने अपना विस्तार किया तब उसके साथ लिपि भी सभी दूर पहुंची। चूंकि हिन्दी भाषा की लिपि नागरी होने से अहिन्दी भाषियों को उसमें नयापन नहीं लगा। इसका मुख्य कारण संस्कृत भाषा की लिपि भी नागरी होना है। भारत की आजादी के बाद जब भाषायी आधार प्रांतों का गठन हुआ, तब भाषाओं को लेकर आपस में टकराहट पैदा हो गयी। अहिन्दी प्रातों को यह अहसास दिलाया गया कि उन पर हिन्दी थोपी जा रही है, जबकि ऐसा नहीं था। आजादी के बाद देश में अनेक प्रकार के भाषायी दुराग्रह और पूर्वाग्रह उपस्थित हो गए हैं। समय बीतने के साथ राजनीतिक कारणों से भाषायी बंधन और कड़े हो गए।

भारत हजारों साल से एक रहा, लेकिन बाद में भाषा का संबंध टूट गया और अंग्रेजों ने इसका फायदा उठाया। तब महात्मा गांधी को कहना पड़ा कि यदि हम एक राष्ट्र बनाना चाहते हैं तो एक राष्ट्रभाषा की सख्त जरूरत है। तब सबसे अधिक बोली जाने वाली प्रचलित भाषा के तौर पर गांधीजी ने हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में सामने रखा। जब हमने यह बात समझ ली, तब अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त होने का समस्त व्यवहार हिन्दी में करने लगे। महात्मा गांधी ने हिन्दी के माध्यम से सारे भारत की आत्मिक एकता बढ़ाने का सुझाव दिया था। यद्यपि उनकी मातृभाषा गुजराती थी। हिन्दी ने राष्ट्रभाषा होने का दावा इसलिए किया क्योंकि देश के अधिसंख्य निवासियों की मातृभाषा हिन्दी है। अनेक लोग उसे आसानी से समझ सकते हैं। जिन लोगों के लिए कठिन है, वे थोड़े से प्रयासों से इसे सीख सकते हैं। कम-से-कम परेशानी में डालकर उसमें राष्ट्रभाषा बनने का नम्र गुण है।

हिन्दी में समुद्र के समान ही सभी भाषाओं के शब्दों को अपनाने की सामर्थ्य है। हिन्दी भारत की बुनियादी भाषा है। यह सुलभ संस्कृत है। तुलसीदासजी ने रामचरितमानस जैसा ग्रंथ लिखकर संस्कृत को बहुत आसान बना दिया, जिसे बच्चे, जवान, बूढ़े सभी सरलता से बोल सकते हैं, समझ सकते हैं। बंकिमचंद्र चटर्जी ने 'वंदेमातरम्' और गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने 'जन-गण-मंगलदायक' लिखा। इसमें अधिसंख्य शब्द संस्कृत के हैं, परंतु पूरे देशवासी एकसाथ खड़े होकर राष्ट्र-वंदना करते हैं। हिन्दी की एक ओर विशेषता है कि वह सभी प्रकार के बोलने, लिखने वालों को सहन करती है। हिन्दी का अन्य भाषाओं को दबाने का इरादा नहीं है। आज भाषाभेद के कारण उत्तर-दक्षिण का भेद पड़ गया है। दक्षिण भारत में हिन्दी का जिस तीव्रता से प्रसार हुआ है उतना दक्षिण की भाषाओं का उत्तर भारत में प्रसार नहीं हुआ है। भारत को भाषायी झगड़े से बचाने के लिए उत्तर भारत में दक्षिण की भाषा सीखने-सिखाने का वृहद कार्यक्रम चलाने की आवश्यकता है। इसमें नागरी लिपि की महत्वपूर्ण भूमिका है। भारत में अलग-अलग भाषाओं के लिए तकरीबन 12 लिपियां प्रचालित हैं। हिंदुस्तान की सभी भाषाओं को नागरी लिपि में व्यक्त किया जा सकता है। इस संबंध में विनोबा भावे लिखते हैं, ''अब भारत को जोड़ने के लिए हिन्दी भाषा काम नहीं देगी। अगले 20-25 साल अगर उस पर जोर देंगे तो वह तोड़ने काम करेगी, जोड़ने का नहीं। नागरी लिपि जोड़ने का काम करेगी। हिंदुस्तान की एकता के लिए हिन्दी भाष से भी अधिक जरूरत नागरी लिपि की है। उड़िया, तमिल, असमिया आदि लिपियां भी चलें और नागरी भी। यूरोपियन देशों में एक बाजार बनाने में रोमन लिपि ने अपना योगदान दिया। विज्ञान और तकनीक के विकास ने आज यह सुअवसर उपलब्ध करा दिया है कि हम भारत की विभिन्न भाषाओं को नागरी लिपि में भी अभिव्यक्त करें। आज यदि किसी को अपनी अन्य भाषा सीखना है तो उसे सबसे पहले लिपि सीखना पड़ती है और फिर वह भाषा सीख पाता है। हिंदुस्तान की सब भाषाएं नागरी में लिखी जायें, तो भारत की एकता और अधिक मजबूत होगी। यदि उत्तर भारत वाले को दक्षिण भारत की तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालयम सीखना है तो वह नागरी लिपि में अधिक आसानी से सीख सकता है। दक्षिण वालों को भी यदि अपने आसपास की भाषा सीखना है तो उसमें नागरी मदद करेगी।

अनेक लोगों को यह भय होता है कि नागरी लिपि अपनाने से उनकी लिपि समाप्त हो जाएगी। यह भय निरर्थक है। अपनी भाषाएं सीखने के लिए अपनी-अपनी लिपियां कायम रहेंगी। भारत में 22 विकसित भाषाएं हैं और अलग-अलग लिपियों में हजारों वर्षों का समृद्ध साहित्य उपलब्ध है। इसके नागरी लिपि में आ जाने से सभी को उसका लाभ मिलेगा। अज्ञानता के कारण नागरी को ही हिन्दी लिपि कहा जा रहा है, इससे भाषायी विरोध उपस्थित हुआ है, जबकि नागरी का हिन्दी से कुछ भी संबंध नहीं है। देवनागरी सारे भारत को जोड़ने वाली लिपि है।

भारत की भाषायी एकता के लिए विनोबाजी ने पांच बिंदु दिए हैं:

1. मेरा पहला उद्देश्य है कि दक्षिण की चारों भाषाएं नजदीक आयें। नागरी से बहुत जल्दी उनकी एकता हो सकेगी।
2. सारा उत्तर भारत एक हो जाए। नाहक अलग-अलग लिपि न चलायें।
3. दक्षिण और उत्तर भारत एक हो जाएं।
4. भारत और एशिया एक हो जाए।
5. भारत और विश्व एक हो जाए। जहां विश्व की एकता लाने की बात होगी, वहां मैं नागरी प्लस रोमन ऐसा मान सकता हूं।

विविधि भाषाओं का प्रचलन दुनिया में होता रहेगा। उन भाषाओं की अपनी लिपियों के साथ भावात्मक दृष्टि से सभी भाषाओं को जोड़ने के लिए एक सम्पर्क लिपि की आवश्यकता है। विविध भाषाएं एक सम्पर्क लिपि में लिखी जायेंगी तो मानसिक दृष्टि से अपनापन महसूस होगा।

सन् 1937 में मद्रास में महात्मा गांधी ने कहा था, ''भारत में कई लिपियों का प्रचलन विभिन्न प्रांतों की भाषाएं समझने के मार्ग में बाधक है। यूरोप के तमाम राष्ट्रों ने एक ही लिपि अपनाई है। तब भारत को भी, जो एक राष्ट्र होने का दावा करता है, एक ही लिपि अपनानी चाहिए। रोमन लिपि का व्यवहार भारत में नहीं हो सकता, देवनागरी लिपि का ही व्यवहार होना चाहिए, क्योंकि अनेक प्रांतीय भाषाओं की लिपि प्राय: एक सी है।'' राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने के लिए नागरी को राष्ट्रलिपि के रूप में स्वीकार करने की आवश्यकता है।

ISSN 2231-0479

विमर्श

डिजिटल मीडिया के दौर में भाषा के जरूरी सवाल

सौरभ राय
पत्रकार, रायपुर (छत्तीसगढ़)

हिन्दी में एक मशहूर कहावत है –'कोस कोस पर पानी बदले, चार कोस पर बानी।' इस कहावत पर अगर विचार किया जाए तो क्या हर चार कोस में भाषा का बदलना हमारे पिछड़ेपन का प्रतीक नहीं? क्या यह नहीं दर्शाता कि भारत की एक बहुत बड़ी जनसंख्या अपने चार कोस की सीमा से बाहर निकल ही नहीं पाती है? निकलने की जरूरत भी शायद नहीं पड़ती है। इसी चार कोस के गांवों में इनके तमाम आत्मीय, मित्र मिल जाते हैं। इसी चार कोस के दायरे में इनकी खेती–बाड़ी, शादी–ब्याह, व्यापार, बाजार इत्यादि की जरूरतें भी पूरी हो जाती हैं। मगर क्या भाषाओं का अपने अपने चार कोस के वृत्त में सिमटे रहना गर्व की बात है?

समय बनाम भाषा आज भाषा की जो स्थिति है, वह कभी समय की भी थी। हर चार कोस में समय बदलता था। हमारे अपने देश में समय देखने का रिवाज नया है। पहले सूरज की स्थिति और पहर नाप कर समय का अंदाजा लगा लिया जाता था। घड़ी के निर्माण के बाद भी पश्चिमी देशों में एक लम्बी अवधि थी जब हर गांव में चर्च द्वारा नियुक्त समयपाल घंटागर का समय रखता था। हर गांव अपने समय का हिसाब रखता था। यह उन्नीसवीं सदी में रेल मार्ग के विकास के साथ बदला। लोग अब अपने महाद्वीप के एक छोर से दूसरे छोर तक सफर करने लगे। इससे जन्मी अनियमित्ता और अव्यवस्था से जूझने के लिए समय के मानकीकरण की जरुरत महसूस हुई। न सिर्फ एक प्रांत में बल्कि विश्वव्यापी रूप से समय की देखरेख करने के लिए ग्रीनविच मीन टाइम को मानक मानकर संसार के विभिन्न देशों में समय क्षेत्र के अनुसार समय का निर्धारण किया गया।

हिन्दी भाषा का विकास तब तक संभव नहीं है जब तक हम लोक भाषाओं और उर्दू को न अपनाएं। हमारी संस्कृति के रक्षकों की लोकभाषाओं और उर्दू के प्रति उपेक्षा जगजाहिर है। भाषा के संदर्भ में इस बात को समझना नितांत आवश्यक है कि भाषाएं ज्ञान का समग्र रूप हैं।

अपने रोजमर्रा के जीवन में हम समय का केवल एक रूप देखते हैं। समय का मूल अस्तित्व वैज्ञानिक है। न्यूटन से लेकर आइंस्टीन तक सभी ने समय को घड़ी के डायल से निकाल कर जटिल सूत्रों में जगह दी है। भाषा का अस्तित्व समय के विपरीत है। वह स्थायी नहीं है। स्विस भाषाविद सस्यूर के मुताबिक भाषा केवल ध्वनियों के बीच का अंतर नहीं बल्कि विचारों की असमानता का भी सूचक है। यही विचारों की असमानता हमारी वैचारिक प्रगति का चालक है। भाषाओं का एकीकरण जहां हमें पिछड़ेपन से मुक्ति दिला सकती है, वहीं हमारी वैचारिक भिन्नता का क्षय कर सकती है।

अंग्रेजी बनाम हिन्दी अंग्रेजी भाषा की बात करें तो हम अक्सर इस तथ्य पर जोर देते हैं कि उप–निवेशवाद की वजह से भाषा का प्रचार हुआ है। गौरतलब यह भी है कि

पिछले पांच-छह दशकों से इस भाषा का विकास भी अमरीका और ब्रिटेन के बाहर ही संभव हुआ है। बोर्खेज, नाबोकोव, मुराकामी से लेकर नायपॉल और रुश्दी तक सभी ने अंग्रेजी भाषा को नए मुहावरे और नई शैली से सम्पन्न किया है। अंग्रेजी भी इस तरह का लचीलापन प्रदान करती है कि आर के नारायण के 'मालगुडी डेज' को पढ़ते हुए हमें महसूस होने लगता है कि हम अंग्रेजी नहीं, बल्कि कन्नड़ साहित्य पढ़ रहे हैं।

अरुंधति राय को भी जब 'गॉड ऑफ़ स्माल थिंग्स' के लिए बुकर पुरस्कार से सम्मानित किया गया तो कारण विषय वस्तु न होकर, प्रस्तुति थी। इन्होंने अंग्रेजी को मलयालम भाषा के शब्द देकर दोनों भाषाओं को समृद्ध किया। पुरातनपंथी जिन भाषाओं की फूहड़ अंग्रेजी से तुलना कर अवहेलना करते थे, आज इन्हीं भाषाओं के लेखकों को इनके डिक्शन के लिए महान करार दिया जा रहा है।

भाषाओं की बेबुनियाद बहस : इस संदर्भ में यह प्रशन पूछना जरूरी है कि अंग्रेजी की तरह हिन्दी का विकास क्यों संभव नहीं हो पाया है? 'हिंद-हिन्दी-हिन्दुस्तान' के सतही नारे लगाते किसी भी स्व-घोषित भाषा के रक्षक से बातचीत कर पता चल जाता है कि हमारी भाषा के पतन में इनका बड़ा योगदान है। इनका प्रस्ताव है 'अविकास' - यानी चार कोस के आगे बानी को बढ़ने ही न देना।

हिन्दी लेखक-व्यंगकार हरिशंकर परसाई ने हमें इसी पिछड़ी हुई मानसिकता के खिलाफ आगाह किया था। उन्होंने लिखा था कि हिन्दी भाषा का विकास तब तक संभव नहीं है जब तक हम लोक भाषाओं और उर्दू को न अपनाएं। हमारी संस्कृति के रक्षकों की लोकभाषाओं और उर्दू के प्रति उपेक्षा जगजाहिर है। भाषा के संदर्भ में इस बात को समझना नितांत आवश्यक है कि भाषाएं ज्ञान का समग्र रूप हैं। और पुरानी कहावत के मुताबिक ज्ञान बांटने से, न कि कैद करने से या सामने वाले पर थोपने से बढ़ता है।

जाहिर है कि यह स्थिति केवल हिन्दी के साथ नहीं, बल्कि बाकी भाषाओं के साथ भी है। पचास वॉल्यूम में प्रकशित 'पीपलस लिंगविस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया' में गणेश देवी बोली और भाषा के बीच के भेद को निर्मूल करार देते हैं। उनका शोध यह साबित करता है कि कैसे भारत सरकार द्वारा निर्धारित 122 भाषाओं के मुकाबले भारत में 780 भाषाएं मौजूद हैं, और इनकी संख्या तेजी से घट रही हैं। कारण कुछ भी हो, मगर कूप मंडूक बने रहने से भाषाओं का लुप्त होना लगभग तय है।

डिजिटल मीडिया के समय में भाषा भाषाओं के रक्षक जहां अविकास का रास्ता इख्तियार करते नजर आ रहे हैं, हमें विकास का रास्ता अपनाना होगा। हिन्दी में उर्दू और लोक भाषाओं के अलावा आज इंटरनेट की डिजिटल भाषा का प्रवेश नितांत आवश्यक है। हमारे समय में बढ़ती डिजिटल क्रांति ने भाषाओं के उन्मूलन की गहरी संभावना हमारे सामने रखी है। हिन्दी की रक्षा के लिए तीर कमान निकालने वालों की संख्या की तुलना अगर हिन्दी विकिपीडिया में योगदान देने वालों की संख्या से की जाए तो वास्तविकता सामने आती है। इंटरनेट पर उपभोगताओं की संख्या की बात करें तो भारतीयों की संख्या दूसरी है, मगर इसी इंटरनेट पर इस्तेमाल की जा रही शीर्ष तीस भाषाओं में कोई भारतीय भाषा मौजूद नहीं है। यानी तमाम भारतीय भाषाएं मिलकर भी इंटरनेट का 0.1 प्रतिशत कंटेंट नहीं उपजा पा रही हैं। इसकी तुलना रुसी (5.9 प्रतिशत) या जर्मन (5.8 प्रतिशत) भाषा से की जाए तो हमारी दयनीय स्थिति का पता चलता है।

फेसबुक, गूगल वगैरह भारत में इंटरनेट का विस्तार करने पर ध्यान दे रहे हैं, मगर भाषाओं पर ध्यान नहीं दिया जा रहा। ये गांव-गांव जाकर अंग्रेजी सिखाएंगे। हम इसके खिलाफ नहीं हैं, मगर हिन्दी और बाकी भारतीय भाषाएं अगर तकनीकि क्रांति की बलिवेदी पर कुर्बान हो जाती हैं तो इनके साथ साहित्य, ज्ञान, दृष्टि और वैचारिकता के बड़े कोष भी लुप्त होते चले जाएंगे।

भारतीय भाषाओं को अभी लम्बा सफर तय करना है। भाषाएं मिलकर एक दूसरे को समृद्ध करते हुए या तो आगे बढ़ सकती हैं या एक दूसरे से उलझकर कमजोर पड़ सकती हैं। डिजिटल संसार में भी हमारी भाषाओं को लाने की कोशिश को जोर पकड़ना होगा।

पत्रकारों की अधिमान्यता रद्द करने की कार्यवाही शुरू

दिल्ली। पूरे देश को हिला कर रख देने वाले मुजफ्फरपुर रेप केस में अखबार मालिक ब्रजेश ठाकुर का नाम आने के बाद से सरकार और अधिक सतर्क हो गई है। मान्यता देने के लिए कई तरह के नए प्रावधान जोड़े जाएंगे। जी न्यूज की एक रिपोर्ट के मुताबिक, जुगाड़ कर मान्यता लेने वाले 200 से ज्यादा पत्रकारों की मान्यता रद्द होगी। फिलहाल राज्य में लगभग 600 मान्यता प्राप्त पत्रकार हैं।

ISSN 2231-0479

विमर्श

भाषा के नष्ट होने का अर्थ संस्कृति का नष्ट होना है

संगीत समझता है
अभी वह अर्थ समझता है
बाद में सीखेगा भाषा। -**नरेश सक्सेना**

प्रदीप कान्त
वैज्ञानिक, कैट से संबद्ध, इंदौर

प्रख्यात कवि नरेश सक्सेना की ये पंक्तियां कितनी आसानी से कितना कुछ कह जाती है। अगर यह कहा जाए कि भाषा संवाद का एकमात्र माध्यम हैं तो गलत होगा क्योंकि संवाद तो संकेतों से भी होता है यानी इशारों की भाषा जो मूक बधिर लोगों के संवाद का माध्यम है। भाषा तो उस संगीत की भी होती है जिसमे जबान से कुछ बोला नहीं जाता। पर भाषा के रूप में सामान्यत हम जिसकी बात करते हैं वह एक ऐसी शब्दावली है जो बोली, लिखी और पढ़ी जाती हो और लोगों को जोड़ने के लिए एक तरह से पुल का कार्य करती हो। तो फिर सवाल तो सहज है कि भाषा की उत्पत्ति हुई कैसे होगी? यह सवाल तो दर्शन के उसी सवाल की तरह है कि मैं कौन? बहरहाल, इस सवाल पर तो कोई भाषा वैज्ञानिक ही प्रकाश डाल सके। पर यह तय है कि जब मनुष्य को लगा होगा कि उसमे बोलने-सुनने की क्षमता है तो चीजों के रंग-रूप, आकार-प्रकार, क्रियाओं-प्रतिक्रियाओं के आधार पर कुछ शब्द बने होंगे और फिर भाषा का विकास हुआ होगा। यहां कहना चाहिए कि भाषा का नहीं, क्षेत्रों के अनुसार कई भाषाओं का विकास हुआ जिसमे भारत में शास्त्रीय साहित्य की भाषा संस्कृत से लेकर, प्रदेशों की भाषा जैसे तमिल, तेलगु, कन्नड़, मलयाली, बंगाली, उड़िया, असमिया आदि और फिर पूरे देश में आम बोलचाल की भाषा हिन्दी तक आया जा सकता है। अब भाषा का विकास एक विषयांतर हो जाएगा क्योंकि हमारा सवाल तो देश में अभी भी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा हिन्दी की दशा और दिशा का है। तथ्य तो यह भी है कि अंग्रेजी और चायनीज के बाद हिन्दी वर्तमान में बोली जाने वाली चौथी सबसे बड़ी भाषा है।

खैर, देश में सहज रूप से बोली जाने वाली इस हिन्दी की दशा पर विचार किया जाए- बार-बार यह प्रचारित किया जाता है कि हिन्दी देश की राष्ट्रभाषा है- क्या सचमुच? 14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा द्वारा लिए गए निर्णय के अनुसार हिन्दी को देश की राजभाषा घोषित किया गया और 1953 से पूरे भारत में प्रतिवर्ष इसी दिन हिन्दी दिवस मनाया जाता है। क्या राजभाषा और राष्ट्रभाषा जैसे दो शब्दों में कोई अंतर नहीं है। राजभाषा यानि राजकार्यों में उपयोग की भाषा जबकि राष्ट्रभाषा वह, जो ज्यादातर लोगों द्वारा बोली, समझी, लिखी, पढ़ी जाती हो और राष्ट्र को एक सूत्र में बांध सके। जिसके लिए महात्मा गांधी ने कहा था- 'मेरा नम्र, लेकिन दृढ अभिप्राय है कि जब तक हम हिन्दी को राष्ट्रीय दर्जा और अपनी अपनी प्रांतीय भाषाओं को उनका योग्य स्थान नहीं देंगे, तब तक स्वराज्य की सब बातें निरर्थक हैं।' वैसे बहुसंख्यक लोग यह समझते हैं कि हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है किन्तु एक मामले में गुजरात उच्च न्यायालय के अनुसार-'इस पूरे

भारत के अलावा दुनिया का कौनसा देश ऐसा है जहां अपनी ही भाषा को बढ़ावा देने के लिए दिवस, सप्ताह, मास मनाए जाते हों। और फिर जब इसी राजभाषा में काम होता है तो वह दोयम दर्जे का होता है यानि हिन्दी के परिपत्र अंग्रेजी से अनुवादित होते हैं गोया आपको हिन्दी नहीं आती, उसके लिए एक विशिष्ट पद वाला हिन्दी अधिकारी चाहिए। यह राजभाषा हिन्दी की दशा का पहलू है।

मामले पर तर्क वितर्क के दौरान कोर्ट का कहना था कि-'क्या इस तरह का कोई नोटिफिकेशन है कि हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है क्योंकि हिन्दी तो अब तक 'राजभाषा' यानी 'ऑफिशियल' भर है। सरकार द्वारा जारी ऐसा कोई नोटिफिकेशन अब तक कोर्ट में पेश नहीं किया गया है, ऐसा इसलिए क्योंकि हिन्दी देश की राजकाज की भाषा है, न कि राष्ट्रभाषा।'[1]

बहरहाल, हिन्दी के ही प्रचार के लिए 10 जनवरी को विश्व हिन्दी दिवस भी मनाया जाता है। मुझे तो पता नहीं कि भारत के अलावा दुनिया का कौनसा देश ऐसा है जहां अपनी ही भाषा को बढ़ावा देने के लिए दिवस, सप्ताह, मास मनाए जाते हों। और फिर जब इसी राजभाषा में काम होता है तो वह दोयम दर्जे का होता है यानि हिन्दी के परिपत्र अंग्रेजी से अनुवादित होते हैं गोया आपको हिन्दी नहीं आती, उसके लिए एक विशिष्ट पद वाला हिन्दी अधिकारी चाहिए। यह राजभाषा हिन्दी की दशा का पहलू है। अगर हिन्दी के बारे में कुछ ज्यादा पढ़े लिखे से बात कर ली जाए तो वह हिन्दी को गरियाता नजर आता है। जबकि किसी सामान्य व्यक्ति से बात की जाए तो वह हिन्दी के प्रयोग के प्रति आश्वस्त नजर आता है।

गरियाने वाला हिन्दी को वर्तमान के लिए अप्रासंगिक बताता है। वह इस तथ्य को नकार देता है कि भाषा न केवल संवाद का माध्यम है वरन यह हमारी चिंतन प्रक्रिया का हिस्सा भी है। हम जिस भाषा को बोलते हुए खेलते कूदते बड़े होते हैं, उसी में हमारी चिंतन प्रक्रिया और अभिव्यक्ति सरल बेहतर हो सकती है। भारत में बहुसंख्यक लोगों की भाषा आज भी हिन्दी ही है, अंग्रेजी बोलने, पढ़ने और लिखने वाले तो आज भी मुश्किल से दस प्रतिशत ही होंगे। इस पर आप आसानी से कह सकते हैं कि हिन्दी में लिखने वाले बहुत से अच्छे साहित्यकार हैं, सहमत। किन्तु यदि हम विज्ञान की बात करें तो! ज्यादातर लोग इसे विज्ञान के लिए अनुपयुक्त बताते नजर आएंगे। कारण सीधा सा है- हिन्दी में बेहतर वैज्ञानिक साहित्य की अनुपलब्धता। जबकि इसी दुनिया में रूस, चीन और जापान जैसे देश हैं जिनकी अपनी भाषा में वैज्ञानिक साहित्य तो क्याए वहां का वैज्ञानिक शोध भी उपलब्ध है। फायदा यह है कि अपेक्षाकृत कम अंग्रेजी जानने वाले किन्तु विज्ञान में रूचि रखने वाले लोग उससे लाभान्वित हो पाते हैं। हालांकि वैज्ञानिक शब्दावली बनाने की दिशा में किये जा रहे प्रयासों को नकारा तो नहीं जा सकता किन्तु आजादी के लगभग 70 सालों को देखते हुए इसे पर्याप्त भी नहीं कहा जा सकता। इसे गरियाने का कारण एक ओर है, इंग्लिश मीडियम बनाम हिन्दी मीडियम (इंग्लिश वालों के लिए स्कोप ज्यादा है, ऐसा पब्लिक को लगता है) है भी क्योंकि, उच्च शिक्षा में हिन्दी विषय को छोड़कर बाकी सब अंग्रेजी में ही बेहतर ढंग से उपलब्ध है।

आश्वस्त होने वाला तर्क देता है कि हिन्दी का प्रयोग बढ़ रहा है। एक समय था जब टाइपराईटर पर हिन्दी टाइप करना बड़ा कठिन होता था जबकि आज आप कम्प्यूटर से लेकर मोबाइल पर आसानी से हिन्दी टाइप कर सकते हैं। इंग्लिश 'रोमन' में लिखते हैं तो हिन्दी में आ जाता है। हिन्दी फॉण्ट में स्मरण शक्ति खपाने की जरूरत नहीं। तो भाईए ये तो बाजार की जरूरत थी कि ऐसे एप विकसित हुए 'आवश्यकता आविष्कार की जननी है!', चलो मान लेते हैं कि यह एक अच्छी बात है कि तकनीक ने हिन्दी टाइपिंग आसान कर दी है (यह हमारा सकारात्मक दृष्टिकोण होना भी चाहिए) किन्तु क्या हमने कभी सोचा है कि हम अपनी हिन्दी में टाइपिंग के लिए अंग्रेजी पर निर्भर होते जा रहे हैं। जबकि कम्प्यूटर के लिए हिन्दी के कृतिदेव, कृष्णा और चाणक्य जैसे कई फॉण्ट विकसित किये गए हैं पर हम स्वयं उन्हें उपयोग करने में अपने आप को समर्थ नहीं बना पाए। हां, एक बात जरूर हुई है कि पिछले कुछ समय से हिन्दी में बहुत से वेब पेज सामने आए हैं जिन्हें सामान्य जानकारियों, समाचारों आदि के लिए देखा जा सकता है। या बहुत से साहित्यकारों ने अपने अपने ब्लॉग बना लिए हैं और हिन्दी का अच्छा (बुरा भी) लेखन वहां उपलब्ध है।

आश्वासन का एक तर्क और है कि भाषा को सरल होना चाहिए और हिन्दी पहले से सरल हुई है। जबकि जिस हिन्दी में आज लोग बात करते हैं वह हिन्दी कहां है, वह तो हिंगलिश है। भोजन को लंच, कक्षा को क्लास, अभिभावकों को पैरेंट्स जैसे शब्दों से विस्थापित करते हुए जो भाषा बन रही है वह अखबारों के पेज-3 की लोकप्रिय भाषा है। टीवी पर कुकुरमुत्ते की तरह उग आए छोटे-मोटे हिन्दी समाचार चैनलों की भाषा भी सुन सकते हैं। और ऐसा नहीं कि यह केवल हिन्दी में हो रहा है, अंग्रेजी की यह घुसपैठ क्षेत्रीय भाषाओं में भी हो रही है। और इस के पक्ष में तर्क भी सुनिए-अंग्रेजी जैसी अंतर्राष्ट्रीय भाषा ने कई भाषाओं के शब्द अपनाए हैं और समृद्ध हुई है। हिन्दी को भी अंग्रेजी के शब्द अपनाना चाहिए!!! हम यह भूल जाते हैं कि हिन्दी का क्रमिक विकास भी हमारे देश की अन्य भाषाओं और बोलियों के शब्दों से से ही हुआ हैए जिसमें उर्दू भी शामिल है। पर हिन्दी में अंग्रेजी के मिश्रण का कुटिल उद्देश्य कुछ और है। दरअसल किसी भी भाषा का सौंदर्य उसके शब्दों से होता है। उन शब्दों की ध्वनियां ही भाषा को वह सौंदर्य प्रदान करती है। आज अंग्रेजी के कई शब्द जो धीरे धीरे हिन्दी में घोले जा रहे हैं, उसके कारण मूल शब्द विस्थापित या बोलचाल से बाहर होते जा रहे हैं। यह केवल भाषिक सौंदर्य नष्ट करने की नहीं वरन भाषा को चलन से बाहर करने की प्रथम प्रक्रिया है। इसका दूसरा चरण है। देवनागरी लिपि के बजाय रोमन लिपि की वकालत मतलब भाषा आपकी और लिपि विदेशी। यह अंतर्राष्ट्रीय भाषा का हमारी भाषा पर अंतिम आक्रमण होगा। जब आपके शब्द नहीं बचेंगे और लिपि

(शेष पृष्ठ पर 29 पर)

ISSN 2231-0479

सुमिरन
अटल बिहारी वाजपेयी

हिंदुस्तानी सियासत का एक अजातशत्रु

टीम समागम

भारतीय राजनीति में भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी एक राजनेता होने के साथ ही प्रखर जनसंचारक के रूप में स्मरण किए जाएंगे। हिन्दी के प्रति उनका अगाध प्रेम था और यही कारण है कि एक बार विश्व मंच में उन्होंने भाषण देने से इसलिए इंकार कर दिया था कि उस मंच पर उन्हें हिन्दी में नहीं बोलने दिया जा रहा था। भारत के यशस्वी राजनेता अटलजी अपनी बातों पर अटल रहे और विश्व मंच को विवश होकर उन्हें हिन्दी में बोलने के लिए अनुमति देना पड़ी। उनके दिए गए भाषणों का विपक्ष भी कायल था और हर कोई उनके भाषण को सुनना पसंद करता है। उनके कई ऐसे भाषण हैं, जिन्हें आज भी लोग सुनना पसंद करते हैं। उसमें एक सबसे प्रमुख है साल 1977 में संयुक्त राष्ट्र में हिन्दी में दिया गया वाजपेयी का भाषण। साल 1977 में अटल बिहारी वाजपेयी, प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई की सरकार में विदेश मंत्री थे और वो दो साल तक मंत्री रहे थे। यह भाषण बेहद लोकप्रिय हुआ और पहली बार यूएन जैसे अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भारत की राजभाषा गूंजी। वे संवेदनशील कवि होने के साथ-साथ भारतीय राजनीति के आइकॉन थे।

संभवत: यह पहला मौका था जब यूएन जैसे बड़े अतंराष्ट्रीय मंच पर भारत की गूंज सुनने को मिली थी। अटल बिहारी वाजपेयी का यह भाषण यूएन में आए सभी प्रतिनिधियों को इतना पसंद आया कि उन्होंने खड़े होकर अटलजी के लिए तालियां बजाई। इस दौरान उन्होंने वसुधैव कुटुम्बकम का संदेश देते हुए अपने भाषण में उन्होंने मूलभूत मानव अधिकारों के साथ-साथ रंगभेद जैसे गंभीर मुद्दों का जिक्र किया था। उसके बाद भी उन्होंने विदेशी मंचों पर कई भाषण दिए जो काफी लोकप्रिय हुए। उन्होंने भाषण में कहा था-'मैं भारत की ओर से इस महासभा को आश्वासन देना चाहता हूं कि हम एक विश्व के आदर्शों की प्राप्ति और मानव कल्याण तथा उसके गौरव के लिए त्याग और बलिदान की बेला में कभी पीछे नहीं रहेंगे।'

वसुधैव कुटुम्बकम का संदेश देते हुए अपने भाषण में उन्होंने मूलभूत मानव अधिकारों के साथ-साथ रंगभेद जैसे गंभीर मुद्दों का जिक्र किया था। उसके बाद भी उन्होंने विदेशी मंचों पर कई भाषण दिए जो काफी लोकप्रिय हुए।

अटल जी राजनीति के एक ऐसे व्यक्तित्व हैं जिनको विपक्ष भी अपना आदर्श मानता है। कांग्रेस के साथ अटल की सरकार के संबंध बेहतर रहे हैं। देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू संसद में वाजपेयी का भाषण का सुनकर इतने प्रभावित हुए कि उनके प्रधानमंत्री बनने की भविष्यवाणी कर दी। और ये बात सच साबित हुई। देश की पहली महिला पीएम इंदिरा गांधी उनका न केवल सम्मान करती थीं बल्कि उनसे सलाह मशविर भी किया करती थीं। बाद के प्रधानमंत्री ने अटलजी के प्रति यह सम्मान बनाये रखा। भारतीय राजनीति के वे अजातशत्रु हैं।

अटल बिहारी वाजपेयी वर्ष 1957 के लोकसभा चुनावों में पहली बार उत्तर प्रदेश की बलरामपुर लोकसभा सीट से जनसंघ के प्रत्याशी के रूप में जीतकर लोकसभा पहुंचे। अटल जी 1957 से 1977 तक लगातार जनसंघ की ओर से संसदीय दल के नेता रहे। अटलजी विपक्ष के कामों की तारीफ करने से भी पीछे नहीं हटते थे। 1971 के दौरान भारत-पाकिस्तान युद्ध में विजयश्री के साथ बांग्लादेश को आजाद करा कर पाक के 93 हजार सैनिकों को घुटना टेकने को विवश किया। इस विजय के लिए तत्कालीन प्रधानमंत्री स्वर्गीय इंदिरा गांधी को अटल जी ने संसद में दुर्गा

की उपमा से सम्मानित किया था। लेकिन 1975 में इंदिरा गांधी द्वारा आपातकाल लगाने उन्होंने खुलकर विरोध किया था। देश में पहली बार गैर कांग्रेसी सरकार जनता पार्टी की सरकार बनी। मोरारजी सरकार में अटल जी को विदेश मंत्री जैसा महत्वपूर्ण विभाग दिया गया।

अटल बिहारी वाजपेयी ने संसद में अपने आखिरी भाषण में कहा कि-'हमने 50 साल में प्रगति की है इससे कोई इनकार नहीं कर सकता। हर जगह मैंने कहा कि मैं उन लोगों में से नहीं हूं जो 50 वर्ष की उपलब्धियों पर पानी फेर दूं। उन्होंने कहा कि ऐसा करना देश के पुरुषार्थ पर पानी फेरना होगा, ऐसा करना किसान के साथ अन्याय होगा, मजदूर और आम आदमी के साथ ज्यादती होगी। एक सवाल मन में उठाता है और उठना भी चाहिए कि आजादी को 50 साल होने आए। हम जयंती मनाने जा रहे हैं, आज देश की स्थिति क्या है? हम प्रगति की दौड़ में पिछड़ क्यों गए? लेकिन जो हमारे साथ आजाद हुए थे, वो हमसे आगे निकल गए। जो देश हमारे बाद में जन्मे थे वो हमे पीछे छोड़ गए। 20 फीसदी अधिक लोग गरीबीरेखा के नीचे हैं।' राष्ट्रपति महोदय अभिभाषण में भाषण में गांव उल्लेख है ना पीने के पानी का नहीं, हम प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य नहीं कर सके। लड़कियों की शिक्षा की उपेक्षा हो रही है। लड़कियों का जन्म लेना तो अभी तक देश में एक अभिशाप है।

अटल बिहारी वाजपेयी यूं तो भारतीय राजनीतिक के पटल पर एक ऐसा नाम है, जिन्होंने अपने व्यक्तित्व व कृतित्व से न केवल व्यापक स्वीकार्यता और सम्मान हासिल किया, बल्कि तमाम बाधाओं को पार करते हुए 90 के दशक में भाजपा को स्थापित करने में भी अहम भूमिका निभाई। यह वाजपेयी के व्यक्तित्व का ही कमाल था कि भाजपा के साथ उस समय नए सहयोगी दल जुड़ते गए।

25 दिसम्बर 1924 को मध्यप्रदेश के ग्वालियर शहर में जन्मे अटल बिहारी वाजपेयी पहली बार 1957 में संसद सदस्य चुने गए थे। इसके पहले 1955 में पहली बार लोकसभा का चुनाव लड़ा था लेकिन हार गए। इसके बाद 1957 में वह सासंद बने। अटलजी कुल 10 बार लोकसभा के सांसद रहे। वहीं वह दो बार 1962 और 1986 में राज्यसभा के सांसद भी रहे। इस दौरान अटलजी ने उत्तर प्रदेश, नई दिल्ली और मध्यप्रदेश से लोकसभा का चुनाव लड़ा और जीते। वहीं वह गुजरात से राज्यसभा पहुंचे थे। साल 1950 के दशक की शुरुआत में आरएसएस की पत्रिका को चलाने के लिए वाजपेयी ने कानून की पढ़ाई बीच में छोड़ दी। बाद में उन्होंने आरएसएस में अपनी राजनीतिक जड़ें जमाईं और बीजेपी की उदारवादी आवाज बनकर उभरे। राजनीति में वाजपेयी की शुरुआत 1942-45 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान स्वतंत्रता सेनानी के रूप में हुई थी। उन्होंने कम्युनिस्ट के रूप में शुरुआत की, लेकिन हिंदुत्व का झंडा बुलंद करने वाले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सदस्यता के लिए साम्यवाद को छोड़ दिया। संघ को भारतीय राजनीति में दक्षिणपंथी माना जाता है।

अपनी भाषणकला, मनमोहक मुस्कान, वाणी के ओज, लेखन व विचारधारा के प्रति निष्ठा तथा ठोस फैसले लेने के लिए विख्यात वाजपेयी को भारत व पाकिस्तान के मतभेदों को दूर करने की दिशा में प्रभावी पहल करने का श्रेय दिया जाता है। इन्हीं कदमों के कारण ही वह भाजपा के राष्ट्रवादी राजनीतिक एजेंडे से परे जाकर एक व्यापक फलक के राजनेता के रूप में जाने जाते हैं।

भाजपा के चार दशक तक विपक्ष में रहने के बाद वाजपेयी 1996 में पहली बार प्रधानमंत्री बने, लेकिन संख्याबल नहीं होने से उनकी सरकार महज 13 दिन में ही गिर गई। आंकड़ों ने एक बार फिर वाजपेयी के साथ लुका-छिपी का खेल खेला और स्थिर बहुमत नहीं होने के कारण 13 महीने बाद 1999 की शुरुआत में उनके नेतृत्व वाली दूसरी सरकार भी गिर गई। अन्नाद्रमुक प्रमुख जयललिता द्वारा केंद्र की भाजपा की अगुवाई वाली गठबंधन सरकार से समर्थन वापस लेने की पृष्ठभूमि में वाजपेयी सरकार धराशायी हो गई। लेकिन 1999 के चुनाव में वाजपेयी पिछली बार के मुकाबले एक अधिक स्थिर गठबंधन सरकार के मुखिया बने, जिसने अपना पांच साल का कार्यकाल पूरा किया।

पोखरण परमाणु परीक्षण : अटलजी 11 और 13 मई 1998 को पोखरण में पांच भूमिगत परमाणु परीक्षण विस्फोट कर अटल जी ने सभी को चौंका दिया। यह भारत का दूसरा परमाणु परीक्षण था। इससे पहले 1974 में पोखरण 1 का परीक्षण किया गया था। पोखरण का परीक्षण अटल जी के बड़े फैसलों में से एक है।

पाक से संबंधों में सुधार की पहल : 19 फरवरी 1999 को सदा-ए-सरहद नाम से दिल्ली से लाहौर तक बस सेवा शुरू की गई। इस सेवा का उद्घाटन करते हुए प्रथम यात्री के रूप में वाजपेयी जी ने पाकिस्तान की यात्रा करके नवाज शरीफ से मुलाकात की और आपसी संबंधों में एक नयी शुरुआत की।

कारगिल युद्ध : कुछ ही समय पश्चात् पाकिस्तान के तत्कालीन सेना प्रमुख परवेज मुशर्रफ की शह पर पाकिस्तानी सेना व उग्रवादियों ने कारगिल क्षेत्र में घुसपैठ करके कई पहाड़ी चोटियों पर कब्जा कर लिया। अटल सरकार ने पाक की सीमा का उल्लंघन न करने की अंतर्राष्ट्रीय सलाह का सम्मान करते हुए धैर्यपूर्वक किंतु ठोस कार्यवाही करके भारतीय क्षेत्र को मुक्त कराया।

स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना : ऐसा माना जाता है कि अटल जी के शासनकाल में भारत में जितनी सड़कों का निर्माण हुआ इतना केवल शेरशाह सूरी के समय में ही हुआ था। भारत भर के चारों कोनों को सड़क मार्ग से जोड़ने के लिए स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना की शुरुआत की गई।

ISSN 2231-0479

दस्तावेज

आरके स्टूडियो : एक दिन बिक जाएगा माटी के मोल..

मनोज कुमार
वरिष्ठ पत्रकार, भोपाल

हिन्दी सिनेमा के ग्रेट शो मैन राजकपूर का आरके स्टूडियो महज फिल्म निर्माण का मुकम्मल जगह ना होकर भारतीय सिनेमा का मील का पत्थर है जो यह स्मरण कराता है कि इस राह से गुजर कर मुकाम पर कैसे पहुंचा जा सकता है। साल 1948 में जब इस स्टूडियो का निर्माण हुआ था तब इसके हिस्से में पहली फिल्म 'आग' आयी थी और दुर्भाग्यवश लगभग साल भर पहले इसी आग में स्टूडियो का ताना-बाना बिखर गया।

आर.के. स्टूडियो को बेचे जाने की खबरें मीडिया में आ रही हैं। यह खबर किसी भी सूरत में खुशी की नहीं हो सकती है। ना तो सिनेमा निर्माण से जुड़े लोगों के लिए और ना ही स्वयं कपूर खानदान के लिए। और तो और जो लोग सिनेमा से बाबस्ता हैं, वे भी इस खबर से गमगीन हैं। भारतीय सिनेमा का दस्तावेज है आरके स्टूडियो। कुछ दीवानों ने जो मशिवरा सोशल मीडिया में दिया है, उस पर सरकार को, खासतौर से महाराष्ट्र सरकार को गंभीर होना चाहिए। राज्य सरकार आरके स्टूडियो को अपने कब्जे में लेकर इसे सिनेमा म्यूजियम की सूरत में बदल दे। इस तरह से आरके स्टूडियो का वजूद भी बना रहेगा और नेशनल सिनेमा आर्कइव की सूरत भी मुकम्मल हो सकेगी। बहरहाल, बातें हैं बातों का क्या? जांच लेते हैं कि आरके स्टूडियो है क्या और किस तरह बना और आज वह अपने वजूद की लड़ाई किस तरह लड़ रहा है। आज हमारे बीच राज कपूर नहीं हैं। साल 1988 में राजकपूर ने दुनिया से विदाई ले ली। लेकिन मन बार बार कहता है कि आज वो होते तो ऐसा होता, वो होते तो वैसा होता लेकिन ऐसा और वैसा के बीच जो हो रहा है, वही हकीकत है।

आज भी राजकपूर और आरके स्टूडियो को अलग नहीं किया जा सकता। आलम यह था कि म्यूजिक की जो रॉयल्टी मिली उससे ही बरसात फिल्म की लागत मिल गई। फिल्म 'बरसात' को जो थिएटरिकल इंकम हुई उससे राजकपूर ने चेंबूर में 2.2 एकड़ की जमीन आरके स्टूडियो के लिए खरीदी।

आर के स्टूडियो की स्थापना भारत की आजादी के अगले वर्ष यानी 1948 में राज कपूर ने मुंबई के चेंबूर में की थी। आरके स्टूडियो में बनने वाली पहली फिल्म का नाम 'आग' था जो बॉक्स ऑफिस पर फ्लॉप रही थी। ये फिल्म 1948 यानी स्टूडियो बनने के साल ही बनी थी। इसके अगले साल आर के स्टूडियो प्रोडक्शंस की फिल्म बरसात आई जिसने बॉक्स ऑफिस पर धमाका कर दिया। इस फिल्म की सफलता के बाद आरके स्टूडियो का 'लोगो' बदला गया था। आर के स्टूडियो में बनी फिल्मों ने राजकपूर और नरगिस की जोड़ी को भारतीय सिनेमा की हिट जोड़ियों में से एक बनाया और एक के बाद एक 15 फिल्में बनीं जिनमें आवारा, श्री 420, बूट पॉलिश, जागते रहो चर्चित रहीं। इस स्टूडियो में ही बूट पोलिश, जागते रहो, अब दिल्ली दूर नहीं फिल्म का निर्माण हुआ। 1985 में बनी फिल्म 'राम तेरी गंगा मैली' राजकपूर की आखिरी फिल्म थी। आरके स्टूडियो के 'लोगो' की बात करें तो उसे किसी ने डिजाइन नहीं किया था। ये एक अचानक से आए आइडिया का नतीजा था। आरके फिल्म्स के बैनर तले जो पहली फिल्म सुपरहिट साबित हुई वो थी 'बरसात' इसलिए उस फिल्म के एक सीन को ही स्टूडियो का 'लोगो' बना दिया गया। इस लोगो में राजकपूर नरगिस को अपने हाथों में थामे हैं और कैपिटल लेटर्स में लिखे आरके के ऊपर

खड़े हैं।

आरके स्टुडियों का मिजाज ही गजब का होता था. बहुत से किस्से हैं लेकिन मैं एक किस्सा खास तौर पर शैलेंद्र का याद करूंगा. उन्हें राजकपूर ने एक कवि सम्मेलन में सुना था. तब उनकी कोई खास पहचान नहीं थी. वे इप्टा के लिए काम करते थे. और जागरूक क्रांति के मेंबर थे. उनका एक जोशिला क्रांतिकारी गाना बहुत मशहूर है- तू आदमी है तो आदमी की जीत पर यकीं कर अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला जमीन पर.

सुपरिचित फिल्मकार जयप्रकाश चौकसे न्यूज 18 के साथ मुलाकात में कहते हैं कि दरअसल आरके स्टूडियो राजकपूर का ड्रीम प्रोजेक्ट था। आज भी वहां एक अलग ही किस्म का स्पंदन है. आज भी राजकपूर और आरके स्टूडियो को अलग नहीं किया जा सकता। आलम यह था कि म्यूजिक की जो रॉयल्टी मिली उससे ही बरसात फिल्म की लागत मिल गई। फिल्म 'बरसात' को जो थिएटरिकल इंकम हुई उससे राजकपूर ने चेंबूर में 2.2 एकड़ की जमीन आरके स्टूडियो के लिए खरीदी। चेंबूर में जमीन खरीदने की वजह यह थी की उस समय वहां पहाड़ और हरियाली और वीरानी का माहौल था। राजकपूर ने ऐसे जांबाज जोश से भरे शैलेंद्र को आरके में काम करने का ऑफर दिया। लेकिन उन्होंने इनकार कर दिया। तब वे रेलवे में काम करते थे और शाम को इप्टा में सक्रिय थे। उनका एक जोशिला क्रांतिकारी गाना बहुत मशहूर है- तू आदमी है तो आदमी की जीत पर यकीं कर अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला जमीन पर। शैलेंद्र को तब फिल्मों में कोई रूचि नहीं थी। उन्होंने राजकपूर से कहा मेरे गीत फिल्मों के लिए नहीं है। इस पर राजकपूर ने उन्हें कहा-'कभी ऐसा लगे कि आप फिल्मों में काम करना चाहते हैं तो आरके स्टूडियो को याद रखिए।' राज कपूर के साथ पूरे स्टूडियो का माहौल खुशगवार हो जाता। आरके की पहचान ही यह जिंदादिली थी। जहां सब बराबरी से रहते। एक फैमिली की तरह पूरा माहौल होता। राजकपूर की मौजूदगी में जो रंगीनियां इस स्टूडियो में होती थी। उसकी कोई मिसाल आज नहीं दिखती। बड़े से बड़े कलाकार को मैंने राजकपूर के साथ काम करने की लालायित देखा है।

आरके स्टूडियो द्वारा राधू कर्माकर के डायरेक्शन में फिल्म 'जिस देश में गंगा बहती है' का निर्माण 1960 में किया गया था। राज कपूर फिल्म के प्रोड्यूसर होने के साथ-साथ उन्होंने इस फिल्म में अहम भूमिका भी निभाई थी। उनके अलावा इस फिल्म में प्राण और पद्मिनी भी लीड रोल में थे। इस फिल्म को बॉक्स ऑफिस पर अच्छा रिस्पॉन्स मिला और इसे फिल्म फेयर में बेस्ट फिल्म के अवॉर्ड से सम्मानित भी किया गया था। राज कपूर के निर्देशन में बनी फिल्म राम तेरी गंगा मैली 1985 में रिलीज हुई थी। यह शो मैन द्वारा निर्देशित आखिरी फिल्म थी। इस फिल्म ने बॉक्सऑफिस पर धूम मचा दी थी और 1985 में सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्म बनी। रविंद्र जैन को फिल्म में म्यूजिक के लिए फिल्म फेयर अवॉर्ड से सम्मानित किया गया था। 1982 में आरके फिल्म्स की विधवा विवाह का पक्ष लेती फिल्म प्रेम रोग का निर्देशन राज कपूर द्वारा किया गया था। बॉक्सऑफिस पर इसका प्रभाव छोड़ने वाली इस फिल्म को फिल्म फेयर का बेस्ट फिल्म अवार्ड भी मिला।

आरके स्टूडियो की कामयाबी की कहानी शायद ही कोई दोहरा पाए लेकिन आज वक्त के जिस मुकाम पर आरके स्टूडियो खड़ा है, वह पीड़ा देने वाला है। सिनेमा के लिए मील का पत्थर साबित हुई लेकिन वक्त और हालात का शिकार ये स्टूडियो आज बिकने जा रहा है। आज राजकपूर का परिवार इस स्टूडियो को बेचने के लिए मजबूर है। बीते साल स्टूडियो में लगी आग ने इसे काफी नुकसान पहुंचाया है। इसे बेचने का निर्णय राजकपूर के बेटे ऋषि कपूर के लिए भी आसान नहीं है। उन्होंने खुद कहा कि सीने पर पत्थर रखकर इसे बेचने का फैसला लिया गया है। गए साल की आगजनी के बाद जो नुकसान हुआ है, उसकी भरपाई के लिए काफी खर्च आएगा। इसे देखते हुए स्टूडियो को बेचने की कोशिश शुरू हो गई है।

ISSN 2231-0479

सिने विमर्श

'आयेगा आने वाला...' गीत से मशहूर हुईं लताजी

अनामिका
युवा पत्रकार, भोपाल

पूरी दुनिया लता की दीवानी है तो मध्यप्रदेश भी इस बात पर गौरव कर सकता है कि लता का जन्म देश के हृदयप्रदेश मध्यप्रदेश में हुआ। सिनेमाई दुनिया के साथ साथ अनेक क्षेत्रों में मध्यप्रदेश का डंका बजता रहा है लेकिन एक लता, एक प्रदीप और एक किशोर कुमार जैसे बहुप्रतिभा के धनी कलाकारों से मध्यप्रदेश का मस्तक ऊंचा हो उठता है। दशकों से कानों में मिसरी सी आवाज घोलती भारत रत्न लता मंगेशकर भारत के लिए सबसे बड़ी सौगात हैं। लता के पहले कोई नहीं हो सका है और शायद आने वाली सदी में लता बन सके। जब तक दुनिया रहेगी, उम्मीद होगी कि एक लता ही रहेगी। दशकों से भारतीय संगीत को अपनी आवाज से सम्पन्न बनाने वाली लता के खाते में सिर्फ और सिर्फ उपलब्धियां हैं। छह दशकों से भी ज्यादा सुरों से नवाजने वाली लता मंगेशकर ने 20 भाषाओं में 30,000 गाने गाये हैं। लता की आवाज सुनकर कभी किसी की आंखों में आंसू आए, तो कभी सीमा पर खड़े जवानों को सहारा मिला। स्वयं को पूर्णत: संगीत को समर्पित करने वाली लता की पहचान भारतीय सिनेमा में पार्श्व गायिका के रूप में है। लता जी फिल्म इंडस्ट्री की पहली महिला हैं जिन्हें भारत रत्न और दादा साहब फाल्के पुरस्कार प्राप्त हुआ। उनके अलावा सत्यजीत रे को ही यह गौरव प्राप्त है। वर्ष 1974 में लंदन के सुप्रसिद्ध रॉयल अल्बर्ट हॉल में उन्हें पहली भारतीय गायिका के रूप में गाने का अवसर प्राप्त है। सन् 1974 में दुनिया में सबसे अधिक गीत गाने का 'गिनीज बुक रिकॉर्ड' उनके नाम पर दर्ज है।

मध्यप्रदेश के सबसे बड़े व्यवसायिक शहर इंदौर में कुशल रंगमंचीय कलाकार और गायक दीनानाथ मंगेशकर के घर पर एक औसत कद काठी की लड़की कुमारी लता का जन्म 28 सितम्बर, 1929 हुआ था। दीनानाथ जी ने लता को पांच साल की उम्र में संगीत की तालीम देना शुरू कर दिया था। उनके साथ उनकी बहनें आशा, ऊषा और मीना भी संगीत सीखा करतीं थीं। ईश्वर के द्वारा दी गई सुरीली आवाज की मलिका लता अविश्वसनीय क्षमता का उदाहरण हैं। संगीत में रूचि रखने वाली लता को पांच वर्ष की अल्पायु में ही नाटक में अभिनय करने का अवसर मिला। शुरुआत अवश्य अभिनय से हुई किंतु आपकी दिलचस्पी तो संगीत में ही थी।

पिता नहीं चाहते थे कि लता फिल्मों के लिये गाए इसलिये इस गाने को फिल्म से निकाल दिया गया। लेकिन उसकी प्रतिभा से वसंत जोगलेकर काफी प्रभावित हुये।

लता बचपन से ही गायक बनना चाहती थीं। बचपन में कुन्दनलाल सहगल की फिल्म 'चंडीदास' देखकर उन्होंने कहा था कि वो बड़ी होकर सहगल से शादी करेगी। पहली बार लता ने वसंग जोगलेकर द्वारा निर्देशित एक फिल्म कीर्ती हसाल के लिये गाया। उनके पिता नहीं चाहते थे कि लता फिल्मों के लिये गाए इसलिये इस गाने को फिल्म से निकाल दिया गया। लेकिन उसकी प्रतिभा से वसंत जोगलेकर काफी प्रभावित हुये। पिता की मृत्यु के बाद (जब लता सिर्फ तेरह साल की थीं), लता को पैसों की बहुत किल्लत झेलनी पड़ी और काफी संघर्ष करना पड़ा। उन्हें अभिनय बहुत पसंद नहीं था लेकिन पिता की असामयिक मृत्यु की वजह से पैसों के लिये उन्हें कुछ

हिन्दी और मराठी फ़िल्मों में काम करना पड़ा। अभिनेत्री के रूप में उनकी पहली फिल्म पाहिली मंगलागौर (1942) रही, जिसमें उन्होंने स्नेह प्रभा प्रधान की छोटी बहन की भूमिका निभाई। बाद में उन्होंने कई फिल्मों में अभिनय किया जिनमें, माझे बाल, चिमुकला संसार (1943), गजभाऊ (1944), बड़ी मां (1945), जीवन यात्रा (1946), मांद (1948), छत्रपति शिवाजी (1952) शामिल थी। बड़ी माँ, में लता ने नूरजहां के साथ अभिनय किया और उसके छोटी बहन की भूमिका निभाई आशा ने। उन्होंने खुद की भूमिका के लिये गाने भी गाये और आशा के लिये पार्श्वगायन किया।

1945 में उस्ताद गुलाम हैदर (जिन्होंने पहले नूरजहां की खोज की थी) अपनी आने वाली फिल्म के लिये लता को एक निर्माता के स्टूडियो ले गये जिसमे कामिनी कौशल मुख्य भूमिका निभा रही थी। वे चाहते थे कि लता उस फिल्म के लिये पार्श्वगायन करे। लेकिन गुलाम हैदर को निराशा हाथ लगी। 1947 में वसंत जोगलेकर ने अपनी फिल्म 'आपकी सेवा में' में लता को गाने का मौका दिया। इस फिल्म के गानों से लता की खूब चर्चा हुई। इसके बाद लता ने मजबूर फिल्म के गानों 'अंग्रेजी छोरा चला गया' और 'दिल मेरा तोड़ा हाय मुझे कहीं का न छोड़ा तेरे प्यार ने' जैसे गानों से अपनी स्थिति सुदृढ़ की। हालांकि इसके बावजूद लता को उस खास हिट की अभी भी तलाश थी।

1949 में लता को ऐसा मौका फिल्म 'महल' के आयेगा आने वाला गीत से मिला। इस गीत को उस समय की सबसे खूबसूरत और चर्चित अभिनेत्री मधुबाला पर फिल्माया गया था। यह फिल्म अत्यंत सफल रही थी और लता तथा मधुबाला दोनों के लिये बहुत शुभ साबित हुई। इसके बाद लता ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

वर्ष 1942 में इनके पिता की मौत हो गई। 13 वर्ष अल्पायु में पिता का साया लता के सिर से उठ गया और इसके साथ ही वे अपने परिवार के प्रति जिम्मेदार हो गईं। लता मंगेशकर का पहला नाम हेमा था, मगर जन्म के 5 साल बाद माता-पिता ने इनका नाम लता रख दिया था। वे महज एक दिन के लिए स्कूल गई थीं। इसकी वजह यह रही कि जब वह पहले दिन अपनी छोटी बहन आशा को स्कूल लेकर गई तो अध्यापक ने आशा को यह कहकर स्कूल से निकाल दिया कि उन्हें भी स्कूल की फीस देनी होगी। बाद में लता ने निश्चय किया कि वह कभी स्कूल नहीं जाएंगीं। हालांकि बाद में उन्हें न्यूयॉर्क यूनिवर्सिटी सहित छह विश्वविद्यालयों में मानक उपाधि से नवाजा गया। गाने की रिकॉर्डिंग के लिये जाने से पहले लता मंगेशकर कमरे के बाहर अपनी चप्पलें उतारती हैं। वे हमेशा नंगे पांव गाना गाती हैं। लता जी को संगीत के अलावा खाना पकाने और फोटोग्राफी का शौक है।

नवयुग चित्रपट फिल्म कम्पनी के मालिक और इनके पिता के दोस्त मास्टर विनायक (विनायक दामोदर कर्नाटकी) ने इनके परिवार को संभाला और लता मंगेशकर को एक सिंगर और अभिनेत्री बनाने में मदद की। हालांकि सफलता की राह कभी भी आसान नहीं होती है। आरंभिक दिनों में कई संगीतकारों ने तो पतली आवाज के कारण काम देने से मना कर दिया था। उस समय की प्रसिद्ध पार्श्व गायिका नूरजहां के साथ लता की तुलना की जाती थी। धीरे-धीरे अपनी लगन और प्रतिभा के बल पर काम मिलने लगा। लता जी को सर्वाधिक गीत रिकार्ड करने का भी गौरव प्राप्त है। फिल्मी गीतों के अतिरिक्त आपने गैरफिल्मी गीत भी बहुत खूबी के साथ गाए हैं। अपने समय के सभी सुप्रसिद्ध संगीतकारों के साथ उन्होंने गीत गाए हैं। अनिल बिस्वास, सलिल चौधरी, शंकर जयकिशन, एस. डी. बर्मन, आर. डी. बर्मन, नौशाद, मदनमोहन, सी. रामचंद्र ने लताजी की प्रतिभा का लोहा माना।

युगल गीतों पर रॉयल्टी के भुगतान के मुद्दे पर लता मंगेशकर और मोहम्मद रफी के बीच मतभेद हो गए थे, जिसके बाद इन दोनों गायकों ने करीब तीन वर्ष तक साथ गाना नहीं गाया। मोहम्मद रफी की बहू यास्मिन खालीद रफी की किताब 'मोहम्मद रफी : मेरे अब्बा' एक संस्मरण में यह बात सामने आई थी।
सहज और सरल लता पर अपने सुनहरे काल के दौरान इंडस्ट्री में एकाधिकार स्थापित करने के कई आरोप लगे। कहा जाता है कि उन्होंने अपनी प्रसिद्धी के दौरान हिन्दी और मराठी भाषी किसी और गायिका को आगे नहीं बढ़ने दिया। उस समय हर म्यूजिक डायरेक्टर लता मंगेशकर के साथ काम करना चाहता था। लता और उनकी बहन आशा ही इस दौरान प्रड्यूसरों की लिस्ट का हिस्सा बनी रहीं।

लता को वैसे तो अब तक ढेरों अवॉर्ड्स से नवाजा जा चुका है, लेकिन एक खास अवॉर्ड, जो उन्होंने अपने नाम किया, वह था- नॉन-क्लासिकल सिंगर कैटिगरी में भारत रत्न अवॉर्ड। यह अवॉर्ड हासिल करने वालीं लता मंगेशकर भारत की दूसरी सिंगर बनीं। उनसे पहले यह अवॉर्ड एमएस सुब्बुलक्ष्मी को मिला था।

ISSN 2231-0479

शोध विमर्श

हिन्दी पत्रकारिता की संभावना और चुनौतियां

डॉ अल्पना सिंह
सहायक प्राध्यापक-हिन्दी विभाग
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, लखनऊ (उप्र)

प्रस्तावना : पत्रकारिता समाज में उच्चतम मूल्यों और आदर्शों की प्रतिष्ठा में सहायक होती है। इसे लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ कहा जाता है। भारत में पत्रकारिता का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना है। पुर्तगालियों नें इसे प्रारंभ किया था और सन् 1550 ईसवीं में पहला मुद्रणालय स्थापित किया गया था। किन्तु साहित्यिक पत्रकारिता का प्रारंभ हिन्दी के प्रथम साहित्यिक पत्र 'उदन्त मार्तंड' से माना जाता है। यह पत्र 30 मई 1826 ईसवीं में कलकत्ता से प्रकाशित हुआ था। भारत में उदन्त मार्तंड पत्र के प्रकाशन के साथ हिन्दी पत्रकारिता दिवस 30 मई को मनाया जाता है। एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि हिन्दी के पहले पत्र का प्रकाशन एक गैर हिन्दीभाषी राज्य में हुआ। तब से लेकर अब तक इस यात्रा में बहुत उतार चढ़ाव आये हैं। वर्तमान समय में हिन्दी की पत्र-पत्रिकाएं मात्र हिन्दी विषय तक ही सीमित नहीं हैं बल्कि उनके उद्देश्य व्यापक हो गये हैं। आज वह राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक और संस्कृतिक सरोकारों से गहनतम रूप से जुड़ी हुयी है। सामाजिक सरोकारों के साथ ही हिन्दी पत्रकारिता का स्वरूप बहुत कुछ बदला है। हिन्दी पत्रकारिता को आज यहां तक पहुंचाने में हिन्दी साहित्यकारों का भी बहुत बड़ा योगदान रहा है। हिन्दी पत्रकारिता से जुड़े लोगों ने स्वतंत्रता आंदोलन में जिस तरह की पत्रकारिता की थी वह आज की पीढ़ी के लिए भी मार्गदर्शक का काम करती है। स्वतंत्रता आंदोलन को हिन्दी पत्रकारिता ने नई दिशा दी थी।

विषय विस्तार : हिन्दी पत्रकारिता ने वर्तमान समय में पत्रकारिता के नए मानक तय किए हैं। आज के समय में यद्यपि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने हिन्दी पत्रकारिता को पहचान दी लेकिन तकनीकी विकास के साथ ही पत्रकारिता टेक्नालॉजी आधारित होने लगी। धीरे धीरे पत्रकारिता मानक स्वरूप परिवर्तित होता गया। संभवत: यही कारण है कि वर्तमान समय में मीडिया की विश्वसनीयता पर सवालिया निशान लगने लगे हैं। पत्रकारिता के आरंभिक काल में पत्रकारिता का अर्थ लेखन और प्रकाशन का था। समय बदला और तकनीकी विस्तार के साथ पत्रकारिता ने विस्तार पाया। श्रव्य और दृश्य माध्यमों का विकास हुआ और आज इसी बदलते परिवेश में हम इंटरनेट पत्रकारिता के युग में हैं। अब हमें पत्रिका क्रय करने के लिए दूर जाने की जरूरत नहीं और ना ही कीमत चुकाने की बल्कि हथेलियों पर रखे मोबाइल फोन पर ही हम ई-पत्रिका पढ़ सकते हैं। यह सुविधा तो हुई लेकिन सुविधा के साथ समस्या भी प्रकट होने लगी। छपे हुए अखबार और किताबें पढ़ने का जो सुख था, वह गुम हो गया है। साथ ही प्रकाशन संस्थाओं पर संकट टूट पड़ा है क्योंकि इनकी बिक्री ना होने से प्रकाशकों पर आर्थिक संकट प्रबल हो चला है। हालांकि प्रकाशन के साथ शुरू हुआ हिन्दी पत्रकारिता का यह सफर आज ब्रॉडकास्ट और वेबकॉस्टिंग की दुनिया तक पहुंच चुका है। देखने में यह विकास सहज और सुलभ हैं लेकिन इसने पत्रकारिता के समक्ष नयी चुनौतियां भी खड़ी की हैं। इस आपा-धापी में साहित्य का स्तर भी प्रभावित हुआ है। हिन्दी इंटरनेट जगत में 23 सितम्बर 1999 एक क्रांति दिवस के रूप में आया जब विश्व के पहले हिन्दी पोर्टल वेबदुनियाडॉटकॉम की शुरुआत हुई।

प्रत्येक युग की अपनी अलग दृष्टि होती है। महादेवी वर्मा ने एक बार कहा था कि 'पत्रकारों के पैरों के छालों से इतिहास लिखा जाता है'। यह पत्रकारिता का यथार्थ है और कटु सत्य भी है। हिन्दी पत्रकारिता की एक सुदीर्घ परम्परा रही है। इसमें समय समय पर विभिन्न मोड़ भी आए हैं।

हिन्दी इंटरनेट की प्रतीक्षा कर रहे भारतीयों के लिए यह विशेष उपलब्धि थी।

संचार क्रांति और सूचना के अधिकार के साथ ही उदारीकरण ने आज पत्रकारिता के स्वरुप को पूरी तरह से बदल दिया है। आज वह नए विचारों के वाहक के रूप में काम कर रही है। पत्रकारिता का उद्देश्य पाठकों को सिर्फ सूचना देना भर ही नहीं है बल्कि इसका दायित्व व्यक्ति को सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक रूप से जागरूक करना भी है। किसी भी समाज के सर्वांगीण विकास में पत्रकारिता का निष्पक्ष होना जरूरी है। यद्यपि आज के समय में यह सबसे कठिन काम हो गया है।

साहित्य का क्षेत्र अत्यंत व्यापक माना जाता है। साहित्य और पत्रकारिता का अटूट संबंध रहा है। वर्तमान समय में पत्रकारिता के माध्यम से ही समाज में नए मूल्य निर्मित किये जा रहे हैं। पुराने मानक खंडित हो रहे हैं, ज्ञान और विज्ञान के प्रसार में भी पत्रकारिता अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इस समय जबकि भाषाई अस्मिता का विवाद चरम पर है ऐसे समय में पत्रकारिता के निष्पक्ष योगदान की अपेक्षा समाज को है। हिन्दी की 'साहित्यिक पत्रकारिता चूंकि एक सांस्कृतिक विमर्श का माध्यम है, इसलिए वह कविता, कहानी या साहित्यिक निबंध छापकर खुश नहीं हो लेती, वह अपने समय से संवाद करती है और उन प्रश्नों पर गहरी बहस कराती है जो हमारे सामाजिक जीवन को सबसे अधिक प्रभावित करते है।'[1]

समय बदलने की साथ ही पत्रकारिता पर भू-मंडलीकरण का व्यापक प्रभाव पड़ा। 'व्यापक जनाकांक्षाओं और जन संघर्षों को लेकर चलने वाली यह हिन्दी पत्रकारिता आज इस मायनें में भी आश्वस्ति देती है कि भू-मंडलीकरण और बाजार के वैश्विक हमलों के बावजूद इसकी प्रतिरोधी क्षमता और सांस्कृतिक चेतना की उदग्रता में कोई कमी नहीं आई है। हिन्दी जिस तरह वंचित जनों की वाणी है और उसके संघर्षों की अभिव्यक्ति, उसी तरह उसकी साहित्यिक पत्रकारिता एक नई सामाजिक-आर्थिक तथा राजनीतिक प्रति संसार बनाने को प्रतिबद्ध एक आंदोलन, जिसमें समानता, समता, स्वत्व तथा आत्मनिर्भरता के आदर्शों की शक्ति है। हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता जैसी विविधता अन्यत्र नहीं है, बल्कि दुनिया की अनेक बड़ी भाषाएं भी इस प्रसंग में हिन्दी से बहुत पीछे हैं। हिन्दी के विशाल परिक्षेत्र में अनेक वैचारिक प्रतिबद्धताओं, दृष्टियों, संकल्पों और आदर्शों को लेकर जो सैकड़ों नियमित पत्रिकाएं निकल रही हैं, वे अपने आपमें हिन्दी की अद्वितीय सृजनात्मकता और हिन्दी जनों की अपरिमित निष्ठा का प्रमाण है।'[2]

घोर प्रतिस्पर्धा के इस समय में हिन्दी अखबारों को अब सूचना और मनोरंजन के स्तर से आगे बढ़ कर नए विकल्प की तलाश करनी होगी क्योंकि आज का पाठक 'ये दिल मांगे मोर' और 'कर लो दुनिया मुट्ठी में' के जमाने में जी रहा है। युवा पीढ़ी के पास हिन्दी पत्रिकाओं के पन्ने पलटने का भी समय नहीं रह गया है। उन्हें आकर्षित कर अपनी सूचनाओं/खबरों या विमर्शों से बांध कर रखना हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं के लिए बहुत बड़ी चुनौती बन गया है।

यह निर्विवाद है कि हिन्दी देश के बहुसंख्यक वर्ग की भाषा है इसी कारण उससे अधिक गंभीर सूचनाओं की अपेक्षा की जाती है। भाषा के विवाद के मध्य हमेशा उसकी तुलना अंग्रेजी से की जाती है। कदम-कदम पर उसकी बौद्धिकता को अंग्रेजी से कम कर के आंका जाता है। हिन्दी पत्रकारिता की एक बड़ी चुनौती आज अंग्रेजी के बरक्श खुद को न केवल सथापित करना है बल्कि अपने पाठक वर्ग को संतुष्ट भी करना है, कि वह बेहतर तरीके से उनकी मानसिक खुराक को पूरा करने में सक्षम है। हिन्दी के पास अंग्रेजी से कहीं ज्यादा बड़ा फलक और अनुभव हैं। हिन्दी पत्रकारिता बौद्धिक विमर्श से होने का आरोप पूर्णत: भ्रामक है क्योंकि सामाजिक आंदोलनों के साथ ही साहित्य में आने वाले विमर्शों को निष्पक्ष रूप से जनता/पाठक के सामने रखने का कार्य हिन्दी पत्रकारिता ने किया है। 'स्वतंत्रता पूर्व हिन्दी पत्रों नें राष्ट्रीय जीवनमें लगभग वही कार्य किया, जो फ्रांस की राज्यक्रांति में वहां के पत्रों ने सम्पन्न किया था।'[3]

'हंस', 'सारिका', 'चांद' आदि पत्रिकाएं इसका जीवंत प्रमाण हैं। दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, मुस्लिम महिला विमर्श आदि ऐसे ज्वलंत मुद्दे हैं, जिन्हें समकालीन हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं ने सबसे पहले सामने रखा। प्रश्न उठाने का और परिस्थितियों से संवाद करने का साहस हिन्दी पत्रकारिता के मूल में रहा है। साहस के साथ ही हिन्दी पत्रकारिता को यह गौरव प्राप्त है कि वह न सिर्फ इस देश की आजादी की लड़ाई का मूल स्वर बनी रही, बल्कि उसने हिन्दी को एक भाषा के रूप स्थापित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका उठाई है। राजा राममोहन राय, महात्मा गांधी, मौलाना अबुल कलाम आजाद, बाल गंगाधर तिलक, पंडित मदनमोहन मालवीय, बाबासाहब अम्बेडकर, धर्मवीर भारती, प्रेमचंद, यशपाल, आदि चिन्तक सीधे-सीधे तौर पर पत्र-पत्रिकाओं में लिख रहे थे। इन्हीं के लेखन का असर था जिनसे चेतना का संचार हो रहा था। उस समय होने वाले जन आंदोलनों को सफल बनाने में इनका बहुत बड़ा योगदान रहा। भारतीय राष्ट्रवाद और राष्ट्रवादी आंदोलन के विकास में समाचार पत्र कारगर हथियार का काम कर रहे थे। ब्रिटिश सरकार भारतीय राष्ट्रीयता की मांग पूरा नहीं करना चाहती थी इसलिए समाचार पत्रों पर अंकुश लगाए रखना चाहती थी। अंग्रेज सरकार को कई प्रेस एक्ट बनाने पड़े। इसी से यह सिद्ध होता है कि समाचार पत्र राष्ट्रीय आंदोलन के विकास में बहुत बड़ी भूमिका अदा कर रहे थे।

जब देश में राष्ट्रीय जागरण की लहर चल रही थी और एक के बाद एक बड़े आंदोलन की भूमिका तैयार हो रही थी, तब ऐसे समय में समाज को जोड़े रखना एक कठिन कार्य था। सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन की सफलता के पीछे बहुत बड़ा योगदान हिन्दी के पत्र-पत्रिकाओं का था। हिन्द केसरी, स्वराज, प्रताप, हंस, जागरण, माधुरी, विशाल भारत, मतवाला, धर्मयुग, कर्मवीर, स्वतंत्र, आज, आदि ने अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन किया। हिन्दू, आज, आर्यावर्त, सन्मार्ग, नवज्योति, हिन्दुस्तान, विश्वामित्र, नवभारत, स्वतंत्र भारत जैसे अनेक चर्चित हिन्दी दैनिक समाचार पत्रों ने जो भूमिका निभायी है उसे

ISSN 2231-0479

भुलाया नहीं जा सकता।

आचार्य हजारी प्रसाद दिवेदी नें लिखा है कि-'इस काल में हिन्दी में कुछ इतने महत्वपूर्ण पत्रकार पैदा हुए जो दीर्घकाल तक स्मरण किये जाएंगे। बौद्धिक प्रौढ़ता के साथ-साथ चरित्रगत दृढ़ता नें इन पत्रकारों को बड़ी सफलता दी।' हिन्दी पत्रकारों में हमेशा से एक बड़ा वर्ग ऐसा रहा है जिसने हमेशा सत्ता की गलत नीतियों के विरुद्ध विपक्ष की भूमिका निभाई। 'सचेतना' जैसी पत्रिकाओं ने आपातकाल में इतने दबाव के बाद भी सरकार की नीतियों की कड़े शब्दों में निंदा करते हुए सम्पादक ने लिखा था कि-'मै समझता हूं कि उन्नीस महीने के उस काले दौर में जो कुछ भी हुआ और उसमें लेखकों नें जो भूमिका निभाई उस पर लीपा-पोती करने, उसे जस्टिफाई करने, उसके लिए बहाने तलाशने या अपने कपड़ों पर पड़े हुए काले धब्बों को छिपाने के लिए दूसरों के कपड़ों पर धब्बे तलाशने की कोशिश न हमें गलतफहमी से कभी मुक्त होने देगी और न वास्तविकता का कभी साक्षात्कार करने देगी। आज की स्थिति निर्मम होकर आत्म-परीक्षण की है।'[4]

इस तरह के अनेक उदाहरण मिल जाएंगे जो इस बात की पुष्टि करते हैं कि हिन्दी पत्रकारिता ने समय-समय पर बेबाकी से सत्य के पक्ष में आवाज उठाई। यह भी उल्लेखनीय तथ्य है कि स्वतंत्रता संग्राम में देश के लिए संघर्ष करने वालों में पत्रकारों का योगदान किसी भी नेता से कम नहीं था। पत्रकारिता का इतिहास स्वतंत्रता आंदोलन का प्रमुख अंग है, जिसे अलग नहीं किया जा सकता। आज भू-मंडलीकरण के दौर में हिन्दी पत्रकारिता की चुनौतियां न सिर्फ बढ़ गई हैं बल्कि उनके संदर्भ भी बदल गए हैं। पत्रकारिता के नवाचारों के चलते हिन्दी के लिए कुछ मुश्किलें आ रही हैं किन्तु इन चुनौतियों को पीछे छोड़कर हिन्दी पत्रकारिता निरंतर आगे बढ़ रही है। यही कारण है कि वर्तमान समय में ऑनलाइन पत्र-पत्रिकाओं की संख्या निरंतर बढती जा रही है। यहां तक कि अब तो हिन्दी पत्रकारिता नें अंग्रेजी पत्रकारिता के दबदबे को खत्म कर दिया है।

आज हम सूचना क्रांति के जिस दौर में रह रहे हैं वहां सूचना ही शक्ति है। सूचना के साथ पाठक और प्रकाशक का रिश्ता विक्रेता और उपभोक्ता में परिवर्तित हो गया है। एक वर्ग जो अविलंब सूचना प्राप्त करना चाहता है और दूसरा वर्ग उससे भी जल्दी सूचना उपलब्ध करवा देना चाहता है, क्योंकि दोनों को बाजार में बने रहना है। तकनीकी विकास के परिणामस्वरूप जब से हिन्दी पत्रकारिता दृश्य और श्रव्य माध्यम के रूप में सामने आई है, उसकी चुनौती दूसरे किस्म की हो गई है।'आजादी के बाद साक्षरता बढ़ी। अखबार बड़े उद्योग के रूप में परिवर्तित होने लगे। इस समय केवल दो संभावनाएं थीं-लाभ के लिए चलाया जाए या केवल लाभ के बजाय सामाजिक हित पर ज्यादा ध्यान दिया जाए। उस समय जिन लोगों नें दैनिक पत्र संचालित किये, उनमें से कई ऐसे लोग थे, जो आर्थिक लाभ के पीछे नहीं थे। जो नई मानसिकता और नए राष्ट्र के निर्माण में अपना योगदान देना चाहते थे। उसके बाद अखबार उद्योग की सफ्लता देखकर एक ऐसा वर्ग भी आया जिसके लिए सामाजिक हित या पत्रकारिता के लिए आवश्यक वस्तुनिष्ठता, सामाजिक परिवर्तन उतना महत्वपूर्ण नहीं रह गया था। उनके लिए अखबार के माध्यम से आर्थिक लाभ उठाना और राजनीतिक शक्ति संचित करना ज्यादा महत्वपूर्ण हो गए थे।'[5]

हिन्दी पत्रकारिता अपने उद्भव से लेकर वर्तमान समय तक सदैव विविध चुनौतियों से घिरी रही। स्वतंत्रता संग्राम में लोहा लेने से लेकर आपातकाल में सत्ता से टकराने तक का एक लम्बा इतिहास रहा है जहां वह अडिग होकर अपने ध्येय की और निरंतर बढती रही। आपातकाल की अमानवीयता के विरुद्ध जितनी उग्र प्रतिक्रियाएं तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं में दर्ज हैं उतनी उन दिनों की संसदीय बहसों में भी नहीं दिखाई देती। इस बीच साहित्य तथा संस्कृति के क्षेत्र में आंदोलनों और बहसों को जगह देकर हिन्दी पत्रकारिता नें अपनी उस प्रतिरोधी दृष्टि का परिचय दिया था जिसे उसने अपने उद्भव काल से अर्जित किया था। इस दौर में भी हम पाते हैं कि स्वस्थ सर्जनात्मकता का विकास हो या जनोन्मुखी दृष्टि के साथ सामाजिक-सांस्कृतिक प्रश्नों पर गहरा विमर्श हो, हिन्दी पत्रकारिता नें अपने कर्तव्यों का सफलतापूर्वक निर्वाह किया।'[6]

चुनौतियां हर युग में रहती हैं बस उनका स्वरूप ही परिवर्तित होता रहता है। प्रत्येक युग की अपनी अलग दृष्टि होती है। महादेवी वर्मा ने एक बार कहा था कि 'पत्रकारों के पैरों के छालों से इतिहास लिखा जाता है'। यह पत्रकारिता का यथार्थ है और कटु सत्य भी है। हिन्दी पत्रकारिता की एक सुदीर्घ परम्परा रही है। इसमें समय समय पर विभिन्न मोड़ भी आए हैं।'पत्रकारिता निरंतर विकसित होती रही है, उसके विकास की कहानी जहां अनेक विरोध और संघर्षों से युक्त है, वहीं पत्रकारों के निष्ठापूर्ण आचरण और सतत श्रम की भी पोषिका है।'[7]

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि आज हम जिन स्थितियों से गुजर रहे हैं, वह पत्रकारिता के संदर्भ में विशिष्ट और रेखांकित करने योग्य है। हिन्दी पत्रकारिता का ओज हमेशा से समाज को अन्याय और अत्याचार के विरूद्ध ताकत मिलती रही है तो सूचना, शिक्षा और मनोरंजन के निहितउद्देश्यों को पूर्ण करती रही है।

संदर्भ-

1. जोशी ज्योतिष, साहित्यिक पत्रकारिता, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.-138
2. वही, पृ.-8
3. दीक्षित डॉ. सूर्यप्रकाश, हिन्दी साहित्येतिहास की भूमिका, भाग-3, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखन, पृ.-730
4. संचेतना, मार्च-1977, पृ0-7
5. भारती डॉ. धर्मवीर, लोकमत समाचार, (साक्षात्कार) 14 जनवरी 1989, पृ0-18
6. साहित्यिक पत्रकारिता, वही, पृ.-157
7. जोशी डॉ. सुशीला, हिन्दी पत्रकारिता : विकास और विविध आयाम, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृ.-37

शोध विमर्श

टेलीविजन ब्रॉडकास्टर्स द्वारा न्यू मीडिया का उपयोग

(भारत के पांच प्रमुख राष्ट्रीय हिन्दी न्यूज चैनलों का अध्ययन)

दिनेश कुमार राय
पीएचडी (मीडिया) शोधार्थी
माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल (मध्यप्रदेश)

शोध संक्षेप : सूचना की नई तकनीकों ने हमारे पुराने माध्यमों को धुंधला कर दिया है। पारम्परिक रूप से पहले हमें समाचार पत्र, रेडियो और टेलीविजन के माध्यम से ही सूचनाएं या खबरें मिलती थी। टेलीविजन को समाचारों का सशक्त माध्यम भी माना जाता था। न्यू मीडिया के आ जाने से टेलीविजन की चमक थोड़ी फीकी पड़ी है। न्यू मीडिया, टेलीविजन ही नहीं दूसरे मीडिया के दर्शकों को भी अपनी और आकर्षित कर रहा है। न्यू मीडिया ने थोड़े से समय में असाधारण विस्तार पाया है। इसे टेलीविजन के प्रतिद्वंदी के रूप में भी देखा जा रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र के द्वारा हम जानने की कोशिश करेंगे कि टेलीविजन अपने परम्परागत प्रसारण के साथ-साथ न्यू मीडिया का उपयोग कर रहे है या नहीं। यदि टेलीविजन समाचार सामग्री को दर्शकों तक पहुंचने न्यू मीडिया का उपयोग कर रहे हैं -तो इस की क्या वजह है और इसके लिए किन-किन प्लेटफॉर्म का उपयोग किया जा रहा है।

कीवर्ड : न्यूज चैनल, न्यू मीडिया, समाचार सामग्री, पहुंच, लोकप्रियता ।

प्रस्तावना : मनुष्य के जीवन का विकास बहुत तेजी से हो रहा है। इसके साथ साथ उसकी दिनचर्या भी बहुत वयस्त होती जा रही है। मनुष्य अपने गंतव्य पर पहुंचने के लिए या और किसी काम के लिए हमेशा जल्दबाजी में प्रतीत होता है। ऐसा लग रहा है जैसे किसी के पास समय नहीं है। इसके लिए भी समय नहीं है कि वह घर में आराम से बैठकर टीवी देख सके और समाचार सुन सके। अगर हम 10 या 20 साल पहले की तश्वीर देखें तो तकनीक ने हमारे जीवन के लगभग सभी क्षेत्र में बदलाव ला दिया है। आज इंटरनेट का विश्वव्यापी उपयोग दिन व दिन बढ़ रहा है। 'इंटरनेट उपयोग कर्ताओं की संख्या मे चीन के बाद भारत दूसरे नंबर पर आता है। जून 2018 तक संख्या 5000 लाख तक पहुंचने का अनुमान है। दिसम्बर 2017 मे भारत में 4810 लाख उपयोगकर्ता थे, जो पिछले साल यानि 2016 से लगभग 11% बढ़े।'[1] इस इंटरनेट क्रांति का असर पारम्परिक मीडिया (समाचार) उद्योगों पर भी पड़ा। आजकल लोग समाचारों के लिए टेलीविजन के आलावा न्यू मीडिया प्लेटफॉर्म का भी उपयोग कर रहे हैं और न्यूज चैनल ब्रॉडकास्टर्स भी विभिन्न प्लेटफॉर्मो पर न्यूज उपलब्ध करने का हरसंभव प्रयास कर रहे हैं। अर्थात कुल मिलाकर हम कह सकते हैं कि तकनीकी बदलाव ने परम्परागत स्वरूप को बदल दिया है।

अगले पांच वर्षों में, स्मार्ट फोन का हिस्सा 30 प्रतिशत से 62 प्रतिशत तक दोगुना हो जाएगा जबकि व्यक्तिगत कम्प्यूटर, नोटबुक और टैबलेट एक साथ कुल 22 प्रतिशत बाजार होगा।

2007 में फिक्की पीडब्ल्यूसी मीडिया और मनोरंजन उद्योग की रिपोर्ट ने मीडिया उद्योग के परिप्रेक्ष्य में convergence (अभिसरण) शब्द को परिभाषित और वर्णित किया-'एक अभिसरण आधारभूत संरचना उपयोगकर्ताओं और सामग्री के बीच कई प्रकार के इंटरैक्शन मोड का समर्थन करती है। इसके अलावा, आईपी के खुले परिवहन और इंटरफेस प्रोटोकॉल का मतलब है कि सामग्री तक पहुंचने के लिए काफी हद तक नेटवर्क और डिवाइस स्वतंत्र हो गए हैं । मूल रूप से,

ISSN 2231-0479

अभिसरण किसी भी मीडिया-आधारित उद्योग की द्वि-चरणीय प्रक्रिया को प्रभावित करता है, सामग्री निर्माण और परिवहन को। पहले चरण में माध्यम के लिए सामग्री का चयन, पैकेजिंग और एन्कोडिंग शामिल है। दूसरा चरण सामग्री को अपने गंतव्य तक स्थानांतरित करता है और फिर इसे उपयोग के लिए डी-कोड करता है। ज्यादातर मामलों में, यह दूसरा कदम है जो एक विशेष मीडिया बाजार को परिभाषित करता है, जो पहले चरण में सामग्री द्वारा किए गए फॉर्म को प्रभावित करता है। सामग्री मालिक अभिसरण और अभिसरण के लाभार्थी दोनों हैं। वे किसी भी एक्सेस डिवाइस और नेटवर्क के माध्यम से डिजिटल प्रारूप में उपभोक्ताओं को उनके कंटेंट लाइब्रेरियों की पेशकश करके संभावित मीडिया अनुभवों को संभव बनाते हैं। वे उपभोक्ताओं की सेवा करके अभिसरण से लाभान्वित होते हैं 'उचित वितरण और व्यावसायिक मॉडल न्यू मीडिया की जरूरत है।'[3]

वहीं ब्रायन नीस ने 'न्यू मीडिया' को परिभाषित करते हुए कहा है कि- 'कम्प्यूटर और इंटरनेट का लाभ लेने वाली डिजिटल प्रौद्योगिकियों ने उत्पादों और सेवाओं को जन्म दिया है, जो जानकारी या मनोरंजन प्रदान करते हैं। सोशल मीडिया, ब्लॉग, वीडियो गेम और ऑनलाइन न्यूज आउटलेट को आमतौर पर 'न्यू मीडिया' के रूप में जाना जाता है। संचार के इन माध्यमों से व्यवसाय, राजनीति सहित समाज पर दूरगामी प्रभाव पड़ता है।'[4]

न्यू मीडिया टी.वी. ब्रॉडकास्टर के लिए अपनी पहुंच और दर्शक संख्या बढ़ाने के साथ साथ अतरिक्त पैसे कमाने का साधन भी है। वे अपनी वेबसाइट और मोबाइल एप्लीकेशन पर आने बाले विज्ञापनों द्वारा आय में अतरिक्त वृद्धि करते हैं। डिजिटल जर्नलिज्म के शुरूआती दौर में समाचार चैनलों ने स्वयं की वेबसाइट बनाई थी, उसका उद्देश्य वैकल्पिक तरीके से पैसा कमाने की वजह वेब की नई विकसित दुनिया पर अपनी मौजूदगी में विस्तार करना था। पहले वेबसाइट नॉन-इंटेररेक्टिवे भी थी। डिजिटल न्यूज पेपर की तरह एक ही बार अपडेट होती थी। अब प्रौद्योगिकी बहुत तेजी से बदल रही है और न्यू मीडिया के विकसित प्लेटफॉर्मो पर समाचार सामग्री प्रेषित करने के तरीके भी बदल रहे हैं ।

साहित्य समीक्षा : 'फिर यह हाइब्रिड दुनिया उभर रही है जहां इंटरनेट, मोबाइल, टेलीविजन और यहां तक कि समाचार पत्र एक-दूसरे के क्षेत्रों को पार कर रहे हैं और नया और अभी तक अज्ञात व्यवसाय बना रहे हैं। इन्हें कभी-कभी, न्यू मीडिया के रूप में, संक्षेप में संदर्भित किया जाता है।'[5]

'न्यू मीडिया ने न्यूज जर्नलिज्म की प्रक्रिया को गहराई से प्रभावित किया गया है, उपलब्ध प्रौद्योगिकी न केवल अपने संग्रहकर्ताओं और इसके सम्पादकों और वितरकों के लिए बल्कि उपभोक्ताओं और उनके उपभोग के तरीकों के लिए भी।'[6]

'इंटरनेट की बढ़ती लोकप्रियता के साथ, केवल प्रिंट या टीवी न्यूजरूम के दिन चले गए हैं। मीडिया कम्पनियों को अब संस्करण की खबरों की रिपोर्ट करने के लिए शाम या कल तक की प्रतीक्षा नहीं करनी है। लगभग सभी मीडिया आउटलेट अपनी वेबसाइटों पर ब्रेकिंग न्यूज दे रहे हैं, और समाचार चक्र 24×7 बन गया हैं।'[7]

'टेलीविजन समाचार प्रदाताओं ने अभी तक इस बदलते माहौल में अपनी जगह नहीं खोजी है। यदि वे प्रयास नहीं करते हैं, तो वे अपरिहार्यता का जोखिम उठाते हैं। और दर्शकों के साथ सम्पर्क खोने से टेलीविजन समाचारों का पत्रकारिता मिशन कमजोर हो जाएगा, साथ ही व्यापारिक व्यवसाय मॉडल और सार्वजनिक सेवा औचित्य इसे वित्त पोषित करने के लिए भी कमजोर होगा। 1990 और 2000 के दशक में केबल और उपग्रह मल्टीचैनल टेलीविजन के उदय से प्रेरित 'पोस्ट-प्रसारण लोकतंत्र' की ओर बढ़ने से अब 'पोस्ट-टेलीविजन लोकतंत्र' की ओर इशारा हो सकता है डिजिटल मीडिया समाचार के सबसे महत्वपूर्ण स्रोतों के रूप में टेलीविजन से आगे निकलने के लिए ट्रैक पर हैं।'[8]

लगभग 70 प्रतिशत वयस्क अमेरिकन्स अब इंटरनेट का उपयोग करते हैं, उनमें से लगभग 970 लाख समाचार के लिए ऑनलाइन जाते हैं, और ये संख्या नियमित रूप से बढ़ रही हैं। अमेरिकियों की इंटरनेट पर निर्भरता पिछले कुछ वर्षों में कुल मिलाकर दोगुना हो गई है।'[9]

'पिछले 2-3 वर्षों की पुरानी शैली में स्थापित, मास मीडिया कम्पनियों ने इंटरनेट पर ध्यान देना शुरू कर दिया है। वे ऐसा कर सकते हैं क्योंकि विज्ञापनदाता इसकी मांग कर रहे हैं, या क्योंकि नेट उनका राजस्व खा रहा है या क्योंकि निवेशक इंटरनेट ब्रांड के लिए बेहतर मूल्यांकन प्रदान करते हैं। जो कुछ भी उनके कारण हैं, नेट विकास योजनाओं का एक प्रमुख हिस्सा बन रहा है। इंटरनेट ने लगभग हर मीडिया पर खर्च किए गए समय के हिस्से को खाया है-अधिकांशत: समाचार पत्र का।'[10]

अमेरिकी सामग्री की सबसे हालिया रिपोर्ट में नेटवर्क टेलीविजन विज्ञापन राजस्व में कमी आई है, लेकिन ऑनलाइन और मोबाइल प्लेटफॉर्म से आने वाले राजस्व के लिए 21 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाती है।'[11] फिक्की केपीएमजी रिपोर्ट 2013 के अनुसार, पूरे इंटरनेट सक्षम बाजार में, अगले पांच वर्षों में, स्मार्ट फोन का हिस्सा 30 प्रतिशत से 62 प्रतिशत तक दोगुना हो जाएगा जबकि व्यक्तिगत कम्प्यूटर, नोटबुक और टैबलेट एक साथ कुल 22 प्रतिशत बाजार होगा। आज के समाचार संगठन एक विविध और भीड़ वाले समाचार बाजार में समाचार प्रस्तुत करते हैं जो वैकल्पिक समाचार साइटों की एक विस्तृत श्रृंखला को इंगित करता है जो दर्शकों के बीच तेजी से लोकप्रिय और विश्वसनीय हो रहे हैं। जैसे -हफिंगटन

पोस्ट, ओपन डेमोक्रेसी, और इंडी मीडिया।'[12]

ऑनलाइन पाए गए अधिकांश सामग्री मॉस मीडिया में समान रूप में उपलब्ध है। पारम्परिक मॉस मीडिया के सहयोग के बिना इंटरनेट पर प्रकाशन करके प्रसिद्धि प्राप्त करना आसान नहीं है। उदाहरण के लिए, टेलीविजन पर समाचार प्रसारण किया जाता है और इंटरनेट पर भी अपलोड किया जाता है और वीडियो स्ट्रीमिंग के माध्यम से उपलब्ध होता है।'[13]

'विज्ञापनदाता कम्पनियों द्वारा 2001 से 2012 तक विभिन्न मीडिया पर किया गया खर्च देखें तो टीवी के मुकाबले इंटरनेट या डिजिटल मीडिया का वृद्धि प्रतिशत काफी अधिक है। टीवी मीडिया का 2001 में 456400 लाख से बढ़कर 2012 में 1248000 लाख होता है जो कि 173.4 प्रतिशत वृद्धि है वही इंटरनेट का 2001 में 3000 लाख से बढ़कर 2012 में 217000 लाख होता है जोकि 7133 प्रतिशत वृद्धि है। इसी तरह से अगर हम 2008 से 2012 टीवी और इंटरनेट की पहुंच की वृद्धि तुलना करते हैं तो इंटरनेट की ज्यादा है टीवी की 22.3 प्रतिशत तो वही इंटरनेट की 144.5 प्रतिशत है।'[14]

शोध के उद्देश्य : प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य यह है कि न्यूज चैनल समाचार सामग्री वितरित करने के लिए पारम्परिक टीवी प्रसारण प्रक्रिया के अलावा आधुनिक मीडिया के किन-किन साधनों का उपयोग कर रहे हैं। इसके लिए राष्ट्रीय हिन्दी न्यूज चैनलों का अध्ययन करना है। इस मुख्य उद्देश्य की पूर्ति करने के लिए सहायक उद्देश्य निम्न हैं :

1. न्यूज चैनल्स द्वारा समाचार सामग्री वितरित करने के लिए विभिन्न आधुनिक माध्यमों के उपयोग का अध्ययन।
2. न्यूज चैनलों द्वारा न्यू मीडिया प्लेटफॉर्म पर भी समाचार सामग्री वितरित करने के कारणों का अध्ययन।

शोध प्रविधि : शोध अध्ययन के अंतर्गत भारत के पांच प्रमुख राष्ट्रीय हिन्दी न्यूज चैनल्स(टीआरपी के आधार पर) को लिया गया है और इसके अलावा सेकंडरी डाटा का प्रयोग किया गया है। इन डाटा के स्रोत के रूप में पाठ्य पुस्तकों, शोध पत्र, समाचार पत्र-पत्रिका और वेबसाइटस इत्यादि का प्रयोग किया गया है।

विश्लेषण : संदर्भो का अवलोकन करते हैं तो पाते हैं कि जो दर्शक हैं वह समाचारों के लिए धीरे-धीरे न्यूज चैनल्स के अलावा, न्यू मीडिया यानि वेबसाइटस, मोबाइल एप्लीकेशन्स आदि की तरफ रुख कर रहे हैं। पहले समाचारों के लिए समाचार पत्र, रेडिओ, या टेलीविजन पर निर्भर रहना पड़ता था। टेलीविजन देख पाना आज भी हर कहीं संभव नहीं है। इंटरनेट की क्रांति के बाद संभव हुआ है कि हम चाहे कहीं भी हो घर पर, ऑफिस में या रोड पर समाचार देख या सुन सकते हैं। आज टीवी देखने के लिए समय के अभाव के कारण दर्शक डिजिटल प्लेटफॉर्म की तरफ रुख कर रहे हैं। संदर्भों में देखा गया है की टीवी के दर्शकों की सालाना वृद्धि का अनुपात इंटनेट से काफी कम है। हम कह सकते है कि इंटरनेट ने दूसरे मीडिया के दर्शकों को अपनी और खींच लिया है और खींचता चला जा रहा है। न्यू मीडिया पर अच्छे विकल्प मिलते हैं। टीवी पर विकल्पों का अभाव होता है, जो टेलीकास्ट होता है वहीं देखना पड़ता है। विज्ञापनप्रदाता कम्पनियों ने भी डिजिटल मीडिया की तरफ रुख कर लिया है। विज्ञापनप्रदाता कम्पनियों द्वारा विज्ञापन के लिए खर्च की सालाना वृद्धि दर टीवी के मुकाबले इंटरनेट की ज्यादा है। इसी बदलाव के कारण मास मीडिया कम्पनियां या न्यूज चैनल्स को भी न्यू मीडिया प्लेटफॉर्म की ओर ध्यान देना पड़ा। वे टीवी के अलावा प्लेटफॉर्म पर समाचार सामग्री उपलब्ध करा कर अपनी लोकप्रियता और पहुंच कायम रख सकते हैं और विज्ञापनों के द्वारा अतिरिक्त पैसा भी कमा सकते हैं। 'आज तक' टीआरपी के हिसाब से नम्बर वन राष्ट्रीय हिन्दी न्यूज चैनल माना जाता है, मतलब सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल। नंबर वन होने के बावजूद आज तक न्यूज चैनल ने अपना वर्चश्व बनाये रखने के लिए न्यू मीडिया के विभिन्न माध्यमों पर भी समाचार सामग्री उपलब्ध करता है। आज तक चैनल की aajtak.com के नाम से वेबसाइट है, जहां पर चैनल पर प्रसारित होने वाली सभी खबरें पढ़ सकते हैं और उन से संबंधित फोटो और वीडियो भी देख सकते हैं। वेबसाइट पर चैनल से ज्यादा समाचार सामग्री उपलब्ध होती है। जिन खबरों को चैनल पर प्रसारण के लिए समय नहीं मिल पाता या प्रसारण की समय सीमा की वजह से छूट जाती हैं, उनको वेबसाइट नया माध्यम मिल जाता है जिससे संवाददाता की मेहनत भी बेकार नहीं जाती हैं। वेबसाइट पर खबरें वर्गीकृत रूप में होती हैं जैसे- ब्रेकिंग न्यूज, करंट अफेयर्स, राजनीति, अपराध, खेल, सिनेमा आदि जिससे ढूंढने में भी परेशानी नहीं होती। अगर आप आज तक चैनल लाइव देखना चाहें तो उसका भी लिंक वेबसाइट पर उपलब्ध है। यूट्यूब पर भी आज तक चैनल लाइव देख सकते हैं। स्मार्ट फोन यूजर को टारगेट करने के लिए आज तक मोबाइल ऐप है। चैनल दर्शकों को अलर्ट की सुविधा भी देते हैं जिससे बड़ी खबरों या ब्रेकिंग न्यूज के अलर्ट से कोई भी बड़ी खबर की जानकारी तत्काल मिल जाती है। साथ ही साथ डिजिटल मीडिया पर विज्ञापन द्वारा अतिरिक्त कमाई भी कर सकता है या कर रहा है।

न्यू मीडिया के कई प्लेटफॉर्म पर आज तक चैनल की तरह बाकि चैनल्स इंडिया टीवी, जी न्यूज, न्यूज18इंडिया, और एबीपी न्यूज भी उपलब्ध हैं और अपनी पहुंच और लोकप्रियता बनाये हुए हैं। इनसे इन्हें अतिरिक्त कमाई भी हो रही है। प्रोद्योगिकी के बदलते युग में जिस तरह से समाचारों के प्रेषण का तरीका बदला है, उसी तरह से न्यूज चैनल्स ने भी न्यू मीडिया के द्वारा अपना दायरा बढ़ाया है। इसे समय के साथ कदमताल करना कह

ISSN 2231-0479

	न्यू मीडिया प्लेटफॉर्म			
न्यूज चैनल	वेबसाइट	लाइव टी.वी.	मोबाइल एप्लीकेशन	अन्य
आज तक	aajtak.intoday.in/	aajtak.intoday.in/livetv.html	Aaj Tak News App.	fb, twitteryoutube,etc.
इंडिया टीवी	indiatvnews.com/	www.indiatvnews.com/livetv	India TV News App.	fb,twitter, youtube, etc
जी न्यूज	zeenews.india.com/	zeenews.india.com/live-tv	Zee News Live App.	fb,twitter,youtube, etc
न्यूज18 इंडिया	hindi.news18.com/	news18.com/live-tv	News18 App.	fb,twitter,youtube, etc
एपीबी न्यूज	abpnews.abplive.in	abpnews.abplive.in/live-tv	ABPlive News App.	fb,twitter,youtube, etc

fb-Facebook App-Application

सकते हैं क्योंकि समय के साथ बदलाव करते रहना जरूरी होता है, नहीं तो पीछे छूट जाएंगे।

निष्कर्ष और सुझाव : न्यू मीडिया में विविधता होने के कारण भविष्य के विकास की अपार संभावना है। टेलीविजन और इंटरनेट के दर्शकों का अंतर कम हो रह हैं तो टेलीविजन ब्रॉडकास्टर्स को अपने दर्शकों के स्वाद और वरीयता का ध्यान रखना होगा। मौजूदा प्रसारण कम्पनियां जो न्यू मीडिया का उपयोग कर रही हैं उन्होंने इस माध्यम का उपयोग करने बालों के बीच में अपनी पहुंच और लोकप्रियता बढ़ाई है। ये कम्पनियां उनसे मुंह नहीं मोड़ सकतीं क्योंकि ये बहुत बड़ा वर्ग है और इन कम्पनियों के लिए न्यू मीडिया भी आय का विश्वसनीय माध्यम है। जो ब्रॉडकास्टर पहले से ही न्यू मीडिया का उपयोग कर रहे हैं उनके लिए तो ठीक है लेकिन जिन्होंने ने अभी तक समाचार सामग्री प्रेषण के लिए न्यू मीडिया का भी उपयोग नहीं किया है वो भविष्य में हाशिए पर जा सकते हैं। ऐसे टेलीविजन ब्रॉडकास्टर के लिए सलाह है कि वे भी न्यू मीडिया में निवेश करें, क्योंकि ये पहुंच और लोकप्रियता के साथ-साथ आय का भी विश्वसनीय माध्यम बनता जा रहा है। कुछ ब्रॉडकास्टर कम्पनियों ने इसके के लिए अलग से कम्पनी बनाई है जो इस माध्यम पर किस तरह से उपलब्ध रहना है उसकी अच्छी रणनीति बना सके, जैसे - इंडिया टुडे ग्रुप ऑनलाइन, एनडीटीवी कन्वर्जेंस।

संदर्भ :

1. Arora R. (w®vw). Web Journalism. New Delhi: Arise Publishers & Distributors
2. Bivens, R. (w®vy). Digital currents how technology and the public are shaping the tv news. Toronto: University of Toronto Press.
3. Friend, C., & Singer, J. B. (w®®|). Online journalism ethics: Traditions and transitions. New York: M.E. Sharpe.
4. FICCI PriceWaterHouseCoopers (w®®|), A Growth Story Unfolds, Indian Media and Entertainment Industry Report.
5. FICCI KPMG (w®vx), The Power of a Billion, Realizing The Indian Dream, Indian Media and Entertainment Industry Report
6. Kohli, V. (w®v®). The Indian media business. New Delhi: Response Books.
7. Kohli, V. (w®vx). The Indian media business. New Delhi: Response Books.
8. Lee-Wright, P.(w®v®).Culture Shock:New Media and organisational change in the BBC in N. Fenton (ed.) New Media, Old News: Journalism and Democracy in the Digital Age, London: Sage, pp. |v-}{
9. Mc Quail, D.(w®®z). Mass Communication Theory. New Delhi:Vistaar Publication
10. v®. Neese, B. (w®v{, February vz). What Is New Media? Retrieved from https://online.seu.edu/what-is-new-media/
11. Nielsen, R. K., & Sambrook, R. (w®v{). Whats happening to television news?: Digital news project w®v{. O&ford: Reuters Institute for the Study of Journalism, University of O&ford.
12. Trends w®vw. (w®vw). Washington, DC: Pew Research Center.
13. IAMAI & Kantar IMRBI. w®v}. wz May w®v} http://www.iamai.in/node/z®®}
14. The Times of India/Bosiness.w®v}. w~ May w®v} <https://timesofindia.indiatimes.com/business/india-business/mobile-internet-users-in-india-seen-at-y|}-million-by-june-iamai/articleshow/{xzxx}{®.cms

बौनी हो रही पत्रकारिता में एक कद का उठ जाना

ओम थानवी

कुलदीप नैयर का जाना पत्रकारिता में सन्नाटे की खबर है। छापे की दुनिया में वे सदा मुखर आवाज रहे। इमरजेंसी में उन्हें इंदिरा गांधी ने बिना मुकदमे के ही धर लिया था। इंदिरा गांधी के कार्यालय में अधिकारी रहे बिशन टंडन ने अपनी डायरी में लिखा है- 'उन दिनों किसी के लिए यह साहस जुटा पाना मुश्किल था कि वह कुलदीप नैयर के साथ बैठकर चाय पी आए!' कहना न होगा कि वे सरकार की नींद उड़ाने वाले पत्रकार थे। आज ऐसे पत्रकार उंगलियों पर गिने जा सकते हैं, जिनसे सत्ताधारी इस कदर छड़क खाते हों। इसलिए उनका जाना सन्नाटे के और पसरने की खबर है। कुलदीप नैयर का जन्म उसी सियालकोट में हुआ था, जहां के फैज अहमद फैज थे। बंटवारे के बाद कुलदीप नैयर पहले अमृतसर, फिर सदा के लिए दिल्ली आ बसे। मिर्जा गालिब के मोहल्ले बल्लीमारान में उन्होंने शाम को निकलने वाले उर्दू अखबार 'अंजाम' (अंत) से अपनी पत्रकारिता शुरू की। वे कहते थे, 'मेरा आगाज (आरंभ) ही अंजाम (अंत) से हुआ है!' बाद में महान शायर हसरत मोहानी की सलाह पर- कि उर्दू का भारत में कोई भविष्य नहीं, वे अंग्रेजी पत्रकारिता की ओर मुड़ गए। पढ़ने अमेरिका गए। फीस जोड़ने के लिए वहां घास भी काटी, भोजन परोसने का काम किया। पत्रकारिता की डिग्री लेकर लौटे तो पहले पीआईबी में काम मिला। गृहमंत्री गोविंद वल्लभ पंत और फिर प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री के सूचना अधिकारी हुए। आगे यूएनआई, स्टेट्समैन, इंडियन एक्सप्रेस आदि में अपने काम से नामवर होते चले गए। (बरस्ते लेखक का फेसबुक वॉल)

शोध विमर्श

दूरस्थ शिक्षा में नवीन शिक्षण तकनीक

प्रदीप डहेरिया
शोधार्थी, पीएच.डी,
माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल

प्रस्तावना : 21वीं सदी में राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा तकनीकी क्षेत्रों में तेजी के साथ सार्थक बदलाव हो रहे हैं। सूचना एवं संचार तकनीक ने शिक्षा एवं दूरस्थ शिक्षा के आयामों को भी बदल कर रख दिया है। इंटरनेट तथा वर्ल्ड वाइड वेब के आने से सूचनाओं के आदान-प्रदान के साथ सूचना विस्फोट हुआ है। लेकिन सूचना और संचार तकनीक के विकास ने दूरस्थ शिक्षण को दूरस्थ न रखकर प्रत्यक्ष बना दिया है। इस कारण शिक्षा में सुधार तथा बदलाव को फलीभूत करने के लिये रणनीतियों तथा निर्देशों का पालन करना शिक्षकों और विद्यार्थियों दोनों के लिए जरूरी हो गया है। अनेक विद्यालय एवं विश्वविद्यालय दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को अपना चुके हैं या अपनाने की प्रक्रिया में हैं। यह शोध पत्र अन्वेषणात्मक एवं क्रियात्मक शोध प्रविधि पर आधारित है।

कीवर्ड - दूरस्थ शिक्षा, नवीन, शिक्षण तकनीक, भारत, विश्वविद्यालय, जीवन शैली

परिचय : दूरस्थ शिक्षा का इतिहास तब का है जब मेलविल डीवे ने पुस्तकालय शिक्षण के लिये कोलम्बिया विश्वविद्यालय में एक औपचारिक कार्यक्रम की शुरुआत की। वर्ष 1888 में डीवे ने अलबनी के समक्ष एक खास तरह के पुस्तकालय तथा छोटे पुस्तकालय सेवा में पत्राचार पाठयक्रम को शुरू करने की अपनी तीव्र इच्छा जतायी और वर्ष 1903 में अमेरीकन लाइब्रेरी एसोसिएशन (ALA) कमेटी ने लाइब्रेरी प्रशिक्षण के विषय में विद्यालयों तथा अग्रणी पुस्तकालयों को पत्राचार कार्यो के लिए औपचारिक अधिकार प्रदान कर दिया।

दूरस्थ शिक्षा के विकास के पीछे महत्वपूर्ण उद्देश्य यही है कि जो भी विद्यार्थी शिक्षा के केन्द्रों तक नहीं पहुंच पा रहे हैं, शिक्षा उन तक पहुंचे। दूरस्थ शिक्षा के केंद्र विद्यार्थियों को मार्गदर्शन न मिलने और विद्यालयों और विश्वविद्यालयों के अभाव को खत्म करने की भरपूर कोशिश में हैं।

परिभाषा : लॉ लाइब्रेरी जर्नल (1999,191) के अनुसार दूरस्थ शिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है, जो कैम्पस के बाहर के छात्रों को एक दूरी पर तथा लचीले समयावधि में शिक्षा दे, लेकिन इसमें निर्देशक के निर्देश पर छात्रों को स्वंय पढ़ाई करनी होगी और उनके निर्देशों का अनुपालन भी। लॉ लाइब्रेरी के ही जर्नल (1999,192) के अनुसार दूरस्थ शिक्षा एक निर्देशात्मक व्यवस्था है, जिसमें शिक्षक तथा शिक्षु भौतिक रूप से अलग-अलग स्थानों पर होते है और एक माध्यम के जरिये संचार की आवश्यकता को पूरी करते हैं।

दूरस्थ शिक्षा की आवश्यकता : दूरस्थ शिक्षा के विकास के पीछे महत्वपूर्ण उद्देश्य यही है कि जो भी विद्यार्थी शिक्षा के केन्द्रों तक नहीं पहुंच पा रहे हैं, शिक्षा उन तक पहुंचे। दूरस्थ शिक्षा के केंद्र विद्यार्थियों को मार्गदर्शन न मिलने और विद्यालयों और विश्वविद्यालयों के अभाव को खत्म करने की भरपूर कोशिश में हैं। आर्थिक, शारीरिक, भावनात्मक या पारिवारिक परेशानियों से घिरे लोगों के बीच दूरस्थ शिक्षा ने एक बड़ी उम्मीद जागते हुए अपने पैर तेजी से पसारे हैं और ऑनलाइन शिक्षा या वेब आधारित शिक्षा के आ जाने के बाद तो दूरस्थ शिक्षा में जबरदस्त फैलाव हुआ है।

नवीन शिक्षण तकनीक : नवीन शिक्षण तकनीक ने आज दुरूह दूरस्थ शिक्षा को काफी सहज बना दिया है। नवीन शिक्षण तकनीक के परिप्रेक्ष्य में दूरस्थ शिक्षा को समझना जरूरी हो जाता है।

ISSN 2231-0479

1. इंटरनेट (Internet) - इंटरनेट की मदद से छात्र पठन-पाठन के विषय से संबंधित सामग्री हासिल कर सकते हैं। इंटरनेट पर हर विषय की विस्तृत जानकारी उपलब्ध है।

2. वेब आधारित निर्देशन : रिलेन और गिल्हेनी ने वर्ष 1997 में कहा कि वेब आधारित निर्देशन, निर्देशन का नवीन तरीका है, जिसमें वेब टूल्स (tools) का उपयोग किया जाता है। केसी (Casey) ने वर्ष 1998 में वेब मॉडल की विशेषता को इस प्रकार से बताया - सूचनाओं का साधन - वेबसाइट एक बहुत ही सरल व सुगम स्थान है जहां परम्परागत पाठयक्रम (courses) के लिए सहायक सूचनाएं उपलब्ध हैं।

इलेक्ट्रॉनिक पुस्तक-कई शिक्षण संस्थाओं की रूचि वेबसाइट की ओर बढ़ रहा है ताकि वे सूचनाओं को संग्रहित कर उसे बेहतर तरीके से पाठकों को दे सकें। छात्र अपनी पठन सामग्री वेब पेज(web page) पर जाकर प्राप्त कर सकते हैं।

शिक्षक - कई वेब आधारित पाठयक्रम ऐसे भी हैं जिनमें छात्रों के बीच व्यक्तिगत संचार की भी व्यवस्था है, वे ई-मेल और चैट रूम की सहायता से एक-दूसरे से जुड़ सकते हैं।

शिक्षक व विद्यार्थियों के बीच एक संचार माध्यम - इस मॉडल के तहत वेब एक ऐसी व्यवस्था को जन्म देता है जिससे उनके बीच एक व्यक्तिगत जुड़ाव होता है।

शायद इसी बात को समझते हुए रीवस ने वर्ष 1997 में कहा था कि वेब आधारित शिक्षा; मीडिया की खूबियों और प्रस्तुतिकरण के आयामों का एक शक्तिशाली मिश्रण है। 1998 में केसी (Casey) ने कहा कि-'वेब आधारित शिक्षण का उद्देश्य छात्रों की एक बड़ी संख्या को सफलतापूर्वक शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्रदान करना है।'

3. कम्प्यूटर की सहयता से शिक्षण (Computer assistance learning)- पिछले दशक में कम्प्यूटर आधारित तकनीक के विकास ने विज्ञान व शिक्षा के क्षेत्र में नए द्वार खोल दिये हैं। मल्टीमीडिया सॉफ्टवेर ने प्रयोगात्मक कार्यों, लैब लेक्चर और ट्यूटोरियल्स के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

4. सेमिनार (Seminar)- शैक्षिक संस्थानों द्वारा आपसी तालमेल तथा पहचान को बढ़ाने के लिए सेमिनार का आयोजन किया जाता है। सेमिनार की सूचना एवं संबंधित तैयारी ऑन-लाइन होती है।

5. वर्चुअल प्रयोगशाला- वर्चुअल प्रयोगशाला के माध्यम से तमाम संबंधित उपकरणों को ऑन स्क्रीन उपलब्ध कराया जाता है। इस दृश्य-श्रव्य (audio-visual) माध्यम के द्वारा शिक्षक एवं विद्यार्थियों के बीच उच्च स्तर का द्विपक्षीय संचार स्थापित होता है।

6. विद्यार्थी-एक प्रोजेक्ट सहायक - विभाग में चल रहे अनुसंधान कार्यों में छात्र सहायक के रूप में अपना योगदान देते हैं, जिससे न केवल वे प्रोत्साहित होते हैं बल्कि उनमें नेतृत्व क्षमता का भी विकास होता है।

7. टेलीकॉन्फ्रेंसिंग- टेलीकॉन्फ्रेंसिंग का विकास दूरस्थ शिक्षा की कमियों को दूर करने के लिए किया गया। इसके तहत उपग्रह संचार के माध्यम से जीवंत प्रसारण एवं द्विपक्षीय संचार स्थापित होता है।

8. टेलीमेटिक शिक्षा- इसके द्वारा छात्रों को शिक्षण कार्यक्रम और शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराई जाती है। इससे कम समय और किसी भी स्थान पर सुविधानरूप शिक्षा के अवसर मिल सकें।

9. क्विज- क्विज की सहायता से छात्रों में याद करने की क्षमता विकसित होती है। शब्दकोश भी मजबूत होता है जिससे छात्रों की तार्किक शक्ति बढ़ती है।

नवीन शिक्षण तकनीक के उपयोग के कुछ सफल उदाहरण

- चंडीगढ़ के सरकारी मेडिकल कॉलेज ने ऐसी नवीन शिक्षण तकनीक की शुरुआत की है, जिसके द्वारा विषय को दिलचस्प और रुचिकर बनाया गया है (नागेश्वरी 2004)।
- थाइलैंड के STOU (Sukhothai Thammathirat Opan University) विश्वविद्यालय ने चार स्तरों पर दूरस्थ शिक्षा के लिए पाठयक्रमों की शुरुआत की है। स्नातकोत्तर डिग्री, स्नातक डिग्री, सर्टिफिकेट कोर्स और नियमित (रेगुलर) शिक्षा। यह पाठयक्रम प्रत्येक विषय में उपलब्ध हैं। STOU ने एक मल्टीमीडिया दूरस्थ शिक्षा प्रणाली तैयार की है जिसे STOU Plan के नाम से जाना जाता है। यह छात्रों को स्वंतत्र रुप से बिना कक्षाओं में उपस्थित हुए शिक्षित करता है। इसके द्वारा छात्रों को वर्कबुक और टेक्स्ट बुक मेल किए जाते हैं।
- प्रेटोरिया विश्व विद्यालय में टेलीमेटिक शिक्षा के अंतर्गत campus के छात्र भी टेलीमेटिक छात्र के रुप में ही नामांकित किए जाते हैं। उनके पाठ्यक्रम में वेब आधारित पाठन शामिल होता है। वेब आधारित टेलीमेटिक पाठन में कोर्स पूरी तरह वेब आधारित होता है
- गुजरात विश्वविद्यालय में एमएड प्रोग्राम के अंतर्गत उच्च्य कोटि के शिक्षकों को तैयार किया जाता है। जिसके तहत उन्हें -
- शैक्षणिक योजना एंव प्रबंधन
- शिक्षा में अनुसंधान
- आकलन
- मार्गदर्शन एवं काउंसलिंग
- शिक्षा तकनीक
- शिक्षा में सूचना तकनीक
- न्यूयार्क का जनता पुस्तकालय 'साइंस इंडस्ट्री एंड बिजनेस लाइब्रेरी' (SIBL) दुनिया का सबसे बड़ा सूचना केन्द्र पूरी तरह विज्ञान और व्यवसाय को समर्पित है। यह 18 कक्षाएं मुफ्त में प्रदान करता है।

आकलन : नवीन शिक्षण तकनीकों के उपयोग के लिए नवीन परीक्षण कार्यों की आवश्यकता होती है। इस प्रकार के आकलन के

लिए गिल्बर्ट और मूरे ने दो विधाओं का जिक्र किया है। पहला सामाजिक इंटरेक्सन जिसमें दो या दो से अधिक व्यक्ति पठन-पाठन की सामग्री के विषय में आपस में चर्चा करते हैं और दूसरा निर्देशात्मक इंटरेक्सन जिसमें व्यक्ति और पठन सामग्री के बीच संवाद होता है।

निष्कर्ष - दूरस्थ शिक्षा में नवीन शिक्षण तकनीक के उपयोगों के कारण विद्यार्थियोंको मुख्य पठन सामग्री के पूर्व दो प्रकार की अन्य पठन सामाग्री दिये जाने की जरूरत है। पहला, कम्प्यूटर साक्षरता की शिक्षा और दूसरा इंटरनेट और वेब कौशल की जानकारी। जिससे वे विषय सामाग्री को खोजने, डाउनलोड या अपलोड करने के तरीकों का बखूबी इस्तेमाल कर सकें। इसे बेहतर ढंग से समझने के लिये एक मिश्रित मॉडल विकसित करने की जरूरत है जिसमें उपग्रह टेलीकॉन्फ्रेंसिंग के साथ-साथ हैंड्स-ऑन सत्र का समायोजन हो।

संदर्भ :

- Barron, DÐDÐ (v~~®)Ð The Use of Distance Education in United States library and Information Science:
- History and Current PerspectivesÐ Education for InformationÐ }, xwz- xx~Ð
- Bothma, Theo JÐDÐ and Snyman Retha (MMM)Ð (w®®®)Ð Web-supported teaching in the Department of Information
- Science at the University of Pretoria: a case studyÐ In {{th IFLA Council and General Conference,
- Jerusalem, Israel, vx – v} Aug, w®®®Ð
- Innovative Teaching Techniques for Distance Education MÐ Natarajan Communications of the IIMA |~ w®®z Volume z Issue y
- General Conference Bangkok, Thailand, v} – wy Aug, w®®wÐ
- Casey, DÐ (v~~})Ð Learning "From" or "Through" the Web: Models of Web Based EducationÐ
- Gilbert, LÐ & Moore, DÐRÐ (v~~})Ð Building Interactivity into Web Courses: Tools for Social and Instructional
- InstructionÐ New Jersey: Educational Technology PublicationsÐ NageswariÐ K Sri, etalÐ (w®®y) - Pedagogical effectiveness of innovative teaching methods initiated at the
- Department of Physiology, Government Medical College, ChandigarhÐ Advances in Physiology Education w}, zv-z}Ð

गांधी के 150 साल

यह सवाल बड़ा मौजूं है कि एक व्यक्ति जो हाड़-मांस का बना है, अपने जन्म के डेढ़ सौ साल पूरा करने जा रहा है वह इन सालों में कभी असामयिक नहीं हुआ? जो लोग उन्हें मानते हैं और जो लोग उनके खिलाफ खड़े हैं वो लोग भी. सभी के लिए गांधी का होना जरूरी है और जब जरूरी है तो इस मौके पर यह सवाल उठना भी जरूरी है क्यों? सहमति-असहमति विचारों की बुनियाद है और यही ताना-बाना भी है. यह भी तय है कि देशभर में यह डेढ़ सौ साल उत्सवी साल के रूप में मनाया जाएगा. विमर्श होगा और उन्हें अधिक सामयिक व्यक्तित्व के रूप में देखने की कोशिश होगी.

इस विमर्श का हिस्सा रिसर्च जर्नल `समागम' भी बनना चाहता है. सीमित संसाधनों में 18 वर्षों से नियमित प्रकाशित होने वाली यह पत्रिका गांधी को आप सभी के सहयोग से अंजुल भर याद करना चाहती है. गांधी को समझने की विनम्र कोशिश में आपका साथ, सहयोग वांछित है. गांधी पर समग्र चिंतन करने वाली प्रकाशन सामग्री भेजने का अनुरोध है. अपना लेख, शोध पत्र, शोध आलेख और अपने संस्मरण भेज सकते हैं. यह सम्पादक का व्यक्तिगत अनुरोध है. प्रकाशन सामग्री 05 सितम्बर 2018 के पूर्व भेजने का आग्रह है.

सम्पादक
रिचर्स जर्नल `समागम'
3, जूनियर एमआयजी, द्वितीय तल, अंकुर कॉलोनी,
शिवाजीनगर, भोपाल-16

भाषा के नष्ट ...

(पृष्ठ 13 का शेष)

भी नहीं तो आपकी भाषा कहां? और इसे ही भाषा के सरलीकरण की संज्ञा दी जा रही है। यह भाषा का सरलीकरण है या उसके अंत की शुरुआत का संकेत? आप अंग्रेजी की स्थिति को देखिए, भू-मंडलीकरण यानी ग्लोबलाइजेशन के इस दौर में भाषा के तौर पर अंग्रेजी का साम्राज्यवाद है और उसका मुख की सुरसा के मुख की तरह है हिंगलिश होते हुए हिन्दी अंततः उसी मुख में समा जाएगी। और अगर यह दशा है तो फिर दिशा की बात कैसे की जाएं। दिशा तो इसी दशा से तय होगी। हम यह भूल जाते हैं कि भाषा का नष्ट होना ही संस्कृति का नष्ट होना है। अल्लामा इकबाल की पंक्तियां याद कीजिए -

यूनान ओ मिस्र ओ रूमा सब मिट गए जहाँ से
अब तक मगर है बाक़ी नाम.ओ.निशाँ हमारा

क्यूं नहीं मिटी हमारी हस्ती क्यूंकि हमारी अपनी भाषा और संस्कृति नहीं मिटी। आप चाहें तो इसे मेरा अनर्गल प्रलाप भी समझ सकते हैं किन्तु हिन्दी हो या कोई अन्य भाषाए सदियों में अपना समुचित विकास प्राप्त करती है पर पिछले लगभग 15 सालों में, खासकर मोबाइल कल्चर के बाद, बोलचाल की भाषा के नाम पर हिन्दी जिस हिंगलिश स्वरूप में पहुंच गई है, वह हमारे लिए चिंता का विषय होना चाहिए या नहीं? चाहे यह शुरुआत हो किन्तु एक भाषा को नष्ट होने की प्रक्रिया से गुजरते देखना यानि एक संस्कृति को नष्ट होने की प्रक्रिया में देखना अर्थात देश को अपनी पहचान खोने देना। क्या हम इस अपराध के भागी बनने जा रहे हैं?

संदर्भ :

1.https://navbharattimes.indiatimes.com/state/gujarat/ahmedabad/-/articleshow/5498466.cms, Jan 25, 2010, 02:59PM IST)

ISSN 2231-0479

शोध विमर्श

हिन्दी दैनिकों में दक्षेस से संबंधित संदर्भ का विश्लेषण

प्रशांत प्रताप सिंह
शोधार्थी
महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट सतना (म.प्र.)

प्रस्तावना: प्रस्तुत शोध पत्र 'हिन्दी दैनिक समाचार पत्रों में दक्षेस से संबंधित संदर्भ का अंतर्वस्तु विश्लेषण' पर आधारित है। जिसमें शोधार्थी द्वारा चयनित समाचार पत्रों में दक्षेस संबंधी कवरेज का विविध दृष्टिकोण, मान्यताओं और आधारों के आधार पर अध्ययन किया गया। यह एक विश्लेषणात्मक शोध अध्ययन है। जिसमें हिन्दी भाषा के 4 दैनिक समाचार पत्रों दैनिक भास्कर, दैनिक जागरण, पंजाब केसरी व जनसत्ता के राष्ट्रीय संस्करणों के 4 माह के अंकों का विश्लेषण किया गया है। इन समाचार पत्रों में दक्षेस से संबंधित संदर्भ के विश्लेषण से ये ज्ञात होगा कि दक्षेस राष्ट्रों की खबरों को लेकर भारतीय मीडिया की क्या मनोदशा है। साथ ही दक्षेस राष्ट्रों की खबरों को भारतीय मीडिया कितनी पारदर्शिता से, कितनी प्राथमिकता से और किस स्वरूप (सकारात्मक, नकारात्मक व सूचनात्मक) में प्रस्तुत करता है, इसकी जानकारी भी शोध अध्ययन से ज्ञात होगी।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में हिन्दी समाचार पत्रों से आशय ऐसे मुद्रित प्रकाशनों से है जिनमें विवेच्य विषयवस्तु मुख्यरूप से समकालीन घटनाओं और मुद्दों से संबंधित होती है। ऐसे समाचार पत्रों में रोजाना की खबरों को समग्रता के साथ प्रस्तुत किया जाता है। ऐसे समाचार पत्रों की विषयवस्तु समाचार, विचार व विज्ञापन के रूप में होती है। शोध के लिए अंतर्वस्तु विश्लेषण का उपयोग किया गया है। अंतर्वस्तु विश्लेषण एक वैज्ञानिक विधि है जिसमें सामग्री को दिए गए स्थान, महत्व, स्वरूप के साथ साथ उसके अंतर्निहित भावार्थ को स्पष्ट करने का प्रयास किया जाता है। साहित्य और सामाजिक विषयों के अध्ययनों की यह एक लोकप्रिय और विश्वसनीय विधि है जिसके माध्यम से प्रस्तुत सामग्री का अध्ययन विश्लेषण किया जा सकता है। अध्ययन के लिए उद्देश्यों के निर्धारण के बाद उपयुक्त शोध पद्धति के माध्यम से युक्तियुक्त निष्कर्षों को प्राप्त करने की प्रक्रिया चरणबद्ध रूप से सम्पन्न की गई।

अंतर्वस्तु विश्लेषण एक वैज्ञानिक विधि है जिसमें सामग्री को दिए गए स्थान, महत्व, स्वरूप के साथ साथ उसके अंतर्निहित भावार्थ को स्पष्ट करने का प्रयास किया जाता है।

उद्देश्य:

1. समाचार पत्रों में दक्षेस संबंधी समाचारात्मक और विचारात्मक कवरेज का अध्ययन
2. दक्षेस कवरेज पर विशेषज्ञ अभिमत का अध्ययन

अध्ययन की उपकल्पना:

- अध्ययन में शामिल समचार पत्रों क्रमश: दैनिक जागरण, दैनिक भास्कर, पंजाब केसरी व जनसत्ता में दैनिक भास्कर की विषयवस्तु बेहतर है।
- अध्ययन में शामिल समाचार पत्रों में दक्षेस से संबंधित संदर्भ सबसे ज्यादा पाक से संबंधित है।
- पाकिस्तान से जुड़ी खबरें ज्यादातर नकारात्मक प्रकृति की व रक्षा मामलों से जुड़ी हैं।
- नेपाल और भूटान की खबरें नकारात्मक प्रकृति की नहीं हैं।

अध्ययन की सीमा:

प्रस्तुत शोध अध्ययन दैनिक भास्कर, दैनिक जागरण, पंजाब केसरी व जनसत्ता पर आधारित है। इन चार प्रमुख हिन्दी दैनिक समाचार पत्रों के राष्ट्रीय संस्करणों को शोध के लिए उपयोग में लाया गया है। अंतर्वस्तु विश्लेषण विधि के आधार पर किए गए शोध में अप्रैल, जुलाई, अक्टूबर व जनवरी माह के समाचार पत्रों को शामिल किया गया है।

समाचार में सूचना संबंधी व ज्ञानपरक समाचार आते हैं।

1.3 समाचार पत्रों की सम्पादकीय (विचारात्मक प्रस्तुति) के आधार पर विश्लेषण: (चार्ट अगले पन्ने पर) : उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से ये स्पष्ट होता है की प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त समाचार पत्रों में दक्षेस से संबंधित सम्पादकीय की प्रकृति कैसी है। तालिका से पता चलता है कि भारत से जुड़ी संपादकीय भी नकारात्मक प्रकृति की अधिक प्रस्तुत की गई। भारत पर लिखी गई 62 सम्पादकीय नकारात्मक रहीं जबकि 23 सम्पादकीय सकारात्मक

दक्षेस देश	खबरों की प्रकृति														
	सकारात्मक					नकारात्मक					सूचनात्मक				
	दै. भा.	दै.जा.	पं.के.	ज.स.	कुल	दै.भा.	दै.जा.	पं.के.	ज.स.	कुल	दै.भा.	दै.जा.	पं.के.	ज.स.	कुल
भारत	80	75	67	65	287	30	25	30	25	110	70	72	68	65	275
पाकिस्तान	61	62	55	52	230	28	31	19	22	100	62	71	69	70	272
बांग्लादेश	20	16	10	9	45	2	3	2	7	13	6	7	10	8	31
नेपाल	2	2	1	1	6	0	2	1	0	3	3	4	2	3	12
भूटान	1	2	0	2	5	1	0	0	0	1	4	1	0	1	6
श्रीलंका	15	17	18	21	71	3	1	1	1	6	5	6	3	5	19
मालदीव	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
अफगानिस्तान	12	12	9	13	46	2	1	0	2	5	5	3	9	4	21
कुल	211	186	160	163		66	63	53	57		155	164	161	156	

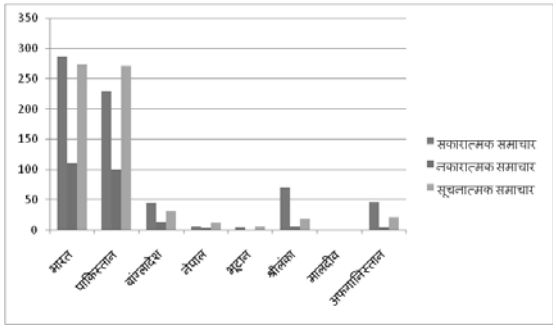

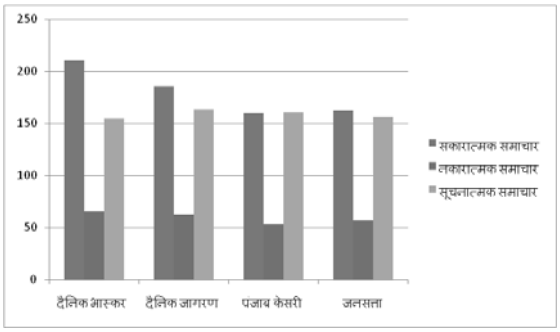

1.1 दक्षेस देशों से संबंधित प्रकाशित खबरों की प्रकृति के अनुसार विश्लेषण एवं प्रस्तुतीकरण:

तालिका संख्या 1.1 : खबरों की प्रकृति, समाचार-पत्र एवं देश के अनुसार विश्लेषण :

चार्ट संख्या 1.1 : खबरों की प्रकृति एवं देश के अनुसार विश्लेषण प्रस्तुत तालिका एवं चार्ट के विश्लेषण के अनुसार नकारात्मक समाचार की संख्या कम तथा सूचनात्मक एवं सकारात्मक समाचारों की अधिक है।

तालिका संख्या 1.2 : खबरों की प्रकृति एवं समाचार-पत्र के अनुसार विश्लेषण : उपरोक्त तालिका एवं चार्ट के विश्लेषण के अनुसार यह स्पष्ट दिखाई देता है की नकारात्मक समाचार लगभग सभी समाचार पत्रों में प्रकाशित किए जाते हैं लेकिन इनकी संख्या सूचनात्मक तथा सकारात्मक समाचारों से बहुत कम होती है। अत: इस प्रकार उपलब्धियों से जुड़े समाचार आते हैं वही सूचनात्मक व 50 सम्पादकीय सूचनात्मक रहीं। शोध अध्ययन के केंद्र में रहने वाले पाकिस्तान को लेकर संपादकीय प्रकृति नकारात्मक ज्यादा रही। उसके बाद सूचनात्मक लहजे में भी पाकिस्तान से जुड़ी सम्पादकीय लिखी गई। जनसत्ता ने सिर्फ पाकिस्तान को लेकर एक सकारात्मक विचार प्रस्तुत किया। अन्य दक्षेस देशों के संबंध में प्रस्तुत सम्पादकीय की प्रकृति की बात करें तो बांग्लादेश, अफगानिस्तान और श्रीलंका से जुड़ी सम्पादकीय प्रस्तुत है। हालांकि इन तीन देशों से संबद्ध संपादकीय नकारात्मक शैली की नहीं है।

1.4 विशेषज्ञों के साक्षात्कार के आधार पर दक्षेस देशों से संबंधित सम्पादकीय एवं समाचारों की प्रकृति का विश्लेषण:

नजम सेठी, प्रधान सम्पादक द फ्राइडे टाइम्स (पाकिस्तान)- देखिए सार्क (दक्षेस) की शुरूआत तो इसीलिए हुई थी कि दक्षिण एशिया के सभी मुल्क आपस में एकजुटता के साथ रहें। जब तमाम देशों ने एक साथ मिलकर इसकी स्थापना की थी तो निश्चित

ISSN 2231-0479

दक्षेस देश	सम्पादकीय (विचारात्मक प्रस्तुति) की प्रकृति														
	सकारात्मक					नकारात्मक					सूचनात्मक				
	दै. भा.	दै.जा.	पं.के.	ज.स.	कुल	दै.भा.	दै.जा.	पं.के.	ज.स.	कुल	दै.भा.	दै.जा.	पं.के.	ज.स.	कुल
भारत	5	3	10	5	23	10	15	22	15	62	14	19	9	8	50
पाकिस्तान				1	1	5	10	5		20	3	1		1	5
बांग्लादेश				1	1								1	1	2
नेपाल															
भूटान															
श्रीलंका													1		1
मालदीव															
अफगानिस्तान	1	1			2						1				1
कुल	6	4	10	7	27	15	25	27	15	82	18	20	11	10	59

ही उन्हें लगा होगा कि सार्क बड़ा इम्पोर्टेंट रोल प्ले कर सकता है। बहरहाल वैसा नहीं हो सका। चूंकि मैं पाकिस्तान से हूं तो पाकिस्तान की ही बात करूंगा कि सार्क से पाकिस्तान को कोई विशेष फायदा नहीं हुआ। कोई भी संघ हो उनका उद्देश्य सकारात्मक ही होता है। सार्क का उद्देश्य भी अच्छा ही है। गौर करने लायक बात ये है कि सार्क को सही तरीके से कैसे उपयोग में लाया जाए, इसके लिए किसी एक देश के प्रयास से कुछ नहीं होगा। सार्क से जुड़े सभी देशों को मिलकर काम करना होगा।

सार्क या सार्क देशों से जुड़ी खबरें मीडिया में किस रूप में कितनी संख्या में होती हैं, ये टाइम टू टाइम खबरों की इम्पोर्टेंस का मसला है। हां, लेकिन विश्व का मीडिया सार्क से जुड़े उन्हीं मुद्दों को तवज्जो देता है जो उनके मुल्कों को प्रभावित करते हैं। जैसे चीन का मीडिया पाकिस्तान से संबंधित उसी खबर को ज्यादा तवज्जो देगा जो चीन से जुड़ी होगी। बाकी तो सार्क देश पश्चिमी मीडिया में कम ही नजर आते हैं। पाकिस्तान की मीडिया में भारत को काफी कवरेज मिलती है। उसका नेचर कैसा है, ये अलग विषय है। और तमाम सार्क देशों को भी कवरेज मिलती है पर भारत को ज्यादा। भारतीय मीडिया को मैं थोड़ा अलग तरीके से देखता हूं। देखिए भारत और पाकिस्तान संबंधों का असर दोनों देशों की मीडिया में भी देखने को मिलता है। मेरे कई पत्रकार दोस्त भारत में हैं। पर बड़े दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि वो पाकिस्तान को लेकर पॉजिटिव नहीं हैं। पाकिस्तान में भी यही हाल है। वहां की मीडिया भी भारत को लेकर पॉजिटिव नहीं है। भारतीय मीडिया को आप देखिए। अखबारों को, चैनलों को। खबरें हों या आर्टिकल्स सभी निगेटिव नेचर के होते हैं। भारत की मीडिया पाकिस्तान में सिर्फ समस्याएं दिखाती हैं। साल्यूशन की ओर उसका ध्यान नहीं जाता। ये गलत है।

एलिटा करीम, सम्पादक द वीक (बांग्लादेश)–सार्क की एक अपनी वैल्यू है और रहेगी। सार्क के जो सदस्य देश हैं उनको इसके बेहतरी के लिए सोचना है कि सार्क कैसे एक बेहतर संघ बने। दक्षिण एशिया का संगठन है ये और दक्षिण एशियाई देशों के बीच कई मसले बड़े जटिल हैं। उन मुद्दों पर बात करने और उन्हें सुलझाने का सबसे अच्छा प्लेटफार्म है सार्क। मीडिया की बात करें तो बांग्लादेश में तो मीडिया के हालात ठीक नहीं हैं। कट्टरपंथी समूह हावी हैं। ब्लॉगर्स की लगातार हत्याएं हो रही हैं। बांग्लादेश में ब्लॉगर्स एक बड़ी क्रांति कर रहे हैं डिजिटल मीडिया पर लेकिन कट्टरपंथी लगातार उनकी हत्याएं कर रहे हैं। जो मेनस्ट्रीम मीडिया है, वो खबरें करता है। उसमें सार्क देशों की खबरें होती हैं। भारत से जुड़ी बहुत खबरें होती हैं। लेकिन बड़ा मीडिया सरकारी नीति पर काम करता है। उतना स्वतंत्र नहीं है।

इंडियन मीडिया को मैं देखती हूं कि बांग्लादेश को लेकर न्यूट्रल है। वेबसाईट पर खबरें देखती हूं मैं। बांग्लादेश की खबरें होती हैं। ब्लॉगर्स की हत्याओं से जुड़ी खबरें लगातार भारतीय मीडिया ने कवर की। सोशल मीडिया एक बड़ा रोल प्ले करता है दो देशों के बीच। फेसबुक, ट्विटर जैसे नेटवर्क पर जो कंटेंट एक दूसरे देशों के होते हैं उनसे भी लोग जुड़ते हैं। जहां तक भारतीय मीडिया में सार्क खबरों या एडीटोरियल कंटेंट की बात है तो वो आमतौर पर देखने को मिलता है। हालांकि पाकिस्तान टेंशन क्रिएट करने के कारण भारतीय मीडिया में ज्यादा होता है। बांग्लादेश की पॉलिटिक्स और क्राइम को मैंने इंडियन मीडिया में अक्सर देखा है और ट्रांसपरेंसी के साथ देखा है। ये अच्छी बात है।

नियामत ए- इनायत, रिसर्चर, साउथ एशियन स्टडीज, सार्क विश्वविद्यालय (दिल्ली) निवासी: ढाका, बांग्लादेश- सार्क (दक्षेस) दक्षिण एशिया के देशों का प्रमुख संगठन है। इसका इतिहास देखें तो पता लगेगा कि ये दक्षिण एशियाई देशों के फायदे के लिए ही है। पर वर्तमान में सार्क से जुड़े देशों के बीच में तनाव की स्थिति है तो सार्क भी बेहतर तरीके से काम नहीं कर पा रहा है। सार्क से बेहतर परिणाम तभी मिलेंगे जब देशों के बीच संबंध अच्छे होंगे। फिलहाल सार्क की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। जब भारत और पाकिस्तान जैसे बड़े देश सीधे तौर पर ही युद्ध की

स्थिति में हैं तो सार्क के मंच पर बात कैसे बनेगी।

मीडिया एक रोल प्ले करता है। चूंकि मैं पिछले एक साल से दिल्ली में हूं। सार्क विश्वविद्यालय में ही स्टूडेंट हूं इसलिए बेहतर बता सकता हूं कि भारत की मीडिया सार्क से संबंधित विषयों को कैसे फोकस करता है। तमाम बड़े अखबार और चैनल मैं लगातार पढ़ता हूं। हालांकि अंग्रेजी ज्यादा पढ़ता हूं। अंग्रेजी की न्यूज वेबसाईट देखता हूं। सार्क से रिलेटेड काफी खबरें और आर्टिकल्स होते हैं। काफी कंटेंट है। भारतीय मीडिया कवरेज देता है सार्क को। काफी कवरेज देता है। एडीटोरियल भी बहुत होते हैं। नेपाल, बांग्लादेश, भूटान, मालदीव, पाकिस्तान, श्रीलंका, अफगानिस्तान लगभग सभी सार्क देशों से जुड़ी खबरें और आलेख भी लगातार मैं देखता हूं। नेपाल, भूटान, मालदीव पर कम सामग्री होती है। लेकिन पाक पर काफी खबरें भारतीय मीडिया करता है। श्रीलंका की भी खबरें होती हैं। हमारे बांग्लादेश की खबरें बहुत आती हैं। सूचनात्मक खबरें भी होती हैं। पॉजिटिव भी मैंने पढ़ी हैं। बांग्लादेश की काफी पॉजिटिव खबरें भारतीय मीडिया में देखी हैं। हां, पाकिस्तान को लेकर भारतीय मीडिया काफी अग्रेसिव रिपोर्टिंग करता है। एडीटोरियल में भी पाकिस्तान मामले में काफी अग्रेसिव कंटेंट होता है। एक निष्कर्ष में यही कह सकता हूं कि सार्क से जुड़ा कंटेंट भारतीय मीडिया में, अखबारों में न्यूट्रल ही होता है क्योंकि बहुत ज्यादा कंटेंट नहीं होता। पर जो होता है, वो ठीक होता है।

डॉ. निर्मलमणि अधिकारी, प्रोफेसर, जनसंचार व पत्रकारिता विभाग काठमांडू विश्वविद्यालय (नेपाल) : सार्क बड़ा महत्वपूर्ण संघ है। जिसके माध्यम से सभी दक्षिण एशियाई देशों को एक साथ सहयोग की रणनीति बनाने का मौका मिलता है। कई महत्वपूर्ण कार्य सार्क में हुए हैं और होते रहने चाहिए। काठमांडू विश्वविद्यालय ने ही भारत के माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय के साथ मिलकर नेपाल में एक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की थी। तो मैं तो हमेशा चाहता हूं कि सार्क के देश आपस में अच्छे संबंध कायम करने के लिए विचार बनाएं, यात्राएं करें, एक्सचेंज प्रोग्राम करें। मैं भी भारत जाता रहता हूं। सिर्फ भारत और नेपाल ही नहीं बल्कि सभी सार्क देशों को आपस में मिलजुलकर एकजुटता से काम करना चाहिए। पर देशों के बीच परस्पर तनाव और गलतफहमी के कारण सार्क के उद्देश्य पूरे नहीं हो पाते। सार्क महत्वपूर्ण संघ है और इसकी लगातार आवश्यक्ता है। पर वर्तमान हालत बहुत सामान्य नहीं है। मीडिया में दक्षेस की बात करें तो यूरोप की मीडिया में भी कवरेज देखने को मिलती है और वो न्यूट्रल ही होती है। क्योंकि दक्षिण एशियाई देशों के प्रति पश्चिमी मीडिया में पूर्वाग्रह नहीं है। अपने नेपाल की बात करें तो नेपाली मीडिया सार्क के सभी देशों की कवरेज करता है। हां भारत की कवरेज को हमेशा नेपाली मीडिया प्राथमिकता देता आया है। नेपाल में मीडिया पूरी तरह स्वतंत्र है। सरकार का किसी तरह का अंकुश मीडिया पर नहीं है। 1990 में नेपाल में जो संविधान बना वो मीडिया के लिए बहुत उदार था। हां राजनैतिक दबाव, विचारधारा का प्रभाव, औद्योगिक प्रभाव, अशासकीय संस्थाओं की गतिविधियों का प्रभाव जरूर नेपाली मीडिया में देखने को मिलता है।

अशोक ओगरा, पूर्व उपाध्यक्ष, दक्षिण एशिया क्षेत्र डिस्कवरी चैनल व पूर्व निदेशक दूरदर्शन दिल्ली : सार्क का अपना एक वजूद है। अस्तित्व है। सार्क जैसे संगठन हमेशा महत्व के हैं। लेकिन जब संघ से जुड़े राष्ट्र इसके उद्देश्यों का पालन करें। सार्क को लेकर वैश्विक मीडिया में भी काफी कवरेज होता है। मैं सीएनएन और बीबीसी पर दक्षिण एशियाई देशों की काफी खबरें सुनता हूं। हां लेकिन वहां खबरें होती हैं जिनका ग्लोबल इंपैक्ट होता है। अंतरराष्ट्रीय मीडिया में दक्षेस को लेकर बहुत ज्यादा रुझान तो नहीं है, पर बहुत ज्यादा पॉजिटिव वे तो नहीं होता। चूंकि दक्षिण एशियाई देश गरीब और अपराधन, बेरोजगारी आदि संकटों से जूझ रहे हैं। तो अंतरराष्ट्रीय मीडिया इन्हीं को मुद्दा बनाता है। उदाहरण के तौर पर नोटबंदी का मुद्दा अंतरराष्ट्रीय मीडिया में खूब छाया रहा। इसकी प्रशंसा और आलोचना दोनों हुई। पाकिस्तान को लेकर भी अंतरराष्ट्रीय मीडिया नकारात्मक खबरें करता है। तो ये तो सम-सामयिक मसले हैं।

भारतीय मीडिया में ऑल ओवर देखें तो सार्क को लेकर काफी कंटेंट है। काफी खबरें और आलेख मिल जाएंगे। लेकिन एक स्थिति ये है कि भारतीय मीडिया अंग्रेजी हो या हिन्दी सभी दक्षेस देशों की खबरों के लिए एजेंसी पर निर्भर हैं। अब ऐसी स्थिति में आप निष्पक्ष खबरों की कामना करें तो मुझे नहीं लगता कि हो पाएगा। एजेंसी का एक दायरा है। भारत में लगभग सभी संस्थान दक्षेस देशों में प्रतिनिधि नहीं रखते। अपवाद और बात है। पिछले दिनों पीटीआई और हिंदू के संवाददाता भी पाकिस्तान से लौट आए। ऐसी स्थिति में सभी संस्थान जब एक ही एजेंसी की खबर लेंगे तो एजेंसी की खबर अगर कभी कम विश्वसनीय या कभी गलत ही हुई तो पूरा भारत का मीडिया गलत ही खबर चला देगा। एक पक्ष ये भी होता है कि जब आपका रिपोर्टर खुद कवर करता है खबर को तो उसका एंगल अलग होता है। ठीक ऐसे समझें इस बात को कि एक घटना हुई उसको दस रिपोर्टर कवर करने पहुंचे तो घटना एक ही है पर दसों रिपोर्टर उसे अलग अलग तरीके से ही प्रस्तुत करेंगे। तो एक घटना के दस एंगल पाठक या दर्शकों को मिलेंगे। खबरों में विविधता होगी। पर दक्षेस की खबरों में हम विविधता से दूर हैं। पाकिस्तान को लेकर तो भारतीय मीडिया में ज्यादातर निगेटिव कवरेज होती है। बाकि देशों पर कम खबरें होती हैं पर संतुलित होती हैं। नेपाल, भूटान जैसे राष्ट्रों में मीडिया ज्यादा दिलचस्पी भी नहीं लेता जब तक कोई बड़ा इशू न हो तो।

शेषमणि शुक्ल, नेशनल ब्यूरो चीफ पंजाब केसरी समूह दिल्ली:

ISSN 2231-0479

दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन एक बहुत जरूरी मंच है जहां दक्षिण एशियाई देश अपनी समस्याओं का समाधान खोज सकते हैं। दक्षेस का गठन भी इसीलिए हुआ था क्योंकि ब्रिक्स और तमाम यूरोपीय देशों के संघ है जो समग्र विकास की दृष्टि से बढ़िया काम कर रहे थे। ऐसे में बांग्लादेश के तत्कालीन राष्ट्रपति ने ऐसे संघ की आवश्यक्ता महसूस की जो दक्षिण एशियाई देशों को एक सूत्र में पिरोएं। जहां दक्षिण एशियाई देश अपनी समस्याएं रखें और मिलजुलकर समस्याओं का समाधान करें। वैश्विक मीडिया की लगातार दक्षेस पर नजर होती है। दक्षेस से संबंधित खबरें विश्वभर का मीडिया दिखाता है। दक्षेस के सभी राष्ट्र अब पूरे विश्व को प्रभावित करते हैं। यहां तक की तिब्बत भी सुर्खियों में रहता है। तो ऐसा नहीं है कि खबरें नहीं होतीं। काफी खबरें अंतरराष्ट्रीय मीडिया में होती हैं दक्षेस से जुड़ी। भारतीय मीडिया की बात करें तो दक्षेस को अपेक्षाकृत पश्चिमी मुल्कों से कम कवरेज मिलती है। पर पाकिस्तान हमेशा से शीर्ष पर रहता है। बेशक तनाव, आंतकवादी घटनाओं व सैन्य सुरक्षा संबंधी खबरें हों। नेपाल, भूटान, श्रीलंका, अफगानिस्तान की खबरें भी भारतीय मीडिया कवर करता है। चूंकि भारतीय मीडिया दक्षेस की खबरों के लिए एजेंसियों पर निर्भर है। इसलिए एजेंसी जिन बड़ी खबरों को प्राथमिकता देता है मीडिया भी उन्ही खबरों में से कुछ खबरें चुनता है। खबरें सकारात्मक व नकारात्मक दोनों तरह की होती हैं। सम्पादकीय आलेख भी लिखे जाते हैं। सम्पादकीय आमतौर पर निगेटिव ज्यादा होते हैं पाकिस्तान को लेकर। हिन्दी समाचार पत्रों में दक्षेस की कवरेज को लेकर बात करें तो मामला बहुत सामान्य है। सेंट्रल डेस्क में जो सब एडीटर बैठा है उसका कोई पूर्वाग्रह और दखल नहीं है। उसके पास एजेंसी के माध्यम से जिस नेचर की खबर आती है, वो उसे लगा देता है। यहां तक की मैं ये भी कहूंगा कि एजेंसी के मार्फत आ रही किसी भी विदेशी खबर को सब एडीटर एडिट भी नहीं करते। क्योंकि सीधे तौर पर कहें तो पाकिस्तान में क्या हो रहा है, उसे दिल्ली में बैठकर कैसा पता लगेगा। उसके पास कोई इनपुट नहीं है। जो एजेंसी भेजती है उस पर वो विश्वास करता है। हमारे अखबार में भी यही होता है। खबरें संतुलित प्रकृति की होती हैं। बाकी सम्पादकीय आलेखों की बात करें तो वो भी कभी कभार पॉजिटिव होते हैं।

तृप्ति नाथ, सदस्य, साउथ एशियन करेसपोंडेंट क्लब दिल्ली व दक्षिण एशिया की विशेष संवाददाता (असाही शिम्बुन समाचार पत्र, जापान) : सार्क (दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन) की अपनी एक जरूरत है जो हमेशा रहेगी। महत्वपूर्ण बात तो ये है कि सार्क से किस तरह से सदस्य देश लाभ ले सकते हैं। दक्षेस को लेकर विश्व का मीडिया हमेशा से आकर्षित रहा है। दक्षेस के देशों की गतिविधियां अब पूरे विश्व को प्रभावित करती हैं। अंतरराष्ट्रीय मीडिया का एक दायरा होता है कवरेज नीतियों को लेकर। लेकिन दक्षेस की कवरेज आपको वैश्विक मीडिया में दिखेगी। जैसे राजनीति, आतंकवाद, रोजगार, जलवायु आदि मुद्दों को अंतरराष्ट्रीय मीडिया काफी महत्व देता है। मैं अपने ही अखबार की बात करूं तो असाही शिम्बुन जापान का प्रमुख अखबार है। असाही हमेशा दक्षिण एशिया को लेकर सजग रहता है। इसका एक प्रमाण ये भी है कि दक्षिण एशिया के प्रमुख देश भारत में उसकी प्रतिनिधि के रूप में मैं मौजूद हूं। असाही जापान के लिए मैं प्रतिदिन दक्षिण एशिया का कुछ बड़ी खबरें भेजती हूं। सम्पादकीय को लेकर भी हमसे कंटेंट मांगा जाता है। भारतीय मीडिया में दक्षेस से संबंधित खबरों व सम्पादकीय की बात करें तो ये संख्या काफी ज्यादा है। भारतीय मीडिया चाहे टीवी हो, अखबार, पत्रिकाएं, रेडियो या वेबसाईट सबमें दक्षिण एशियाई देशों से जुड़ी खबरें हैं। नियमित तौर पर दक्षेस की खबरें कवर होती हैं। न्यूज चैनल सभी दक्षेस देशों की खबरों को कवरेज देते हैं। हालांकि पाकिस्तान खबरों के रूप में भी और बहस के रूप में भी न्यूज चैनलों में छाया रहता है। रेडियो भी दक्षेस पर कवरेज देते हैं। अंग्रेजी व हिन्दी समाचार पत्रों में पहले पेज के साथ ही देश-विदेश की खबरों के लिए एक पेज तय होता है। उस देश-विदेश के पेज पर डेली दक्षेस से जुड़ी खबरें आप पढ़ सकते हैं। हालांकि ये कहना मुश्किल है कि भारतीय समाचार पत्रों में दक्षेस के किस देश से जुड़ी खबरों को ज्यादा तवज्जो देते हैं। लेकिन खबरें नियमित प्रकाशित होती हैं। प्रत्येक अखबार में विदेश मामलों और दक्षिण एशिया मामलों के जानकार सम्पादक भी होते हैं। वो इस पर काम करते हैं। भारतीय मीडिया में दक्षेस से संबंधित खबरों और विचारों की प्रकृति की बात करें तो मुझे इसमे संतुलन ही दिखता है। ऐसा नहीं है कि निगेटिव खबरें ही होती हैं। पॉजिटिव और निगेटिव खबरें दोनों होती हैं। ये विषय विशेष को लेकर खासतौर पर होता है जैसे आतंकवाद पर कोई खबर अगर भारतीय अखबारों में होगी तो निश्चित है कि वो निगेटिव वे में ही होगी। मीडिया चूंकि निगेटिव खबरों से ज्यादा रीडरशिव और टीआरपी बटोरता है तो निगेटिव खबरों का एक कारण ये भी है। सम्पादकीय को लेकर बात करें तो हिन्दी अखबारों में भी एक विशेष विचारधारा के लेखक और विशेषज्ञ लिखते हैं। ये उनकी सोच पर निर्भर करता है कि वो दक्षेस देशों को किस नजरिए से देखते हैं। हालांकि सम्पादकीय संतुलित ही रहती है। बहुत ज्यादा निगेटिव आर्टिकल दक्षेस से संबंधित कम ही देखने को मिलते हैं।

निष्कर्ष- दक्षेस देशों से संबंधित सम्पादकीय एवं समाचारों की प्रकृति का विश्लेषण करने के लिए दक्षिण एशिया मामलों के जानकार, विद्वानों, पत्रकारों एवं दक्षेस देशों से जुड़े पत्रकारों व जन संचार विशेषज्ञों से साक्षात्कार किया गया। बातचीत के बाद ये मूल निष्कर्ष ये निकला कि दक्षेस को लेकर भारतीय मीडिया में काफी संतुलित खबरें होती हैं। जैसा कि पाकिस्तान के कई बड़े पत्रकार

और मीडिया विशेषज्ञ कहते रहे हैं कि भारतीय मीडिया पाकिस्तान की केवल निगेटिव खबरें दिखाता है लेकिन साक्षात्कार के बाद ये निष्कर्ष भी निकला कि पाक को लेकर भी भारतीय मीडिया केवल नकारात्मक खबरें नहीं करता। दूसरा पक्ष ये है कि पाकिस्तान से जुड़ी खबरें अगर नकारात्मक प्रकृति की हैं तो इसके लिए भारतीय मीडिया की पूर्वाग्रह पूर्ण नीति नहीं बल्कि पाकिस्तान का रवैय्या जिम्मेदार है। जैसे कि कई विशेषज्ञों ने कहा कि सीमापार से गोलीबारी होगी और भारतीय जनमानस की हानि और सेना के जवान मारे जाएंगे तो फिर भारतीय मीडिया पॉजिटिव कवरेज दे, ये कैसे संभव है। दक्षेस के अन्य देशों को लेकर भी भारतीय मीडिया (अखबार, चैनल व वेब और रेडियो में) में काफी समाचार होते हैं और संतुलित होते हैं। शोध अध्ययन में प्रयुक्त दैनिक भास्कर, दैनिक जागरण, पंजाब केसरी व जनसत्ता में दक्षेस से संबंधित समाचार व सम्पादकीय की प्रकृति पर भी विशेषज्ञों ने यही बात रखी कि संतुलित प्रकृति होती है। न ज्यादा नकारात्मक खबरें न ज्यादा सकारात्मक खबरें। सम्पादकीय का लहजा भी उग्र नहीं होता। कई बार पॉजिटिव खबरें भी देखने को मिलती हैं।

संदर्भ :

1. चतुर्वेदी, प्रेमनारायण : समाचार संकलन, पृ.16
2. गताडे, सुभाष, बहुसंख्यकवाद का दबाव, समयांतर मीडिया वार्षिकी 2011
3. हुजूर, फ्रैंक , मीडिया में युद्धोन्माद और वर्चस्ववादी राष्ट्रवाद, समयांतक मीडिया वार्षिकी 2011
4. द इकोनॉमिस्ट न्यूज पेपर: भारत के पड़ोसियों को आर्थिक मदद का लालच देता चीन, 2016
5. जमवाल, प्रबोध: दक्षिण एशिया में शांति के प्रयास और मीडिया, जन-मीडिया शोध पत्रिका
6. दैनिक भास्कर, दैनिक जागरण, पंजाब केसरी व जनसत्ता हिन्दी दैनिक समाचार पत्र
7. सार्क देशों के परस्पर संबंधों में मीडिया की भूमिका संगोष्ठी, 2015 सार्क विश्वविद्यालय दिल्ली
8. दक्षेस मामलों के विशेषज्ञों से बातचीत
9. गोदरे, विनोद: हिन्दी पत्रकारिता स्वरूप एवं संदर्भ, वाणी प्रकाशन, 2008

स्कॉलर्स के लिए आवश्यक सूचना

बीते 3 मई 2018 को यूजीसी, नईदिल्ली की साईट से सूचना प्राप्त हुई कि देशभर से रिसर्च जर्नल 'समागम' सहित लगभग 4 हजार से अधिक रिसर्च जर्नल के लिए यूजीसी मान्यता समाप्त कर दी गई है. इस बारे में अधिकृत रूप से कोई सूचना हमें नहीं मिली है और ना ही इस कार्यवाही का कारण बताया गया है. आईएसएसएन यथावत है. रिसर्च स्कॉलर के रिसर्च पेपर आमंत्रित हैं।

दुनिया बोल रही है हिन्दी..

(पृष्ठ 7 का शेष)

बन रही है।

भारत और भारत के बाहर हिन्दी के द्रुत प्रचार-प्रसार और विकास का श्रेय मनोरंजन चैनल, समाचार चैनल, खेल चैनल और कई धार्मिक चैनल को दिया जा सकता है। अगर किसी भी देशी-विदेशी कम्पनी को अपना उत्पाद बाजार में उतारना होता है तो उसकी पहली नजर हिन्दी क्षेत्र पर पड़ती है क्योंकि उपभोक्ता शक्ति का वृहत्तम अंश हिन्दी क्षेत्र में ही निहित है इसलिए उसका विज्ञापन कर्म हिन्दी में ही होता है। दुनिया की एक बड़ी आबादी तक पहुंचने के लिए हिन्दी की जरूरत पड़ेगी ही। हिन्दी अखबारों, हिन्दी पत्रिकाओं, हिन्दी चैनलों, हिन्दी रेडियो और हिन्दी फिल्मों की जरूरत पड़ेगी ही। हिन्दी माध्यमों का विकास होगा तो निस्संदेह हिन्दी का भी विकास होगा। बाजार और मीडिया का विस्तार होगा तो हिन्दी भी फैलेगी और जब तक बाजार और मीडिया है तब तक हिन्दी मौजूद रहेगी। बाजार और मीडिया ने हिन्दी जानने वालों को बाकी दुनिया से जुड़ने के नये विकल्प खोल दिये हैं। फिल्म, टीवी, विज्ञापन और समाचार हर जगह हिन्दी का वर्चस्व है।

वर्तमान युग हिन्दी मीडिया का युग है। हिन्दी भाषा का निर्माण और आगे बढ़ाने का कार्य मीडिया ने किया है। इंटरनेट और मोबाइल ने हिन्दी को और विस्तार दिया। हिन्दी में सम्प्रेषण की ताकत है। हिन्दी यूनिकोड हुई तो ब्लॉगगिंग में बहार आ गई। चिट्ठा लिखने वालों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि हुई। गूगल का मोबाइल और वेब विज्ञापन नेटवर्क एडसेंस हिन्दी को सपोर्ट कर रहा है। इंटरनेट पर 15 से ज्याद हिन्दी सर्च इंजन मौजूद है। सोशल साइट में हिन्दी छाई हुई है। 21 फीसदी भारतीय हिन्दी में इंटरनेट का उपयोग करते हैं। हिन्दी राजभाषा के बाद अब वैश्विक भाषा बनने की ओर तेजी से बढ़ रही है। डिजिटल दुनिया में हिन्दी की मांग अंग्रेजी की तुलना में पांच गुना तेज है।

हिन्दी मातृभाषा और राजभाषा से एक नई वैश्विक भाषा के रूप में हिन्दी बदल रही है। वह नई प्रौद्योगिकी, वैश्विक विपणन तंत्र और अंतरराष्ट्रीय संबंधों की भाषा बन रही है। आज मोबाइल की पहुंच ने गांव-गांव के कोने-कोने में संवाद और सम्पर्क को आसान बना दिया है। इस वजह से बाजार आ रहे नित नवीन मोबाइल उपकरण हर सुविधा हिन्दी में देने के लिए बाध्य हैं। हिन्दी की इस समृद्ध, शक्ति और प्रसार पर किसी भी हिन्दी भाषी को गर्व हो सकता है।

ISSN 2231-0479

शोध विमर्श

Succession of Political News and Tweets

(UP Assembly Election 2017 : A Comparative Study of Media effect on Media)

Amarendra Kumar Aarya
Ph.D. Research Scholar
Makhanlal Chaturvedi National University of Journalism and Communication, Bhopal

Abstract : Do the content and behaviour of one medium of mass communication affect another? Is the effect immediately felt or delayed? To answer these questions in the context of the 2017 utter Pradesh assembly election, the top two English newspapers published from Delhi, readership wise and Twitter were chosen. Their political contents were mined and analyzed from FEB 10 till March 10, 2017. Using cross-correlation in time-series analysis, the immediate and long-term effects of political news on Twitter trends or vice-versa were estimated. The analysis also measured the delay. These empirical results were used to theorise on cumulative effects of mass media of communication on each other, besides media interaction and integration.

Keywords: Utter Pradesh, assembly, election, Indian, Twitter, poll prediction, sentiment analysis, press bias, Newspapers

Introduction : Mass media of communication play a pivotal role in political communication, especially during election times. In India, the traditional newspapers are witnessing a steady increase in circulation (Hooke, 2012), thanks to economic development, rising standards of living and hike in literacy rates. the mainstream print and the online social media played decisive roles during the 2017 utter Pradesh assembly election (Pansare, 2017; and Swamy, 2017).

The present study analyses the content of the print media and Twitter and estimates the effect that they exerted on each other in the run-up to the 2017 assembly election that was conducted during 11 February to 8 March, 2017. The Samajwadi party (SP), Bharatiya Janata Party (BJP) and the Bahujan samaj Party (BSP) were the dominant parties contesting the election. Mayawati, led the BSP, while Akhilesh yadav, son of former Chief Minister Mulayam singh yadav was portrayed as the face of SP. BJP Not nominated chief ministerial candidate but Narendra Damodardas Modi was portrayed as the face of BJP.

Political influence of print media: It has been shown in past studies that newspapers can influence voters (Bartels, 1993; Rhee, 1997; and Druckman and Parkin 2005). Exposure to newspapers affects political behaviour and opinion (Gerber, et al., 2006). Kuypers (2002) charted the potential effects that the press has upon the messages of political and social leaders when they discuss controversial issues. Newspapers are widely read by opinion leaders who shape the political perceptions of those interacting with them. observed that news consumers who read papers are more likely to modify their perceptions of party ideology in the direction of press bias.

Newspapers are widely read by opinion leaders who shape the political perceptions of those interacting with them.

Twitter for free expression of public opinion: Broersma and Graham (2012) investigated the use of Twitter as a source for newspaper coverage of the 2014 Indian Parliament elections. Almost a quarter of the Indian candidates shared their thoughts, visions, and experiences on Twitter. Subsequently, these tweets were increasingly quoted in newspaper coverage. They also presented a typology of the functions tweets had in news reports and showed why politicians were successful in producing quotable tweets. While this paper focusses upon the coverage of election campaigns, their results indicated a broader trend in journalism.

Research hypotheses : Press trend can be estimated in many ways. Even the number of mentions of a party name could be used to estimate popularity. But the present study is focussed on studying latent content rather than manifest content as

the former is considered more meaningful. On Twitter, when preliminary tests were conducted before the research, there were more tweets recorded on the politicians representing a party than the party itself. Hence, instead of the tweets on parties those on the leaders who are the faces of the contesting parties are analysed. Hence, the political trend on Twitter was estimated by counting the number of positive, negative and neutral tweets posted on a party.

Method of Research : Newspapers Based on readership figures, the following broadsheet dailies were selected for the study: **The Times of India (ToI) & Hindustan Times (HT)**. Political news items published in the chosen two newspapers were collected on a daily-basis from February 10 to march 10, 2017, the period of study. In this study, 'news item' refers to news stories, editorials, op-ed pieces, columns, standalone pictures, info-graphics and opinion pieces published in the newspapers. The unit of analysis is a news item. Of the news items published, the ones that were related to the chosen parties like, the SP, BJP and BSP were segregated.

Scoring guidelines for polarity: Nine categories were chosen for categorisation of political polarity—SP positive, SP negative and SP neutral; BJP positive, BJP negative and BJP neutral; BSP positive, BSP negative and BSP neutral. While reporting an issue or controversy, if a news item presented the view or statement of a party or the views that favour that party, then the news item was classified as positive for that party. In the case of multiple views, the dominant view was considered. If a news item had the mention of a party and was found to be damaging the image of that party, it was rated as negative. If a news item was based on the political campaign of a party, then it was classified as positive for that party.

Scoring guidelines for position: Based on the position of the news item in the paper that is on which page it appeared weight age was assigned to it. Front page news item - 5; editorial - 4; news item on editorial or op-ed page - 3 and news item on nation page - 2. Independent variable in this study is 'time', while the dependent variables are political polarity and the position of news items in the papers, which were measured in ratio points. Positivity scores were derived based on the two dependent variables. Calculation was done daily to track the trend over time as the two papers analyzed are daily broadsheets. For the independent variable time, the unit of measurement was one day.

Twitter For the content analysis of Twitter, tweets that had the mention of the terms '**Akhilesh**', '**Modi**' and '**Mayawati**' were collected on a daily-basis from February 10 till March 10, 2017, the period of study. The unit of analysis is a tweet. Each of these terms was chosen to represent one of the three parties considered for this study. A random sampling procedure was applied to choose the tweets for analysis. That is, using the search API of Twitter tweets were mined at different random time periods during a day.

For each of the three terms, 500 tweets were collected and a sentiment analysis was performed on them

Table 1 Daily positivity scores for the newspapers and Twitter

Date	PC	PB	PA	TC	TB	TA
10-Feb-14	5	37	25	-88973.9	612714.7	-936629
11-Feb-14	18	9	-9	-251482	2109729	-132628
12-Feb-14	41	31	29	356400	2392436	-424090
13-Feb-14	9	21	34	-150252	516992.3	-61943.6
14-Feb-14	7	36	1	230782.5	1122536	-659462
15-Feb-14	-16	-2	3	815252	724868.4	-700033
16-Feb-14	8	-20	-2	25858	1553328	-240672
17-Feb-14	15	-15	21	-276944	1628154	-743333
18-Feb-14	23	7	15	538314.9	1103725	-175756
19-Feb-14	-3	13	-7	-38639.2	704250	40972
20-Feb-14	22	14	6	-307692	1015168	-35937.9
21-Feb-14	31	4	12	-241686	1135000	-268010
22-Feb-14	15	4	13	565346.9	1347290	-210318
23-Feb-14	4	14	2	-355768	2150992	-262710
24-Feb-14	12	-9	28	42277.78	1140833	-402978
25-Feb-14	4	19	8	-716096	386890.2	-435384
26-Feb-14	18	23	-6	234216	210664	-394016
27-Feb-14	-9	35	6	-208120	225284	-493464
28-Feb-14	23	19	23	545804.3	400319.4	-447722
01-Mar-14	5	18	5	397232	655822.2	-911567
02-Mar-14	4	21	12	-100880	1216318	-899140
03-Mar-14	9	26	14	108025	440078.6	-759459
04-Mar-14	2	9	8	-648038	595188.5	-912358
05-Mar-14	10	16	8	1017600	3528113	1061752
06-Mar-14	13	-7	10	337051.7	1765269	-1070400
07-Mar-14	0	14	-13	-672647	2229490	-3830200
08-Mar-14	6	3	17	42796.15	1619740	-928344
09-Mar-14	7	0	-21	271590	1612395	-481830
10-Mar-14	4	42	17	-1771687	1718654	-1601200

- PC – Positivity score for the SP in the newspapers
- PB – Positivity score for the BJP in the newspapers
- PA – Positivity score for the BSP in the newspapers
- TC – Positivity score for the SP on Twitter
- TB – Positivity score for the BJP on Twitter
- TA – Positivity score for the BSP on Twitter

ISSN 2231-0479

to classify them as positive, negative or neutral. For recording the volume of tweets posted on a term, the free online Topsy service was used. It provides the number of "valid" tweets generated on specific search terms for a limited period. Using this application, the volume of tweets posted on the three terms were found out. Then using the sentiment analysis performed, the number of positive and negative tweets posted on each of the three terms was calculated. A common formula was applied to each of the tweets in this comparative study to mitigate any inherent bias in the data analysis.

Scoring guidelines for polarity: for tweets with the mention of each of the three terms, three categories were chosen for categorization like positive, negative and neutral. The data were collected and analysed using Microsoft Excel spreadsheet and a portable version of the SPSS statistics software.

Findings : Political news published in the two chosen newspapers **the Times of India and Hindustan Time** were reviewed on a daily basis during the period of study, February 10 to march 10, 2017. Of them, the political news items published on the front page, editorial page, Op-ed page and nation pages on the three national parties selected for the study were rated as positive and negative for a party. That was identified as the political polarity of a news item.

The search terms used for Twitter analysis in this study are '**Modi**', '**Akhilesh**' and '**Mayawati**' that represent the BJP, SP and the BSP, respectively. Sentiment analysis was performed on samples of tweets with the mention of the three chosen terms mined from Twitter on a daily basis using the search API.

Daily positivity scores for the parties on Twitter were derived by subtracting the volume of negative tweets from the number of positive tweets on a party. Both the daily positivity scores for the newspapers and Twitter are presented in Table 1.

In time-series analysis, The positivity scores of the three parties—SP, BJP and BSP—in the newspapers are plotted in Fig. 1 and the positivity scores on Twitter are plotted in Fig. 2. Analysing Fig.1 and 2, it is observed that the curves exhibit seasonal fluctuations hiding the underlying trend. It is also observed that the curves sport a trend and not stationary. A series is stationary if its mean and variance stay about the same over the length of the series.

In time-series analysis, The positivity scores of the three parties—SP, BJP and BSP—in the newspapers are plotted in Fig. 1 and the positivity scores on Twitter are plotted in Fig. 2. Analysing Fig.1 and 2, it is observed that the curves exhibit seasonal fluctuations hiding the underlying trend. It is also observed that the curves sport a trend and not stationary. A series is stationary if its mean and variance stay about the same over the length of the series.

In time-series analysis, The positivity scores of the three parties—SP, BJP and BSP—in the newspapers are plotted in Fig. 1 and the positivity scores on Twitter are plotted in Fig. 2. Analysing Fig.1 and 2, it is observed that the curves exhibit seasonal fluctuations hiding the underlying trend. It is also observed that the curves sport a trend and not stationary. A series is stationary if its mean and variance stay about the same over the length of the series.

Table 2 Cross-correlations for detrended data: Press vs. Twitter trends

	PC with TC		PB with TB		PA with TA	
Lag	Cross Correlation	Std. Error[a]	Cross Correlation	Std. Error[a]	Cross Correlation	Std. Error[a]
-7						
-6						
-5	-.051	.101	.114	.101	-.012	.101
-4	.091	.100	-.137	.100	-.034	.100
-3	-.081	.100	.091	.100	.111	.100
-2	026	099	-.277	.099	-.071	.099
-1	.063	.099	.221	.099	-.039	.099
0	-.131	.098	-.070	.098	.010	.098
1	.116	.098	.097	.098	.064	.098
2	.016	.097	.011	.097	.001	.097
3 -	.091	.098	-.085	.098	-.105	.098
4	.044	.098	-.045	.098	.075	.098
5	-.014	.099	.155	.099	.041	.099
6	.025	.099	-.124	.099	-.047	.099
7 -	.009	.100	.043	.100	.036	.100
	-.046	.100	.008	.100	-.048	.100
	.036	101	-.158	.101	.105	.101

a. Based on the assumption that the series are not cross correlated and that one of the series is white noise.

The analysis shows that Twitter trend (positivity scores) for the SP is a leading indicator for the press trend. As shown in the plot (Fig. 3), most of the correlations are small. There is a fairly large negative correlation of "0.131 at lag -2 and a fairly large positive correlation of 0.116 at lag -1. A positive lag indicates that the first series leads the second series. It can be concluded that Twitter trend of SP is a leading indicator for the press trend and that it works best at predicting the number of positive and negative news reports two periods later.

Similarly, the time-series for BSP in the newspapers and Twitter were cross-correlated and the results are presented in Fig. 5. In the case of BSP, too, the Twitter trend (positivity scores) was found to be a leading indicator for the press trend. As shown in the plot (Fig. 5), most of the correlations are small. There is a fairly large negative correlation of "0.105 at lag 1 and a fairly large positive correlation of 0.111 at lag -5.

Figure 3 Cross-correlations for detrended data: SP

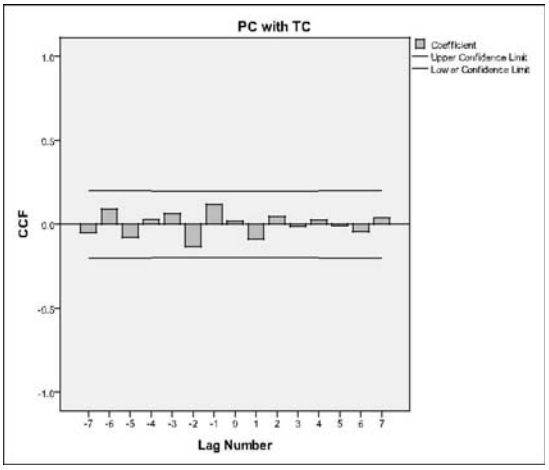

Figure 4Cross-correlations for detrended data: BJP

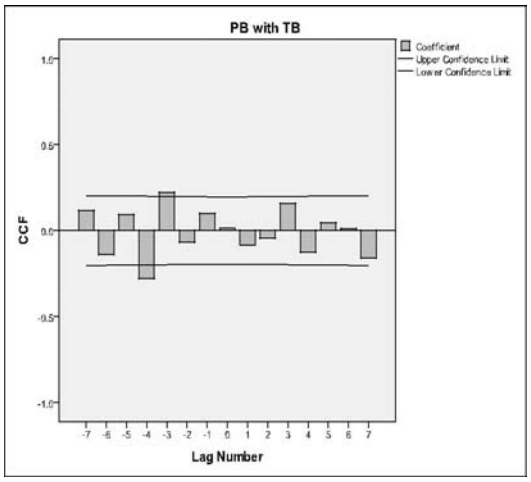

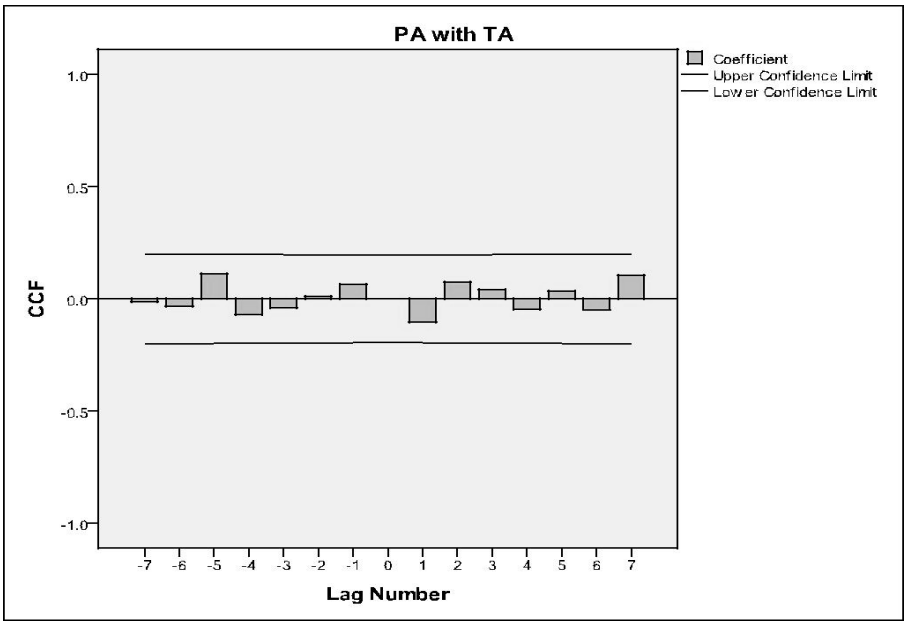

ISSN 2231-0479

Table 3 Cross-correlation results for deseasonalised data: Press vs. Twitter trends

	PC1 with TC1		PB1 with TB1		PA1 with TA1	
Lag	Cross Correlation	Std. Error[a]	Cross Correlation	Std. Error[a]	Cross Correlation	Std. Error[a]
- 7	-.223	.103	.347	.103	.065	.103
- 6	-.202	.103	.335	.103	.066	.103
-5	-.203	102	.341	.102	.064	.102
-4	-.193	.102	.377	.102	.061	.102
-3	-.189	.101	.444	.101	.075	.101
-2	-.201	.101	.492	.101	.098	.101
-1	-.221	.100	.533	.100	.123	.100
0	-.256	.100	.568	.100	.143	.100
1	-.310	.100	.523	.100	.164	.100
2	-.350	.101	.486	.101	.179	.101
3	-.412	.101	.459	.101	.191	.101
4	-.456	.102	.409	.102	.186	.102
5	-.479	.102	.388	.102	.158	.102
6	-.500	.103	.370	.103	.119	.103
7	-.515	.103	.365	.103	.075	.103

a. Based on the assumption that the series are not cross correlated and that one of the series is white noise.
➢ PA1 — Deseasonalised newspaper scores for BSP; ➢ PB1 — Deseasonalised newspaper scores for BJP: ➢ PC1 — Deseasonalised newspaper scores for SP; ➢ TA1 — Deseasonalised Twitter scores for BSP; ➢ TB1 — Deseasonalised Twitter scores for BJP; ➢ TC1 — Deseasonalised Twitter scores for SP

Figure 6 Cross-correlations for deseasonalised data: SP

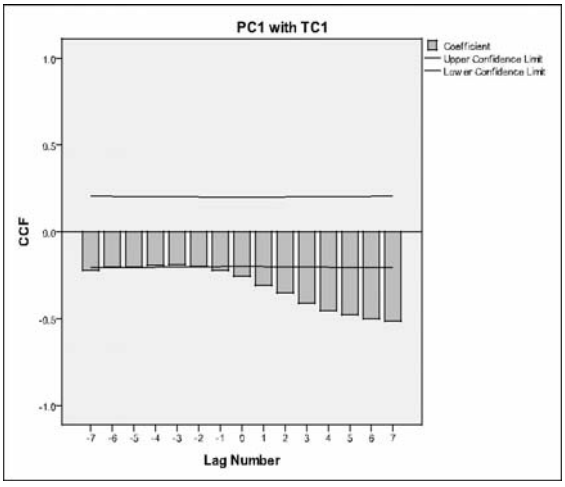

Figure 7 Cross-correlations for deseasonalised data: BJP

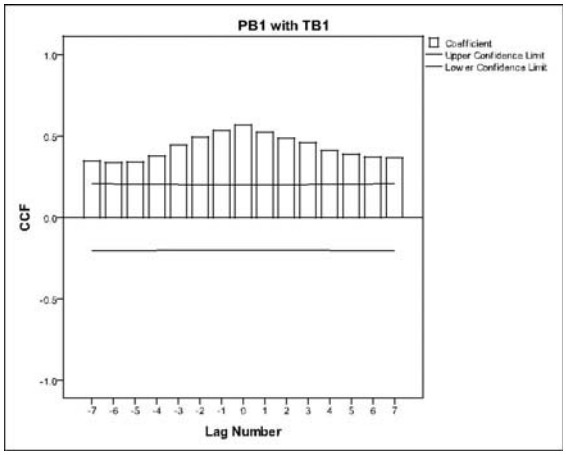

The study aims at establishing a correlation between the long term political trends of Twitter and the print media. After the seasonal component is removed from the original curves, the residual data is subjected to cross-correlation analysis and the results of the analysis are presented in Table 3. In all the three cases of SP, BJP and BSP, the press trend (positivity scores) was found to be a leading indicator for the Twitter trend.

In the case of SP (refer Fig. 6), a large negative correlation of -0.515 was observed at lag 7. Observing the plot, it is understood that the political news published in the newspapers had an adverse effect on Twitter and that effect was increasing as time passed by. In the case of the BJP, a large positive correlation (0.568) was observed at lag 0 (refer Fig. 7). That is, the political news published on the BJP had a strong and immediate long-term effect on Twitter. In the case of the BSP, too, a positive correlation

Figure 8 Cross-correlations for deseasonalised data: BSP

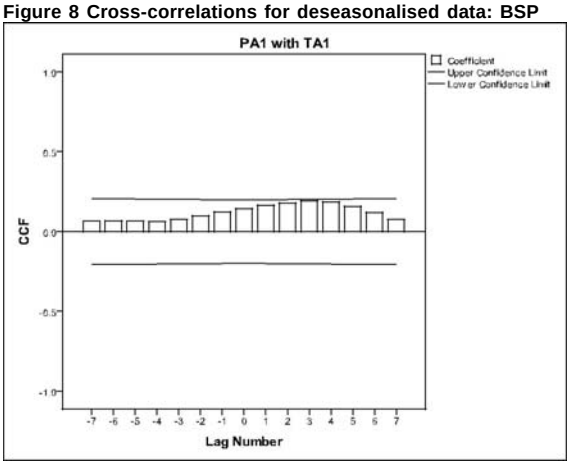

was observed between press and political trends, but the largest correlation was observed at lag 3 (refer Fig. 8).

As the study results show, there is correlation between the daily positivity scores of the print media and Twitter, though at different lags. Hence, the hypothesis that more positivity for a party in the newspapers means more positivity for that party on Twitter is tenable. Which means the proposed alternative hypothesis that higher number of strategically-positioned positive reports and comparatively lower number of strategically-positioned negative reports on a party in the newspapers means higher number of positive tweets and comparatively lower number of negative tweets on the representative of that party on Twitter is also tenable?

Conclusion : As the study results point to, political news reports published in the newspapers have an effect on Twitter. The study found that both the press and Twitter trends were in favour of the BJP. As the print media and Twitter exert influence on each other, this favouritism expressed towards the BJP in the newspapers and Twitter had a cumulative effect altering the perceptions of the people and aligning them towards the BJP as the election neared. That's why, observing the political trends of the newspapers and Twitter, it is observed that for the BJP, the positivity curves show a steep rise towards the end of the study period.

In the present study, correlations are observed between the press and Twitter trends, which are also the estimates of the effect that they exert on each other and the level of interaction that was happening between the two media platforms. The amount of that effect—that is, how much of variations observed in Twitter trends were contributed by the variations in press trends—can be estimated by squaring the correlation coefficients and multiplying them with 100.

References

- Barclay, Francis P. (2016). Inter-Media Interaction and Efects in an Integrated Model of Political Communication: India 2014. Global Media Journal, 13(15):1-39.
- Barclay, Francis P., C. Pichandy, Anusha Venkat, Sreedevi Sudhakaran. (2016a). Twitter Sentiments: Pattern Recognition and Poll Prediction. Communication and Information Technologies Annual (Studies in Media and Communications, Volume 11) Emerald Group Publishing Limited, 11: 141-167.
- Bartels, Larry M. (1993). Messages received: the political impact of media exposure.
- American Political Science Review, 87(2): 267-285.
- Bermingham, A., & Smeaton, A. F. (2011). On using Twitter to monitor political sentiment and predict election results. Sentiment Analysis where AI meets Psychology (SAAIP) work- shop at the International Joint Conference for Natural Language Processing (IJCNLP), 13 November, Chiang Mai, Thailand (pp. 2 10). Published in the Proceedings of the Workshop. Retrieved from http://doras.dcu.ie/16670/1/saaip2011.pdf
- Broersma, Marcel, and Todd Graham. (2012). Social media as beat: tweets as a news source during the 2010 British and Dutch elections. Journalism Practice 6(3): 403-419.
- Chiang, Chun-Fang, and Brian Knight. (2011). Media Bias and Influence: Evidence from Newspaper Endorsements. Review of Economic Studies, 78(3): 795-820. http://restud.oxfordjournals.org/content/78/3/795.short
- Endersby, James W. (2011). Fair and Balanced? News Media Bias and Influence on Voters. SSRN.
- Franch, F. (2013). (Wisdom of the crowds) 2: 2010 UK election prediction with social media. Journal of Information Technology & Politics, 10(1), 57 71.

चुनाव से 48 घंटे पहले सोशल मीडिया से चुनावी खबरों पर बंदिश होगी-रावत

भोपाल। विश्व भर के प्रजातांत्रिक देशों में जनमत को किस तरह से 'डाटा हार्वेस्टिंग' करके प्रभावित करने की कोशिश की जा रही है, इसके उदाहरण हमारे सामने है। आने वाले समय में हमारे देश में भी चुनाव होना है। चुनाव में पेडन्यूज और फेकन्यूज का मुद्दा आम है। राजनीतिक दल भी इसे लेकर चिंतित हैं और इससे निपटने के लिए चुनाव आयोग कदम उठा रहा है। इस आशय की बातें मुख्य चुनाव आयुक्त ओपी रावत ने पिछले दिनों माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के सालाना जलसा सत्रारंभ में मुख्य अतिथि की हैसियत से कही। वे 'निर्वाचन और मीडिया' विषय पर विद्यार्थियों को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वरिष्ठ पत्रकार महेश श्रीवास्तव थे जबकि प्रमुख वक्ता राज्यसभा टेलीविजन के सम्पादक राहुल महाजन। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति एवं जाने-माने पत्रकार जगदीश उपासने थे। चुनाव आयुक्त रावत ने कहा कि पेडन्यूज को लेकर मीडिया सर्टिफिकेशन एवं मॉनिटरिंग कमेटी बनाई गई है जिसमें पेड न्यूज को पता करने की प्रक्रिया तय की गई है। उन्होंने कहा कि चुनाव के 48 घंटे पहले चुनाव संबंधित कोई सामग्री सोशल मीडिया पर प्रकाशित नहीं होगी। उनका कहना था कि आने वाले चार राज्यों के चुनाव के दौरान इसका परीक्षण हो जाएगा और इसके बाद आम चुनाव में यह सुनिश्चित हो जाएगा कि सोशल मीडिया से चुनाव प्रभावित ना हो। अपनी साफगोई के लिए मशहूर रावत मध्यप्रदेश शासन से सेवानिवृत हुए हैं। कार्यक्रम के बाद एक अखबार ने कहा कि वे आरएसएस के विश्वविद्यालय में गए थे तो उनका जवाब था कि जब जेएनयू बुलाएगा तो वे वहां भी जाएंगे।

ISSN 2231-0479

बोलते चित्रों सी हैं सुदर्शन की कविताएं

विवेक गुप्ता

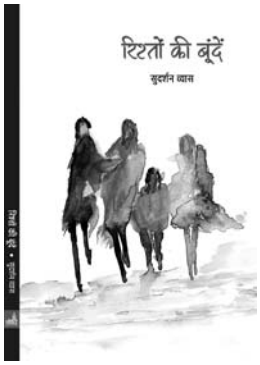

पुस्तक : रिश्तों की बूंदें (काव्य संग्रह)
कवि : सुदर्शन व्यास
प्रकाशक : बोधि प्रकाशन, जयपुर
मूल्य : 195 रुपए

कविता की बात कचरे से शुरू कर रहा हूं। भोपाल में एक अच्छी व्यवस्था है। कचरा गाड़ी लेकर आने वाले नगर नगम के सफाईकर्मी सीटी बजाते चलते हैं। यह संकेत होता है कि वे आ गए हैं और आप घर का कचरा निकालकर दरवाजे पर रख दें। कुछ बरस पहले की बात है, मेरी अढ़ाई साल की बिटिया तब बोलना सीख रही थी। वह रोज सीटी की आवाज सुनती और हमें कचरे की थैली बाहर रखते देखती। एक दिन सीटी बजी और उसके मुंह से निकला- 'सीटी बजाते, कचरा ले जातेः!' यह उसके मुख से फूटी पहली कविता थी। जिस तरह फूल खिलते हैं, वैसे ही कविताएं प्रस्फुटित होती हैं, एकदम सहज-स्वाभाविक रूप से। काव्य इनसान की अभिव्यक्ति का सबसे पहला और शायद सबसे सबल माध्यम है। एक अर्थ में कहें, तो जो मानव है, वह कवि भी है। या इसे इस तरह भी कह सकते हैं कि कविताएं लिखना या उन्हें पसंद करना मानव होने की एक बड़ी पहचान है। बचपन में लोग तुकबंदियां करते हैं और थोड़े बड़े होने के बाद प्रेम करते हैं और इश्क़ में डूबी कविताएं लिखने की कोशिश करते हैं। फिर जीवन की भागदौड़ में यह कला कहीं बिसरा जाती है।

यहीं पर 'शेष बनाम कुछ' की लकीर खिंच जाती है। ये कुछ लोग, जिनका काव्य से नाता बना रहता है, विशिष्ट होते हैं। इन विशिष्टों में भी कुछ अलहदा हैं सुदर्शन व्यास, जिन्होंने न सिर्फ काव्य से नाता बनाए रखा, बल्कि इश्क, मोहब्बत, प्रेम, बेवफाई से आगे बढ़कर, विविध विषयों पर कलम चलाई है। सुदर्शन के पहले कविता-संग्रह 'रिश्तों की बूंदें' के बारे में एक अच्छी बात यह है कि रिश्तों पर एकाग्र होने के बावजूद उनके लेखन में विविधता है। उनकी कविताओं में माता-पिता, प्रेमिका, मित्र जैसे दुनियावी रिश्तों के साथ प्रकृति और ईश्वर से रूहानी रिश्तों के अक्स भी हैं। दूसरी बात, नई उम्र की अधपकी समझ के साथ रची गई कविताओं में रूठना-मनाना, टूटा दिल, आंसू, बेवफाई जैसे शब्द बहुतायत में मिलते हैं। लेकिन युवा सुदर्शन इन घिसे-पिटे शब्दों के बजाय नए बिंब और अनोखे रूपक प्रयुक्त करते हैं। मसलन, 'आवाज' शीर्षक की कविता में वे लिखते हैं- 'तबीयत हरी होती है, जब तुम कोयल के कलरव की तरह, अलसुबह फोन पर हैलो कहती हो।' फोन पर रोज सुबह हैलो सुनने की कल्पना इक्कीसवीं सदी में जवान हुआ कवि ही कर सकता है। लेकिन 'कलरव' का प्रयोग बताता है कि उसकी शाब्दिक विरासत कितनी गहरी है। सुदर्शन की लेखनी से दिल की टूटन एक अलग ही अंदाज में अभिव्यक्त होती है। 'मैं नहीं करता' शीर्षक कविता में वे लिखते हैं-सुनो,/मेरे शहर के सबसे पुराने मोहल्ले की पहली गली में बने/सबसे आखिरी मकान के दूसरे कमरे के पीछे वाले कमरे में लगे/बिस्तर के ऊपर/बिछी मखमली चादर../हां वही चादर, जो लाई थी कभी तुम मेरे लिए../उसके ऊपर रखा सिरहाना/तुम्हें खूब याद करता है। लेकिन, लेकिन मैं बिल्कुल भी नहीं।

प्लूटार्क कहते हैं कि चित्रकारी मौन कविता है और कविता बोलती चित्रकारी है। 'रिश्तों की बूंदें' में सुदर्शन ने बखूबी चित्र खींचे हैं। कहीं वे मां की ममता को साकार करते हैं, तो कहीं आध्यात्मिकता के अमूर्त को। कभी-कभी उनके शब्द किसी खास पल की तस्वीर में रंग भरते-से लगते हैं, कुछ इस तरह- 'सांझ के सूरज या निशा के चंदा को देख हम हमेशा एक-दूजे से बातें करते थे।' इन कविताओं में एक युवा के सपने और हौसले हैं, तो कहीं उसके डर, उसकी आहों और अफसोस की ध्वनियां भी हैं। कवि की एक बड़ी उपलब्धि है कि उसने जीवन की अनिश्चितता को समझा है। यहां कुछ भी निश्चित या पूर्णएब्सॉलूट नहीं होता। टूटे दिल में भी पाने की एक आस होती है और संसार के सबसे सुखी हृदय में भी खो जाने का डर समाया होता है। सकारात्मक अर्थों में लें, तो यह मीठे जामुन और तरबूज पर बुरका जाने वाला हल्का-सा नमक है, जो उनका स्वाद बढ़ा देता है। सुदर्शन के ऐसे ही विपरीत प्रयोग उनकी कविताओं को अनूठा रंग देते हैं। मिसाल के लिए, जब 'ख्वाब जी लिया' में वे कहते हैं- 'खोने के बाद भी खोने का डर जाने क्यों मुझे सता रहा था।' तो शीर्षक के साथ काव्य की यह ताल एक अलग प्रभाव छोड़ती है। 'रिश्तों की बूंदें' की सबसे अच्छी बात है कि संग्रह की सबसे कमजोर कविताएं भी निराश नहीं करतीं, बल्कि कहीं न कहीं कवि में निहित संभावनाएं बयां कर देती हैं। ऐसी कविताओं में रचनात्मकता तो भरपूर है, पर उनके गढ़न में परिपक्ता की कमी झलक जाती है। हालांकि ये कविताएं बताती हैं कि जैसे-जैसे कवि के अनुभवों का विस्तार होगा, उसकी लेखनी में और भी निखार होगा।